

वे मौत से खेले थे ।

ए० एस० नील लिखित अंग्रेजी पुस्तक के
आचार्य श्री गिजुभाई कृत गुजराती
अनुवाद से रूपांतरित

रूपांतरकार—

श्रीकाशिनाथ त्रिवेदी बी० ए०



प्रकाशक—

प्रफुल्लचंद्र ओझा

ओझावधु आश्रम

इलाहाबाद

मूल्य एक रुपया

पहली बार ११००

अक्टूबर '३४

मुद्रक—

पं० वट्टीप्रसाद पांडेय

नारायण प्रेस, प्रयाग

वे मौत से खेले थे



चि० कमलेश चट्ट

उपहार

कम्बू,

तू बड़ा होकर ऐसा ही साहसी, बहादुर
और निर्भीक बने, जैसे वे शूरे थे जो 'मौत
से सने थे' इसी आशा में यह पुस्तक तेरे नन्हे
हाथों में प्यार सहित देता हूँ।

आशीर्वादक—

प्रफुल्लचन्द्र शोभा

पुस्तक में क्या है ?

एक आलोचनात्मक दृष्टि

[खेसिका—धीमती तारा यदा]

यह पुस्तक उन किशोरों और कुमारों के लिए प्रकाशित हो रही है, जो देश विदेश के जंगलों और रेगिस्तानों में, समुद्र पर और हवा में, भीषण और रम्य प्रकृति की गोद में घूम घूमकर भटक-भटककर साहसपूर्ण कार्य करने के सपने देखा करते हैं, या जो खुद साहसी बनकर यों सैर सपाटे को निकल नहीं सकते तो सच्चे या काल्पनिक माहस के किस्सों को पढ़कर ही अपने उम्र होमने को वृत्त करना चाहते हैं। नौ-दस घरस के बालकों से लेकर ब्यालीस पचास घरस के प्रौढ़ पाठकों को, एक बैठक में, बड़ी दिलचस्पी के साथ इस पुस्तक को पढ़ने हमने प्रत्यक्ष देखा है। इससे यह विचार स्पष्ट हुआ कि यह पुस्तक बालकों और नौजवानों की तरह बड़ों के लिए भी धाय से पढ़ने की चीज है। जब कि बालक इससे प्रत्यक्ष आनन्द लूटते हैं, बड़ा को इसमें बाल मानस के बहुत ही सूक्ष्म और नवीनतम दृष्टि से किये गये अभ्यास का लाभ मिलता है। 'यह मच है' कहकर निगल जाने जैसी बात तो नील कभी लिखता ही नहीं। उसकी समस्त पुस्तकों की विशेषता विचार जामत करने की उसकी शक्ति में है। वह पाठकों के मन को कभी शिथिल रहन ही नहीं देता। प्रस्तुत

पुस्तक 'ग्रावनेम चाइटड' की तरह प्रत्यक्ष रूप से शिक्षण के मानम गाल्त्र की पुस्तक नहीं करने का मकसद, तथापि आलोचकों को यह शिक्षा-विषयक एक बहुमूल्य ग्रंथ प्रतीत होगा। न केवल और ट्रेनिंग स्कूलों में—अध्यापन मन्दिरों में—पाठ्य पुस्तक की योग्यता रखनेवाली यह पुस्तक है। इसका एकमात्र दोष कहिये या गुण कहिये, वह यह है कि यह सुलझमसुलझ शिक्षाशास्त्र का उपदेश नहीं करती। फिर भी इसमें शिक्षा के सिद्धांतों की बड़ी सुन्दरता के साथ गूँथे गये हैं। समस्त पुस्तक की आलोचना का यह स्थल नहीं है। इसकी कुछ मुख्य विशेषताओं को देखिये।

पढ़ना शुरू करते ही शिक्षकों का यह प्रचार जागता है—“ओहहो, इसमें तो भूगोल शिक्षण की एक युक्ति है। भूगोल बालकों के लिए एक नीरस विषय है। फिर भी शिक्षकों को अनिवार्य रूप से भूगोल सिखाना पड़ता है, अतएव सरस बन कर बालकों को पिला देने की अनक कल्पनायें अनेक शिक्षक अत्र कर चुकी हैं। उनमें यह एक नई ही कल्पना है। वैसे तो नई नहीं भी है। क्योंकि वर्जों के छात्रों को काल्पनिक यात्राएँ लिए ल जाकर अफ्रिका, अमेरिका जैसे अपरिचित देशों में भूगोल सिखा देने की युक्ति तो कई शिक्षकों को सूझ चुकी है।

तो फिर इसमें विशेषता क्या है? भूगोल शिक्षण की दृष्टि से इसमें विशेषता भी है और नवीनता भी है, और अवश्य ही शिक्षकों को भली भाँति ध्यान में रखने-जैसी विशेषता है। प

[ग]

विशेषता वालकों के लिए भूगोल की बातों के चुनाव में है। इसमें काल्पनिक यात्रा के लिए रवाना होने पर भी केवल स्थल विभाग, और उनकी राजधानियाँ, पहाड़ों और नदियों के नाम मात्र मिला देने का ही काम नहीं किया गया है। बल्कि आफ्रिका की वे ही बातें विशेषपूर्वक चुनी गई हैं जो वालकों को स्वभावतः दिलचस्प मालूम होती हैं और जो भूगोल शिक्षण के वातावरण के रूप में आवश्यक हैं। सही विशेषता भूगोल के अन्दर से चालप्रिय बातों के चुन लेने में है। हमारी दृष्टि में आफ्रिका की बातें यानी पिरामिड की बातें, नाइल की बातें। लेकिन नील ने आफ्रिका की कैसी कैसी हकीकतें हँसते खेलते सुना दी हैं, और वालकों ने उन्हें ग्रहण कर लिया है, सो कहने की बात नहीं। पिरामिड का किस्सा तो वालकों ने घड़ी मुड़कल से सुना। पिरामिड की चर्चा करते हुए लेखक भूगोल शिक्षण का दृष्टिकोण और चालरस की दृष्टि हमारे सम्मुख उपस्थित कर देता है।

“उनका भूगोल का अज्ञान भयंकर था” यों कहकर लेखक स्वयं ही उस अज्ञान का समर्थन करना है और अप्रत्यक्ष रीति से कहता है कि ऐसा अज्ञान हो तो हर्ष क्या? उसके विद्यार्थी भूगोल और भूगोल-सम्बन्धी अन्वेषण कार्य में उपयोगी साधनों का प्रत्यक्ष उपयोग इतनी अच्छी तरह करना जानते हैं कि अगर उन्हें पिरामिड से दिलचस्पी न हो, और वे उसका सम्बन्ध में कुछ न जानने के कारण ‘अज्ञानी’ कहे जायें तो आपत्ति क्या है? लेखक तो इस स्थान पर अपनी मर्मस्पर्शिनी शैली से

आज फल की भूगोल-शिक्षण पद्धति की रिल्ली उडाता है।
लिक यात्रा व्यक्तिगत दृष्टि से कितनी अभ्यसनीय है, म
लिये वार्तालाप से स्पष्ट हो जाता है।

“पिरामिड्स का प्रभाव मण्डली के प्रत्येक सदस्य प
भिन्न पडा।”

पिक्रैफ्ट ने सोचा कि अपने पेट्रोलियम पेट्रेंट का
चिपकाने के लिए जगह बहुत अच्छी है। नील ने सोचा
पत्थरों से स्नानगृह के साथ एक सुन्दर पाठशाला ब
सकती है।

और लडकों पर जो प्रभाव पडा सो शिक्षकों के लि
रूप से माननीय है।

गिल्बर्ट ने मन में कहा—“कुछ पत्थर लेजाकर सिने
आइस्क्रिम सलून बनाया जा सकता है।”

डेरिक बोला—“इसे दरकर मुझे अपनी ज्यामिति क
याद आती है।”

हेल्गा ने यह जानना चाहा कि पिरामिड के अन्दर क
डोनल्ड के मन में सवाल उठा कि इन लोगों ने इसमें कि
क्यों नहीं लगवाई ?

जेफ्रे ने तो “उँह इसमें क्या रक्खा है,” कहकर
की बात पर ध्यान ही नहीं दिया।

यही जेफ्रे जगली लोगों के जीवन की बारीक-से बा
जानता है। बाघ और शेर का शिकार जैसे किताब पढ़ा

मे रात बितानो हो तो कैसे बिताई जाती है, जगैरह घातें उसे अच्छी तरह मालूम हैं।

लेखक कहना चाहता है कि बचपन में बालकों को भूगोल की कौन सी बातों में मज्जा आता है, सो उनसे जानकर, वे बातें विस्तार के साथ उन्हें बताई जायें तो बालकों को जो दूसरी बातें याद रखने में फटिनाई होती है और शिक्षकों को भूगोल की जो बातें याद कराने में व्यर्थ की परेशानी उठानी पड़ती है, सो दूर हो जाय।

मनुष्य को जीवन की आवश्यकताओं की चर्चा में सच्चा आनन्द आता है। बालकों को यह प्रतीत हो जाता है कि वे सच-सच ही यात्रा कर रहे हैं और इन्हीं सीधे यात्रा के सिलसिले में आनेवाली बातों में उन्हें मज्जा आता है।

इस पुस्तक के भूगोल शिक्षण में दूसरी ध्यान देने योग्य बात यह है कि इसमें नील ने भूगोल के साथ विज्ञान आदि अनेक विषय जोड़ दिये हैं। विज्ञान की चर्चा विज्ञान के समय में और भूगोल की भूगोल के समय में, दोनों के शिक्षक अलग, दोनों की बातें अलग, यह परिस्थिति यहाँ नहीं है। विज्ञान और भूगोल को इस प्रकार ओतप्रोत कर दिया है कि कभी यह खयाल आता है कि नहीं, नहीं, यह पुस्तक भूगोल की नहीं है, यह तो बालकों के अन्दर वैज्ञानिक बुद्धि जगान की लिखी गई है। यह पुस्तक प्रत्यक्ष विज्ञान की नहीं है, फिर भी बालकों को वैज्ञानिक दृष्टि से विचार करना सिखाती है। यात्रियों की हवा

में उड़नेवाली उड़नगाड़ी की तरह ही नील ने वैज्ञानिक कल्पना को स्वैर विहार कराया है, जिसमें क्रिस्ता परियों की कथा की तरह रसपूर्ण होते हुए भी वैसा हवाई तो कभी नहीं है। हर एक कल्पना के साथ वास्तविक शक्यता-अशक्यता का विचार आकर खड़ा हो जाता है। जिसे सचमुच वैज्ञानिक कल्पना (Scientific Imagination) कह सकते हैं, इस कथा में वैसी ही कल्पना है।

आरम्भ ही में बालकों के सामने व्यावहारिक कठिनाइयाँ खड़ी हो जाती हैं। मान लीजिये कि कोई एक वैज्ञानिक नये आविष्कार करता है, लेकिन वर्तमान समार में केवल कल्पना-विहार से उसका काम नहीं चलता। पाड शिलिंग पेन्स के व्यावहारिक वास्तविक जगत् में उमे आना ही पड़ता है और किसी पिक्रैफ्ट के मिलने पर ही वह आगे बढ़ सकता है। हम कथा में पग-पग पर वैज्ञानिक कठिनाइयाँ खड़ी होती हैं और उन्हें वह वैज्ञानिक ढग से हल करता है।

कभी कभी शायद बालकों की वैज्ञानिक बुद्धि को भ्रमगोरने के लिए नील वैज्ञानिक गर्पे भी हाँकता है, लेकिन बालक तुरन्त उसकी भूल को ताड जाते हैं।

गिल्बर्ट ने कहा—“डेरिक, तेरा क्या खयाल है ? तू मानता है कि नील जो कहता है, बना सकता है ?”

डेरिक ने कुछ सोचकर कहा—“उड़ सकनेवाली कार ? हाँ, बन सकती है। लेकिन पानी बनाने की मशीन की बात मूर्खता-पूर्ण लगती है। मैंने अपने विज्ञान के शिक्षक मि० मिफर्ट से इस

सम्यन्त्र में पूछा था। वह कहते हैं कि हवा में हाइड्रोजन बहुत कम है। बूढ़े नील, हवा में पानी बनाने की मशीन तू कैसे बना सकेगा ?”

नील को अपनी भूल सुधारनी पड़ी। पर विज्ञान की सहायता से ही उसने स्पष्टीकरण किया—

“मि० मिफर्ट स्वीकार करते हैं कि सूर्य में हाइड्रोजन है। लेकिन वह जानते भी हैं कि रेडियम लोह चुम्बक की तरह हाइड्रोजन को नीचे खींचता है ?”

ऐसी वैज्ञानिक सूक्ष्मता तो सारी पुस्तक में पग-पग पर पाई जाती है। यही कारण है कि पुस्तक को निश्चयरूप से भौगोलिक या वैज्ञानिक कहने में कठिनाई पड़ती है। फिर भी यह बिलकुल सच है कि पुस्तक में दोनों विषयों में सजीव रस उत्पन्न करके पाठकों के सम्मुख रखने की विशेषता है।

कभी ऐसा प्रतीत होता है कि यह पुस्तक न तो मुख्यतः भूगोल की है, और न विज्ञान की। ये दोनों विषय सहायक मात्र हैं। पुस्तक तो साहित्यिक कथाओं की है। और साहस की वादर्यता खड़ी करने के लिए भूगोल और विज्ञान को पुस्तक में कुशल हाथों से गूँथ दिया गया है।

साहित्यिक नौजवान तो यही कहेंगे, फिर मने अनुभवी वृद्ध शिक्षक इसे पढ़कर यह मोचो लग जायें कि ज्ञान को भूगोल जैसे मित्राया जाय या वैज्ञानिक बातें उनके सम्मुख कैसे पही जायें ? पर नौजवान तो इस पुस्तक को साहस कथा की श्रेणी

में अवश्य ही रस देंगे । पुस्तक की सजीवता उसके साहस वर्णन में है ।

बालकों के लिए एक ही उदाहरण बस होगा । हवा से भी हलकी धातु के पतरे को डेरिक ने छू लिया, जिसमें वह हवा में उड़ गया और उसे विज्ञान की मदद में नीचे लाना पड़ा । यह घटना सम्पूर्ण रूप से वैज्ञानिक होते हुए भी डेरिक का जीवन संकट में होन के कारण इस पर साहस का रंग चढ़ गया है । हर एक बालक ने इस घटना को धड़कते दिल से सुना होगा और सुनेगा । और हर एक बालक इसे डेरिक के साहस की घटना के नाम से ही पहचानेगा ।

बच्चों के लिए यह किस्मा विज्ञान या भूगोल का है, जब कि बालकों या नौनवानों के लिए अद्भुत साहस का । आरम्भ ही में बालकों की उनीयमान साहसिक वृत्ति का लेखक ने बड़ी सुन्दरता के साथ पृथक्करण किया है । जहाँ बालक बिना नील क अकेले ही यात्रा के लिए रवाना होते हैं, वहीं पढ़नेवाले बालक की आँखें चमकने लगेंगी । हर एक बालक सोचेगा कि मैं भी अकेला गाड़ी पर सवार होकर निकलूँ तो ? ऐसा करना बिलकुल आमान नहीं है, फिर भी एकदम कठिन, शक्ति से परे, भी नहीं है । और इसी कारण बालक साहस का आनन्द लूट सकते हैं । बच्चों का आधार हर एक बालक को कुछ कुछ अन्दर-अन्दर तो खटकता ही है । यद्यपि इस कहानी के बालक साफ ही नील को साथ लेने में इनकार कर देते हैं, फिर भी बालकों की एकाएक

अकेले चल पड़ने की हिम्मत नहीं होती, लेकिन जब उनके आस-पास स्वरक्षण के और जीवन की आवश्यकता के सब साधन घराघर जुट जाते हैं, तो वे साहस का रस चखने को निकल पड़ते हैं। मोटर में मशीनगनों और रिवाल्वर और न जाने क्या क्या था। हमारे बालक भी लकड़ी या छोटी घन्दूक या तलवार लेकर घूमने निकलना पसन्द करते हैं। इसका कारण यही है कि वे अपने नन्हें नन्हे हाथ-पैरों को और उनकी यैसी ही शक्ति को जानते हैं। लकड़ी हाथ में लेते ही उन्हें अपनी शक्ति की पूर्णता का जवाब होने लगता है। इन नये साहसिकों का नील ने भी खासा उपहास किया है। वे साहस करने चले थे, लेकिन आरम्भ में तो बहुत ही डरते थे और पहली ही बार एक गधे को सिंह समझकर उन्होंने मशीनगन चला दी। एक क्षण में तो वे अपने सब साधनों का उपयोग करने को तैयार हो गये, लेकिन आखिर बच्चों का असली साधन ही उनके काम आया और वे भाग खड़े हुए। नन्हें नये बाल साहसिकों का यह कैसा स्वाभाविक चित्रण है। आगे चलकर धीरे-धीरे वे साबनों के व्यवहार का विवेक सीखते जाते हैं। टोरेग्जों के साथ की लड़ाई में या गिल्लेट को क्लिने से छुड़ाते वक्त उन्होंने बुद्धि का अच्छा उपयोग किया है। फिर भी बिलकुल नये होने से उन्हें जल्दी सूझ नहीं पड़ती। हर बार विचारणा और मन्त्रणा फग्नी पड़ती है और फिर भी वे अधिकाधिक कठिनाई में फँसते जाते हैं। अन्त में वे नील और पिक्लेट को साथ लेते हैं, पर वह भी उनके आने का विरोध करके।

हम बड़े-बूढ़े जन बच्चों को अपने साथ यात्रा को ले जाते तो उन्हें गठरियों की तरह निर्जीव वस्तु समझकर ही मर्व घुमाते हैं। हम सुरक्षितता के पीछे इतने पागल रहते हैं कि उस कारण हम नालायक बन गये हैं और बालकों को तो पीढ़ी दर पीढ़ी के लिए साहस-हीन बनाते जा रहे हैं। ऐसा न करके हम बालकों को अपने साथ एक जिम्मेदार व्यक्ति की तरह ले जायें और सामान सम्हालने, पानी लाने वगैरह का कार्य उन्हें सौंपते रहें तो वे यात्रा का अधिक आनन्द लूट सकते हैं। इसी तरह हमारा यह एक सिद्धान्त बन गया है कि बालक अकेला नहीं छोड़ा जा सकता, इसके स्थान पर उसे अकेले घुमने फिरने की स्वतन्त्रता देना आवश्यक है।

बालकों के लिए यदि यह पुस्तक साहस की कथा है, तो बड़े-बड़े के लिए बाल मनोविज्ञान का एक सुन्दर अभ्यास है। इसमें पन्ने पन्ने में और वाक्य वाक्य में मानस शास्त्र भरा पड़ा है। पाँचों बालक पाँच प्रकार के हैं। अन्त तक उनके स्वभाव का आलेखन उनके स्वभाव के अनुसार ही किया गया है। उन पर प्रत्येक कार्य, उनकी प्रत्येक उक्ति उनके लिए सहज और स्वाभाविक ही है।

इस पुस्तक का बाल-अभ्यास शिक्षकों या माता पिताओं के लिए बहुत ही उपयोगी हो सकता है। स्वतंत्र बानावरण में होने के कारण बालक मिलकुल नग्न हैं। अपने बालकों की मनोवृत्ति हम फचित ही जान पाते हैं, क्योंकि हमने बालकों को कम

इतनी स्वतन्त्रता ही नहीं दी कि वे अपने मन में घुलनेवाली बातें साहस के साथ हमसे कह सकें। हम सदा यही चाहते रहे हैं कि बालक जब कभी बोले, तभीच और तहजीब के साथ बोले। फलतः बालक का मन सदा के लिए रहस्यमय ही रहा है। ठरएक नई पुरानी परिस्थिति का बालक के मन पर आन्तरिक प्रभाव क्या पड़ता है, और उसको रुचि अरुचि क्या होती है, वरौरह बातों का हमें मिलकुल पता नहीं रहता। इन बाल पात्रों के रूप में नील ने हमारे सम्मुख बाल मानस के पाँच प्रकार उपस्थित किये हैं।

हम लोग अतिशय सभ्य वातावरण में पाले पोसे गये हैं, अब हमारे सामने जब कोई बलहीन नग्न बालक आ जाता है, तो हमारी आँखों को यह रुचता नहीं। सभ्य है, ठीक यही दशा इन पात्रों के स्वभाव चित्रण की भी हो, क्योंकि बालको के स्वभाव का नील हमें मिलकुल निर्वन्ध नग्न स्थिति में बताता है। इसने हमें ये चार विचित्र, गँवार, उद्धत और विवेक शून्य तो लगेंगे, परन्तु अभ्यास के लिए तो जैसे पोशाक पहना हुआ शरीर उपयोगी नहीं होता, वैसे ही पोशाकवाला मन भी नहीं।

मनोविज्ञान के अभ्यास के उदाहरण यदि लिये जायें, तब तो प्रायः मारी पुष्पक ही उद्धृत कर लेनी पड़े, पर यहाँ कुछ थोड़े अवतरण बस होंगे।

गिल्बर्ट ने अभिमान के साथ कहा—“मैं दरती नहीं। मैं जाऊँगी और दूरी ले आऊँगी।” फिर धीरे से कहा—“डेरिफ,

जरा मशीनगन पर हाथ रखे रहना ।”

साहस और भय का मिश्रण ।

गिल्बर्ट अपने शिक्कर नील को लक्ष्य करके कहती है—

“मूर्ख को रेतीने तूफानों का तो विचार करना था ।” कितना निष्कपट और स्वाभाविक वचन ।

जंगलियों और बालकों की पहली सलामी जीभ निकालने और धूँने से होती है, इसमें बालकों और प्राथमिक दशा के मनुष्यों की समान कच्चा का परिचय मिलता है ।

जंगलियों की उस्ती में पहुँच जाने के बाद का सारा वर्णन एक प्रामाणिक मानव-शास्त्री का सभ्य समाज पर किया गया एक कठोर व्यंग्य है, चुभता हुआ कटाक्ष है ।

हृदय में डरते हुए भी वे बाहर रौंठ के साथ घुमते हैं । वह सारा वर्णन बड़ा मार्मिक है ।

डेरिज का उर्मोपदेशक का कार्य वैसे ही यूरोपीय क्रिश्चियन Exploiter पर एक तीखा कटाक्ष है ।

उस जंगली पुजारी के प्रश्न रहस्यपूर्ण हैं—

“तुम्हारे देश में लडाइयाँ होती हैं ?” “आदमी चोरी करते हैं ?” “आदमी एक दूसरे की हत्या करते हैं ? घोड़ा डेते हैं ?” “परस्पर मारकाट करने हैं ?” “भूठ बोलते हैं ?”

साथ ही नील एक सिद्धहस्त कहानी लेखक भी है, बाल-मनोविज्ञान का उसका अभ्यास इतना गहरा और मँजा हुआ है कि वह भूगोल और विज्ञान के तत्त्वों को फो हथेली पर सेलाते-

लेलाते ऐसी सुन्दर कहानी की रचना कर सकता है । नील के पास केवल अभ्यास और तथ्य (facts) ही होते तो कहानी न बनती । पर तथ्यों को उपस्थित करने की शैली और अपूर्व सुशलता के कारण ही नील एक निपुण कहानी लेखक है । कहानी के रूप में इतिहास, भूगोल, आरोग्य, विज्ञान-आदि का वर्णन करने के प्रयत्न अनेक शिक्षकों ने किये हैं । पर भूगोल तो भूगोल ही रहता है । पानी में जिस तरह फकर घुलते नहीं, कहानी की चौखट में वैसे ही वे न घुलनेवाले facts पड़े रहते हैं, जब कि इस पुस्तक का प्रत्येक प्रसंग कथा के रूप में घुल चुका है, कथामय हो चुका है । इसी में वार्ता कथन की शैली की शक्ति है ।

इस पुस्तक में बीच बीच में वातचीत का भाग मौलिक और रसपूर्ण है । बाल कथा या कहानी लिखनेवालों के लिए यह एक सुन्दर अभ्यास है । कहानी के शुरू होते ही बीच की वातचीत से फौरन पता चल जाता है कि बालकों को कौन सी वात प्रिय है, कहाँ वे ऊन चढ़ते हैं, किस जगह जमुड़ाई लेने लगते हैं, इत्यादि । मानों नील ने कहानी लेखकों के लिए यह सब नोट कर रखा है । इसके आधार पर नियम बनाकर यदि कहानी लेखक तदनुसार कहानियाँ लिखें तो (शैली और मापा निब की होने पर) बाल रस की दृष्टि से कभी भूल न करें । इस कहानी में तो उसने सुननेवाले पात्रों को ही कहानी के पात्र बना लिये हैं, इसलिए उसका मार्ग सरल हो गया है । लेकिन प्रत्येक कहानी में बालक किसी एक पात्र के साथ तद्रूप होकर कहानी सुनते हैं

और नव वे यह अनुभव करते हैं कि उस पात्र पर जो-जो घीतती है, सो उन्हीं पर गीत रही है । इसलिए कहानी लेखक के ध्यान में सदा यह बात रहनी चाहिए कि सामान्यतया जिस पात्र के साथ बालक तद्रूपता का अनुभव करनेवाला है, उस पात्र को क्या हा तो बालक प्रसन्न हो और म्या होने में बालक के लिए वह असह्य हो जाय । इस कहानी में नील बटुधा मञ्जाक के लिए ऐसी बातें कह देता है जो पात्र को नहीं रुचती और फौरन ही पात्र बीच की बातचीत में उसका विरोध करता है ।

बालक निम्न चीज को किसी भी तरह सुनना नहीं चाहते, उसे सुनाने का भी वह आग्रह रख सकता है और इस ढंग से सुना सकता है कि वे गुश हो जायें । वह जानता है कि इस समय साहसपूर्ण कार्यों के कारण बालकों के मन उत्तेजित हो उठे हैं, और वे कुछ सुनना नहीं चाहते, अन्यथा गॉर्डन का किस्मा ता वैसे ही दिलचस्प है । अतएव यहाँ वह बालकों के पीछे नहीं चलता । अपन मन की करता है । लेकिन किस तरह ? नाराज होकर नहीं, 'तुम्हें सुनना ही पड़ेगा' कहकर नहीं, और न इस भाव में कि बालक सुनें या न सुनें, जो कुछ कहना है, वह दिया जाय, बल्कि बालकों को वास्तव में मन पूर्वक सुनने को तैयार करके ।

गिल्वर्ट ने कहा—“अगर तू किस्से के साथ इतिहास पढ़ाना चाहता हो, तो हम ऐसी बाह्यात बात नहीं सुनेगे ।”

डेरिक—“नील इतिहास जाने ही म्या ?”

जेम्मे—“मुझे इतिहास नहीं सीखना।”

हेल्गा—“मैं तो साहस के किस्मे पसन्द करती हूँ।”

डोनल्ड—“मुझे तो सिंह और मगर की कहानी पसन्द है।”

सबके मन बालक विरुद्ध हैं। उनमें एक दो जो इतिहास से विरोध है, (बेचारों को पाठशाला में इतिहास रटना पड़ा होगा) तो दूसरे साहस की कथाएँ चाहते थे, इसलिए विरोधी थे।

नील ने उन्हें रास्ते पर लाने की अजब तरकीब सोची। वह बेसिर पैर की बातें सुनाने लगा। आखिर बालक गार्डन का किस्सा सुनने को तैयार होते हैं। इसमें नील ने बार्ता कथन की एक दूसरी विशेषता बताई है, कि केवल सुननेवाले की मर्जी पर चलने की आवश्यकता नहीं। चाहे तो कहानीकार अपनी चाही बात सुना सकता है, पर तभी, जब उसके पास बालकों का मन मनाने की शक्ति और युक्ति हो।

नील के विनोद—उसके हास्य—के विषय में क्या लिखा जाय ? पुस्तक हाथ में लेने के बाद से नीचे रखने तक आवमी धोर से या धीमे से—मुसकुराते हुए—हँसता ही रहता है। उसके हास्य में बौद्धिक चमत्कार पग पग पर है, लेकिन इसके कारण साधारण बालक के लिए वह हास्य अच्छा नहीं बन जाता। बालकों की साधारण क्रीडाओं से भी लेखक परिचित है। जीभ निकालना, और किसी को मूर्ख और गधा कहना बालकों के साधारण खेल हैं। अपने ‘पॉलिशड’ समाज में हम बालकों को ऐसा धोलने नहीं देते। इसलिए उनका यह अंग दबा रहता है।

लेकिन इसमें उनकी एक प्रकार की प्राथमिक दशा का विनोद है। और वह विनोद शुद्ध है। विदूषकता उसमें तनिक भी नहीं।

ऐसा मालूम पड़ता है कि मानसशास्त्र के अभ्यास ने उसके विनोद में सदायता की है या उसीने मानसशास्त्र को विनोद की दृष्टि दी है। उसका विनोद अधिकतर मनो निरीक्षण का फल होता है।

इस पुस्तक से हमें एक और विचार मिलता है, कि कोई नितान्त स्वतंत्र शास्त्र हो, तो उसका क्या परिणाम होगा। इस पुस्तक से हम सहशिक्षण और केवल स्वतंत्र शिक्षण के अनेक सुपरिणामों को साररूप में ग्रहण कर सकते हैं और यह जान सकते हैं कि परीक्षा और पाठ्यक्रम का बन्धन न रहते हुए भी छात्रों की जानकारी का भाण्डार कितना बड़ा-चढ़ा है, विशेषतः उनकी विचार शक्ति कितनी विकसित है, उनकी भावनाये कैसी है, और उनकी बाहरी असभ्यता के अन्दर सच्ची सस्कारिता और सभ्यता कितनी है। बहुतेरों को नील के साथ बालकों का व्यवहार असभ्य और असह्य लगेगा। लेकिन नील न केवल उसे सहन ही करता है, बल्कि सिद्धान्ततः उसे निबाहता जाता है और इसी कारण वह उन सब का जिगरी दोस्त है, उनके निकट से निकट है। और हम ? हम सब अपने निज के अगभूत हमारे अपने बालकों से और विद्यार्थियों से कितने दूर हैं। उनके लिये कितने पराये हैं। अगर हम इन बालकों के माता पिता होते तो बालकों और शिक्षक का सम्बन्ध देखकर हम नील से ईर्ष्या

करने लगते, इतना सुन्दर सम्बन्ध बनका है। जिस प्रकार स्थूल दुनिया में हम बिना किसी प्रकार का साहम किये केवल सुर-क्षितता में ही जीना चाहते हैं, उसी प्रकार शिक्षण, सामाजिक व्यवहार वगैरह समस्त क्षेत्रों में हम सिर्फ सुरक्षित रहना चाहते हैं। ऐसी दशा में इन स्वतंत्र प्रयोगों को हम हथम न कर सकें तो आश्चर्य नहीं। फिर भी यदि हम इन्हें समझने का प्रयत्न करें तो हमारे सम्मुख अनेक नई दृष्टियाँ खुल जायँगी। हम नवीन मानसशास्त्र के ज्ञाता भले हों, तथापि हमारी हिम्मत नहीं कि हम उसे पुस्तक के बाहर निकालें जब कि नील ने उसका व्यवहार करके अपनी पाठशाला में तदनुसार तत्काल सुधार कर दिये हैं। यही कारण है कि वह बालकों को heart to heart पहचान सकता है। दिल में दिल को जान सकता है। बालक जिस प्रकार अपनी माता के सामने नगे होने में शरमाते नहीं, उसी प्रकार नील के बालक उसके सामने निरी नम्र स्थिति में खेलते-कूदते हैं, और फलतः मानसिक आरोग्य का सुख लूटते हैं।

पुस्तक कई दृष्टियों से इतनी सुन्दर है, कि ऐसे क्षेत्रों से उसके साथ न्याय की अपेक्षा अन्याय ही होने का डर है। इसलिए पाठकों में यही अनुरोध करके बम करती हूँ कि वे इसकी विशेषताओं को स्वयं खोजें और खोजकर आनन्द और उपदेश लाभ करें।

डेरिक ने अधीर होकर कहा—“अरे भाई, चुप रहो न ! नील ! कहानी कहो ।”

कहानी

वह मशहूर आविष्कारक वीअर का प्याला गटगटा गया और बोला—“हाँ, मोटरकार तैयार है । लेकिन ”

आतुर होकर डेरिक ने पूछा—“हम कल रवाना हो सकेंगे ?”

आविष्कारक ने खेद के साथ सिर धुना । वह बोला—“क्या करे ? दुनिया में कुछ ऐसा ही होता आया है । अल्ल तो बहुतेरी है, लेकिन बिना इन के क्या हो सकता है ?”

पाम की मेज पर एक आदमी गाना गा रहा था । यह बातचीत सुनकर वह उठा और शिक्षक तथा इन पाँचों बच्चों के पास आया ।

उसने कहा—‘माफ कीजियेगा महाशय ! बेशक, मैं आपकी सुल्लू में दखल देना नहीं चाहता, लेकिन आप इन बच्चों के साथ जो बातचीत कर रहे थे, वह मैंने सुन ली है । अच्छा सुनिए, मेरा नाम-गम इस प्रकार है—“सिलास के पिक्केस्ट, न्यूयार्क-निवासी ।” अगर मैंने आपकी बातचीत को सही-सही समझा है, तो मेरा खयाल है कि आप इन सभ को यात्रा के लिए ले जाना चाहते हैं । क्यों, यही बात है न ?”

नील हँसा ! वह बोला—“बात यह है कि ”

लेकिन इतने में जेम्मे बीच ही में बोल उठा—“मिस्टर नील ने एक आश्चर्यजनक मोटरकार का आविष्कार किया है । उनकी

बहुत इच्छा है कि हमें दुनिया की यात्रा कराने को ले जायें, लेकिन, पेंचारे के पास रैडिश गरीबने को रुपये नहीं हैं।”

साश्चर्य पिक्रैफ्ट ने कहा—“रैडिश ? यह क्या चीज है ?”

जेम्स की ओर तिरन्कार न देखकर हेल्गा ने कहा—“यह तो रेडियस कहना चाहता था।”

हेरिफ बोला—“बेजकूक हो । रेडियस कहो, रेडियस ।

पिक्रैफ्ट उनकी ओर निम्न क साथ देखता रहा ।

आदिर उस मोटर के आविष्कारक ने तनिक हँसकर कहा—“मेरा खयाल है, कि ये लोग रेडियस कहना चाहते हैं । मैं अभी अभी इन्हें समझा रहा था कि मैंने एक ऐसे मोटर-एजिन का आविष्कार किया है, जो पेट्रोल और रेडियम से चल सकता है । सूर्य किरणों के कारण रेडियम बहुत ही तेजी के साथ निक्षुब्धता और फैलता है ।”

इतना कहकर और निश्वास फेंककर आविष्कारक ने आगे कहा—“लेकिन फेवल बातों से क्या हो सकता है ? सिर्फ एक एजिन तैयार करने के लिए कुछ नहीं तो एक लाख पौण्ड की आवश्यकता है ।”

पिक्रैफ्ट ने दाढ़ी पर हाथ फेरा ।

धातवीत

हेल्गा ने ताली बजाकर कहा—“अवश्य ही । मेरा खयाल है कि यह कोई लाखपती है ।”

जेम्स ने कहा—“लाखपती न हो, तो जो कहो हारूँ ।”

कहानी

पिक्रैपट टाढ़ी पर हाथ फेरते-फेरते बड़बड़ाया—“एक लाख की बात है।”

एक क्षण विचार करके वह बोला—“अच्छा भाइयो, मेरे पास कुछ अधिक डॉलर्स हैं, वे नाइफ बैंक में सड़ रहे हैं। मुझे थालकों से प्रेम है। और, मैं आपको कुछ उपचांगी।”

बातचीत

डेरिक ने सीटी बजाई—“स् स् स्”

गिल्वर्ट ने फड़ककर कहा—“वेनकूफ डेरिक। यह तो घेचल कहानी है। निरर्थक कहानी। ऊँह ऐसा लगवपती भी क्या, कि लोगों को पहले से जानें पहचानें बिना ही इतनी मदद करने को दौड़ पड़े?”

हेल्गा बोली—“नहीं, नहीं, लगवपती है तो भला आदमी।”

जेफ़ ने रोपपूर्वक कहा—“ये मूर्ख लोग हर बार इस तरह कहानी पिगाड़ा करते हों, तो इन्हें कहानी से अलग कर दो। सिर्फ़ मुझे, डेरिक और डोनल्ड को रहने दो।”

गिल्वर्ट बोली—“वाह, बड़े होशियार हैं आप। नोल, आगे कहो।”

कहानी

ऊपर की बातचीत का नतीजा यह हुआ कि दूसरे दिन सबेरे उस आगिष्कारक के कारखाने में मि० पिक्रैपट आया। जब उसने मोटरकार देखी तो वह आश्चर्य से लगभग मूर्च्छित-सा

होगया। चासनय में वह कार अद्भुत थी। यह काँच की थी। ऐसे मोटे काँच की कि बन्दूक की गोली भी आरपार न जा सकती थी। कार में तीन खण्ड थे—रसोईघर, सोने का कमरा और ड्राइवर की बैठक। खाटें ऐसी धनाई थीं कि समेट लेने पर दीवार का काम देती, इससे साने का कमरा दिन में धीयानखाना बन सकता था।

पिक्रैफ्ट ने कहा—“कैसे अजब पहिये हैं।”

नील बोला—“जी, यह भी एक नया ही आविष्कार है। इस आविष्कार के पीछे मैंने घरसों बिता दिये हैं, कि फौलाद भी रबर की तरह लचीला—चिबर को मोड़ें मुड़नेवाला—बनाया जा सकता है। ये मामूली रबर के टायर के समान ही हैं। इनमें हवा भी उसी तरह भरी जा सकती है। लेकिन, इनमें पक्कर कभी होगा ही नहीं। अलनत्ता खराब रास्ते में इन्हें निकाल लेंगे और इनके बगल कैटरपिलर के पहिये बढ़ा देंगे। ये पहिये कार के नीचे रक्खे गये हैं।

घातचीत

हेरिक ने जेम्मे के फान में कहा—“इसमें अगर मशीनगन न हो, तो एक लाख पौण्ड हारूँ।”

कहानी

पिक्रैफ्ट ने पूछा—“वायरलेस के रम खम्भे के पास वह क्या धोख है ?”

आविष्कारक ने कहा—“वह तो मशीनगन है। आप देखिये,

कार में तीन मशीनगनों हों, एक उस जगह, दूसरी दूधघर के पास, और तीसरी रसोईघर के पीछे।”

पिक्रैफ्ट हॉकनेवाले की जगह पर गया और पूछा—“यह चक्का कैसे चलाया जाता है?”

नील बोला—“बिलकुल सरल तरीका है। थोड़ा विचार करें, तो सब चल सकता है। आप इस हैण्डल को पकड़िये, घस, बाकी सब काम दिमाग अपने आप कर लेगा। मान लीजिये कि आप सामने से मोटर को आते देख रहे हैं। खुद ब-खुद आप अपने से कहते हैं—मुझे मोटर बाईं ओर ले जानी चाहिये। विचार आन के साथ ही वह हाथ में क्रिया पैदा करता है और चक्के को चलाने लगता है। इस प्रकार चक्का अपने आप चलता है।”

पिक्रैफ्ट ने कहा—“अजीब बात है! गजब का आविष्कार है। यह घटन किस लिए है?”

पिक्रैफ्ट घटन को हाथ लगाने ही वाला था, कि छलाँग मारकर नील आगे बढ़ा और उसका हाथ पकड़ लिया—“ईश्वर के लिए, घटन को हाथ न लगाइये। यह मिजली के तारों का घटन है। घटन घूमने से कौरन ही फाँच के आसपास जो बल्य हैं, उनमें मिजली पैदा हो जाती है।”

पिक्रैफ्ट पीछे हटा।

डेरिफ हँसा। वह बोला—“इसमें अभी डरने की कोई बात नहीं है। मिजली पैदा करने के लिए एंजिन में अभी रेडियम कहीं है?”

सब हँस पड़े ।

हँसकर पिक्रैफ्ट ने कहा—“ठीक है ठीक । मेरा खयाल है कि कल सबेरा होने में पहले यह घटन सस्तरनाक बन जायगा । आज दोपहर को रेडियम आ जायगा ।”

बातचीत

मैंने कहा—“भोजन की घण्टी बज चुकी । ये साहसी किस तरह यात्रा के लिए रवाना हुए, सा कल कहूँगा ।”

गिल्वर्ट बोली—“मैं चाहती हूँ कि आप हमारे साथ न आयें ।”

डेरिक और जेम्स गिल्वर्ट से सहमत थे । लेकिन, डोनल्ड और हेल्गा की राय नील को साथ ले चलने की थी ।

हेल्गा बोली—“कहीं रास्ते में जङ्गली लोग मिल गये तो ?”

डोनल्ड ने कहा—“और नील ने तो मोटर का आविष्कार किया है न ? हमें मोटर चलाने नहीं आई, तो ? नील, आप तो साथ ही चलिये ।”

मैंने पूछा—“पिक्रैफ्ट को लोगे क्या ।”

जेम्स सोचने लगा । उसने कहा—“सच पूछा जाय तो हमें उसकी जरूरत नहीं । लेकिन घट आना चाहे, और हम साथ न ले चलें, तो बुरा मालूम पड़गा । उसने धन से हमारी मदद की है ।”

मैंने जोर देकर पूछा—“और कार का आविष्कार किसने किया है ?”

गिल्बर्ट ने निश्चयपूर्वक कहा—“आपको न आना होगा, न पिक्रैफ्ट को ही।”

मैंने कहा—“हाँ, अभी कहानी का कुछ हिस्सा कहना बाकी है, सुनो।”

कहानी

रेडियम चार बजे आ पहुँचा और शाम को छ. बजे एंजिन तैयार होगया। इसके बाद एक भयंकर घटना होगई। नील चक्के को ठीक कर रहा था, कि इतने में गलती से गिल्बर्ट का हाथ बिजली के बटन से छू गया। एक दर्दभरी चीख सुनाई पड़ी और गिल्बर्ट बिजली के तार पर मुर्दा-सी गिर पड़ी। बेचारी गिल्बर्ट।

हेल्गा दौल उठी—“वाह वाह।”

डोनल्ड चिढ़ाता हुआ बोला—“ले, तू नील और पिक्रैफ्ट को साथ ले चलने से मना करती है, तो ले नतीजा।”

गिल्बर्ट ने लापरवाही के साथ कहा—“यहाँ किसे परवा है? ईर्ष्या के मारे वह जला जाता है। नील कहता है, यह स्वतन्त्र शाला है, लेकिन जब हम उसकी पसन्द का काम नहीं करते, हमें मार डालता है।”

जेफ़े बोला—“गिल्बर्ट चुप। तू तो अब गई।”

गिल्बर्ट ने मुँह चिढ़ाकर प्रत्युत्तर दिया—“तो तू सात बार गया।”

प्रकरण-२

शनिवार को सरेरे यात्रा शुरू होने वाली थी । उस दिन गुरुवार था । खाना खाने से पहले बहुत-सी तैयारी करनी थी । खाने पीने का सामान खरीदना था । ठहरा यह था कि यात्रा के पहले हर एक यात्री को अपनी आवश्यकता को चीजों की एक सूची बनाकर देनी चाहिये ।

पहली यात्रा अफ्रीका की थी । नील को नीचे लिखी सूचियाँ मिली थीं—

डेरिफ की सूची—हर एक आदमी के लिए दो कारतूसवाला रिवाल्वर, हाथी को मारने की तीन राइफलें, आठ बन्दूकें, हर एक के लिए २००० कारतूस की पट्टियाँ, छ सगीनदार फौजी बन्दूकें और तीन मार्म लेंड की बोतलें ।

जेम्स की सूची—दो अधिक मशीनगन्स, रिवाल्वर, राइफल, मछली पकड़ने की सलारें, कम्पास, टेलिस्कोप, पेन्सिल, क्लाइप, नक्शे ।

डोनल्ड की सूची—चाकलेट, मिठाई, बन्दूकें, नील का ग्रामीफोन, स्कूटर और आइस्क्रिम ।

हेल्गा की सूची—मेरी गुड़ियाएँ, सीने का सामान, कपड़ा, घूटों की मरम्मत के लिए चमड़ा, सुन्दर सुन्दर पहनानियों की किताबें ।

गिल्बर्ट की सूची—एक बड़ा छुरा और

घातचीत

गिल्वर्ट घोली—“अरे, मैं तो मर चुकी हूँ। मैं सूची कैसे भेजने लगी ?”

कुत्र निचार करते हुए मैं मिर खुजलाने लगा।

डोनल्ड घोला—“इसे जिलाओ।”

मैंने धीमे से कहा—“वास्तव में गिल्वर्ट मरी नहीं थी। मौभाग्य ने गिजली का प्रवाह इतना तेज न था, लेकिन वह लगभग मृतवत् तो हो ही गई थी।”

गिल्वर्ट ने दाँत निकाने और मैंने अपनी कहानी आगे बढ़ाई।

कहानी

गिल्वर्ट की सूची—“एक बड़ी छुरी और दवाई की पेटी, असंख्य बम, नील के लिए थोड़ी बीअर नहीं, नहीं, वह तो आवेगा ही नहीं। अच्छा हुआ।”

यह तय पाया कि पिकैफट और नील सब यात्रियों की इच्छा को ध्यान में रखकर एक नई सूची बना डाले। अखोरी सूची उस प्रकार बनी थी—

हर एक यात्री के लिए दो आटोमैटिक पिस्तौलें, एक कौजी गश्फल, दो शिकारी बन्दूकें, एक सज्जर, एक तलवार, एक जेबी छुरी, एक कैंची, एक जोड़ी अधिक बूट, एक जोड़ी कपड़े, सारी मण्डली के लिए कम्पास, तीन टेलिस्कोप, दस-दो बायनोम्यूलर्स, तरह-तरह के कपड़े सीने के सामन, एक छोटी सा सीने की

मशीन, तरह-तरह के हथियार, तैयार सूरारु मे भरे हुए डब्बे, राँधने के बरतन, पाकशास्त्र सम्बन्धी पुस्तकें, जंगली जानवरों और जहरीले साँपों के वर्णनवाली पुस्तकें, अफ्रीका के नकशे, ग्रामोफोन, त्रिगुल ।

ठीक रातना होते समय पिक्लेट एक बड़ी-सी गठरी लेकर आ पहुँचा ।

उसने कहा—“मैंने अफ्रीकन भाषाओं का एक-एक शब्द-कोश खरीद लिया है ।” उसने डेरिक को गठरी सौंपते हुए कहा—“तू भाषा का अच्छा जानकार है ।”

इसमें झगड़ा पैदा होगया । गिल्बर्ट चिढ़ गई । वह बोली—“मैं फ्रेंच, इटालियन, अंग्रेजी और जर्मन जानती हूँ । डेरिक तो निम्न अंग्रेजी और जर्मन जानता है । उसकी अपेक्षा मैं होशियार हूँ ।”

दोना एक दूसरे को देखकर घूरने लगे, आखिर पिक्लेट ने कहा—“खराब बोलने में तुम दोनों की कुशलता अद्भुत है । तुम दोनों के हाथ में अग्निक भाषाय मौँतना जोरुम का काम है, इसलिए पुस्तकें जारुल पुस्तकालय में रक्की पायेंगी ।”

आश्चर्य की बात है कि गिल्बर्ट और डेरिक दोनों इस प्रस्ताव में खूब खुश हुए । दोनों एक दूसरे को यह कहकर चिढ़ाने लगे, कि—“ले, लेता जा । ले, लेती जा ।”

जून महीने का सुहावना प्रातःकाल था । ठीक दस बजकर ७ मिनट पर मोटरकार मोटरखाने से बाहर निकल आई ।

नील चक्के के पास था। उसके पास पिक्रैफ्ट बैठा। नील को बड़ी अडचन रही, क्योंकि पिक्रैफ्ट बहुत ही मोटा आदमी था। जब वह नाटकघर में जाता तो हमेशा दो सीटें रिजर्व कराता। एक बार उसने टेलीफोन से 'हिपोड्रोम थियेटर' में दो सीटें रिजर्व कराईं। शाम को जब वह वहाँ गया तो उसे मालूम हुआ कि सभ्य लोगों की पाँचवीं कतार में न० १२ और न० २४ की जगहें उसके लिए रोक रखी गई थीं।

कुछ ही देर में वे पोर्टस्मथ के रास्ते पर सरपट दौड़े जा रहे थे।

बानचीत

डेरिक बोला—“कार और भी अधिक तेजी में न जा सके, तो जो कहो हारूँ।”

कहानी

जैसे ही वे लम्बे, सीधे और समतल रास्ते पर पहुँचे कि पिक्रैफ्ट ने कहा—“जाने दो बरानर।”

नील ने ‘एक्सलरेटर’ को हाथ लगाया। ‘स्पीडोमीटर’ देखकर जेफ्रे चिल्ला उठा—“एक घण्टे में तीन सौ पचास मील।”

पिक्रैफ्ट तो मारे डर के प्रायः बेहोश हो गया। हेलगा चीख उठी। हरएक एक दूसरे को पकड़ रखने लगा। हाँकनेवाला हँसा और रक्तार धामी करके फ्री घण्टा पैंतीस मील पर चलाने लगा।

पिक्रैफ्ट हाँकते हाँकते बोला—“यह तो अजीब मोटर है।”

मुझे बहुत खुशी है, कि इसमें पोर्टस्मथ से आगे नहीं जाना है।

पहले ही से इस बात का बन्दोबस्त कर लिया गया था, कि पोर्टस्मथ में उनकी स्टीम-बोट हाजिर रहे। ग्यारह बजकर चार मिनट पर मोटरकार रोट पर पहुँच गई और दसवें मिनट पर ही मइली समुद्र-यात्रा करने लगी।

मोरको तक की यात्रा के सम्बन्ध में कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं। इस यात्रा में कोई खास घटना नहीं हुई। कोई खास जानने योग्य बात भी न थी। अलबत्ता डोनल्ड ने पोर्लैंड शार्क (मछली) और एक हेल देखी थी।

हेल्गा ने ब्राज़िल का किनारा बताया। जेम्स ने टेलिस्कोप की सहायता से नीचे देखा तो उसके की खाड़ी के गर्भ में मोने भरत हुआ एक जहाज देखा। डेरिक ने अपने साथियों से कहा कि इस घण्टे हम भूमध्य रेखा के ऊपर से गुजर रहे हैं।

बातचीत

फोर से डेरिक ने कहा—“यह तो गिल्बर्ट ने कहा था, कि बहुत भूगोल जानती हूँ। कहानी में ऐसी गप्पे लड़ायी जाती हैं तो मैं कहानी में नहीं रहा चाहता। मैं यह चला।”

कहानी

लेकिन, इसमें बड़ी गप्प तो यह थी कि नील ने जमीन कोई किनारा बताया और कहा कि यह तुर्किस्तान का किनारा। सच बात तो यह थी कि केवल विक्रैप्ट ही थोड़ी भूगोल जानता था।

काम ही न चलेगा ।”

मैंने कहा—“रेगिस्तान में पहुँचने तक सन्न करो । फिर कहोगी कि मैं साथ में होता, तो अच्छा था ।”

गिल्बर्ट तिरस्कार के साथ हँसकर बोली—“आपसे मैं होशियार हूँ । हमें आपकी मदद की बिलकुल जरूरत नह। । डेरिक, देग्न तो, महाशयनी समझते हैं कि इन्हीं को सन्न आता है ।”

जेफ़े ने कहा—“अरे गिल्बर्ट, मैं जानता हूँ कि यह बुद्धू हैं । लेकिन कुछ ही क्यों न हो, मोटर-गाड़ी का आविष्कार तो इन्हीं ने किया है न ?”

मैंने अपना पाइप सुलगा लिया ।

मैंने कहा—“मुझे भय है कि कहीं ऐसा न हो, गिल्बर्ट अफ़्रीका से वापस ही न लौटे ।”

डोनल्ड ने कहा—“बहुत बड़ी सयानी है ।”

मैं बोला—“डोनल्ड, यह तो मैं अफ़्रीका के कैनीबाल्स, साँप, और ‘स्लीपिङ्ग सिक्नेस’ का विचार कर रहा था । लेकिन अब कहानी ही आगे कहे ।

कहानी

मोरफ़ो रमणीक प्रदेश था । प्रचण्ड सूर्य झुलसी हुई जमीन पर तप रहा था । ट्रैजियर से फेज तक के सँकरे रास्ते पर से गुजरते हुए उन्होंने वहाँ के निवासियों के पहने हुए सुन्दर, भाँत-भाँति के लाल पीले और जामुनी रंग के कपड़ों की खूब

शंसा की। आगे जाते हुए वे लम्बे बालोंवाले वन्दरों की टोली के पास से, जुते हुए बैलोंवाली बज्जनदार गाड़ियों के पास से और शहर की ओर छुहारे ले जानेवाले दहातियों की भीड़ के पास से होकर गुजरे। रास्ता सँकरा और ऊबड़ खाबड़ था, इसलिए हाँकने का काम गिल्बर्ट के बदले डेरिक कर रहा था। गरमी असह्य थी।

डोनहड चोग्र उठा—“पानी, पानी।” दूसरे भी चिल्ला उठे—“पानी, पानी।” डेरिक ने मोटर खड़ी की और सब पानी का विचार करने लगे।

गिल्बर्ट ने कहा—“नील कैसा मूर्ख है। यह देश दुनिया का सबसे गरम देश है, फिर भी गंधा पानी का इन्तजाम करना बिलकुल भूल गया है।”

डेरिक ने सुझाया—“चलो, हम उसे वायरलेस करें।”

गिल्बर्ट फूदकर वायरलेस के यंत्र के पास गई। दो मिनट में नील के साथ बातचीत शुरू हुई।

गिल्बर्ट ने वायरलेस में कहा—“गधे, हमें पानी की जरूरत है।”

“तू पानी तो रोज ही माँगा करती है। मैंने तुम्हें कई बार सिखाया, लेकिन तू कभी सीखी ही नहीं, कि पानी धोने के लिए है।”

गिल्बर्ट ने कहा—“अरे, पीने का पानी चाहिए।”

“हाँ रे। मैं सोचता हूँ कि तू शायद भूल से अमेरिका तो

काम ही न चलेगा ।”

मैंने कहा—“रेगिस्तान में पहुँचने तक सन्न करो । फिर कहोगी कि मैं साथ में होता, तो अच्छा था ।”

गिल्बर्ट तिरस्कार के साथ हँसकर बोली—“आपसे मैं होशियार हूँ । हमें आपकी मदद की बिलकुल जरूरत नहीं । डेरिक, देख तो, महाशयजी समझते हैं कि इन्हीं को सब आता है ।”

जेम्स ने कहा—“अरे गिल्बर्ट, मैं जानता हूँ कि यह बुद्धू हैं । लेकिन कुछ ही क्यों न हो, मोटर गाड़ी का आविष्कार तो इन्हीं ने किया है न ?”

मैंने अपना पाइप सुलगा लिया ।

मैंने कहा—“मुझे भय है कि कहीं ऐसा न हो, गिल्बर्ट अफ्रीका से वापस ही न लौटे ।”

डोनल्ड ने कहा—“वह बड़ी सयानी है ।”

मैं बोला—“डोनल्ड, यह तो मैं अफ्रीका के कैनीबाल्स, साँप, और ‘स्लीपिङ्ग सिकनेस’ का विचार कर रहा था । लेकिन अब कहानी ही आगे कहे ।

कहानी

मोरखो रमणीक प्रदेश था । प्रचण्ड सूर्य झुलसी हुई जमीन पर तप रहा था । ट्रैजियर से फेज तक के सँकरे रास्ते पर से गुजरते हुए उन्होंने वहाँ के निवासियों के पहने हुए सुन्दर, भाँति-भाँति के लाल पीले और जामुनी रंग के कपड़ों की खूब

प्रशंसा की। आगे जाते हुए वे लम्बे बालोंवाले धन्दरों की टोली के पास से, जुते हुए चैलोंवाली वजनदार गाड़ियों के पास से और गहर की ओर लुहारे ले जानेवाले देहातियों की भीड़ के पास से होकर गुजरे। रास्ता सँकरा और ऊबड़-खाबड़ था, इसलिए हाँकने का काम गिल्बर्ट के बदले डेरिक कर रहा था। गरमी असह्य थी।

डोनल्ड चोरु उठा—“पानी, पानी।” दूसरे भी चिल्ला वठे—“पानी, पानी।” डेरिक ने मोटर खड़ी की और सब पानी का विचार करने लगे।

गिल्बर्ट ने कहा—“नील कैसा मूर्ख है। यह देश दुनिया का सब से गरम देश है, फिर भी गधा पानी का इन्तज़ाम करना विलकुल भूल गया है।”

डेरिक ने सुझाया—“चलो, हम उसे वायरलेस करें।”

गिल्बर्ट धूदकर वायरलेस के यंत्र के पास गई। दो मिनट में नील के साथ बातचीत शुरू हुई।

गिल्बर्ट ने वायरलेस में कहा—“गधे, हमें पानी की ज़रूरत है।”

“तू पानी तो रोज ही माँगा करती है। मैंने तुम्हें कई बार सिखाया, लेकिन तू कभी सीखी ही नहीं, कि पानी धोने के लिए है।”

गिल्बर्ट ने कहा—“अरे, पीने का पानी चाहिए।”

“हाँ रे। मैं सोचता हूँ कि तू शायद भूल से अमेरिका तो

सिंह बिना हिले-डुने पड़ा रहा ।

एक एक भांडी के पीछे से एक आदमी दिखाई पड़ा । वह गुस्सा हो रहा था, उसने कार के सामने एक मोटी सी लम्बी सानी । यह मालूम होता था कि वह गालियाँ दे रहा है, लेकिन वह क्या कहता था, कुछ समझा नहीं जा सका ।

हेल्गा ने कहा—“गिल्वर्ट, पूछ तो सही, कि यह फ्रेंच भाषा जानता है ?”

गिल्वर्ट ने उससे पूछा ।

सचमुच ही वह फ्रेंच जानता था । बिना रुके वह दस मिनट तक बोलता रहा फिर गिल्वर्ट ने उसको उलथो किया । उसकी शिकायत यह थी कि—“तुम सब परदेशी मेरे गधे को मारकर क्या समझ रहे हो ? उसका कहना था कि उन्हें नुकसान की भरपाई करनी चाहिए । गिल्वर्ट ने आपत्ति करते हुए कहा—“गया अभी जिन्दा है, उसे कोई चोट नहीं पहुँची है ।” लेकिन इससे तो मालिक ने अपना और भी अपमान समझा । उसने कार पर ईंट का वार किया । हेल्गा ने चाहा कि बिजली का बटन देवा दे । जेम्मे ने सोचा कि मशीनगने से इसका काम तमाम कर दिया जाय । धीरे-धीरे लोगों की भीड़ इकट्ठी होने लगी । डेरिक हाँकने के चक्के के पास आ बैठा और कार आगे चली ।

इसके बाद फेज के रास्ते में कोई खास घटना नहीं हुई । वहाँ पहुँचने से पहले रात हो गई थी । लेकिन उन्होंने सर्व लाइट का

मदन दमाया और रास्ते पर जिन की-सी रोशनी हो गई।

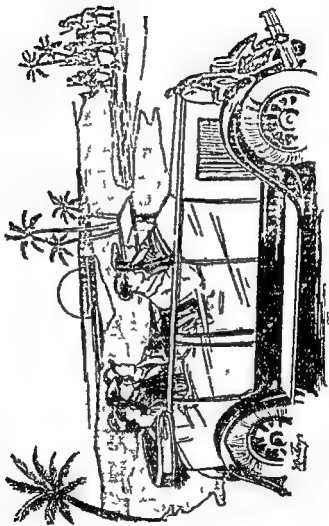
फेज सुबरे हुए ढग का शहर था। मोटरें और होटल बहुतेरे थे।

वे सारी रात मोटर में पड़े रहे और सुनह शहर की तंग गलियों में घूमते निकले। उन्होंने बहुतसी खूबसूरत चीजें खरीदीं। थैलों जैसी चमड़े की चीजें और डायरियाँ खरीदीं। डोनल्ड ने लगभग दस शिलिंग के फल खरीदे। 'एप्रीकोटस,' छुहारे, नींबू और अचीर की सड़नेवाली घू से फार महक उठी।

सभ्यता के इस गढ़ से निकल भागने को हरएक यात्री अधीर हो रहा था। दोपहर को वे रवाना हुए। त्रिपोली के रास्ते उन्होंने कायरों जाना तय किया था। लेकिन डेरिक ने कहा—“दक्षिण की ओर चाँड-सरोवर के रास्ते जायें तो ठीक। इस रास्ते में टोरेन्स रहते हैं—सहारा के जंगली आदमी, उत्तम योद्धा।” दूसरों को भी यह योजना पसन्द आई। उनकी शर्त केवल इतनी थी कि कोई फार से नीचे न उतरे।

वे घबकते हुए रेगिस्तान के ईशान कोण की तरफ रवाना हुए। मड़क नहीं थी, इसलिए उन्हें कैटरपिलर के पहिये चढ़ाने पड़े थे। उनके सामने रेत, रेत और रेत के सिवा कुछ भी न था। गर्मी असह्य थी। हेलगा यंत्र के पास बैठी-बैठी सारा समय बर्क हो बनाया करती थी।

एकाएक गिल्लर्ट चित्तिज पर दिखाई पड़नेवाले धूल के बादल की तरफ इशारा करके चिल्ला उठी—“काफ़िना।”



घोड़ी ही देर में उाकी ओर घीरे घीरे आगेपाछी ऊँटोंकी एक कतार दिखाई पड़ी ।

थोड़ी ही देर में उनकी ओर धीरे-धीरे आनेवाली ऊँटों की एक कतार दिखाई पड़ी ।

डेरिफ, जेफ्रे और डोनल्ड मशीनगन सँभालने लगे । गिल्वर्ट भिजली का बटन दवाने को तैयार होगई । हेलगा घम की पेटी के पास गई ।

जेफ्रे ने कहा—“देखो, जब मैं ‘चलाओ’ कहूँ, तब सब के-सब धार शुरू कर देना ।”

डेरिफ ने कहा—“लेकिन अगर वे भले अरन हुए तो ?”

गिल्वर्ट ने कहा—“अगर नील होता, तो हमें बता सकता ।”

वास्तविकता

गिल्वर्ट बोली—“वाह, देख तो, क्या बकता है ? समझता है, मुझे इसकी गरज पड़ी है । तू मुझसे ज्यादा अरबों के बारे में क्या जानता है ? हमन तुझे साथ न लिया, इसी से तू जलता है, क्यों ?”

हेल्गा ने पूछा—“क्या वे सचमुच जंगली अरब थे ?”

डेरिफ ने कहा—“अगर वे छिपे हुए लुटेरे न हों, तो जो कहो, हार जाऊँ । मैंने इनके बारे में पढ़ा है । ये लोग मित्र होने का ढोंग करते हैं, और जब आप-हम बेखबर होते हैं, हम पर छुरी चलाते हैं, और घन माल छीन लेते हैं ।”

हेल्गा ने कहा—“कुद्र ही क्यों न हो, हम तो फार में चैठे रहेंगे ।”

कर लेने का इरादा किया। उसने कहा—“हम ऊँट को आसानी से रसोई-घर में रखकर ले जायेंगे, मिरा उसके पैर दरवाजे के बाहर रहेंगे।” दूसरों ने ऐसा करने से इनकार किया और डोनल्ड को रुकना पड़ा।

अरबों को आखीरी सलाम करते वक्त डेरिक ने गिल्वर्ट से पूछा—“टोरेग्स कहाँ होंगे?”

शेख ने कहा—“अजी, मैं आपको चेताये देता हूँ, कि इस रास्ते में होशियार रहियेगा। यहाँ से ठीक एक दिन के रास्ते पर वे लोग हैं। अगर आप सफेद घाँड़ों पर बैठे हुए लोगों को देखें, तो जान लेकर भागियेगा।”

डेरिक ने मुस्कराते हुए कहा—“एहसानमन्द हैं।” और वे चल पड़े।

एक घण्टा चले होंगे कि एकाएक अँधेरा हो गया।

डेरिक ने कहा—“मैं सोचता हूँ, यह अन्धड का आरम्भ है।”

कुछ देर में तो हवा फार के चारों तरफ सन्नाटे लेने लगी।

डोनल्ड चिल्ला उठा—“अरे हाँ, यह तो रेतीला तूफान है।”

यही बात थी। गाड़ी जरा भी आगे नहीं बढ़ी। घड़ी सन मनाहट के साथ रेत फार के दोनों तरफ उड़ रही थी। थोड़ी देर में फार आधी रेत में गड़ गई। हेल्गा ने कहा—“विजली का बटन दवाओ।”

लेकिन वे इतने ज्यादा डर गये थे, कि उनमें से कोई हँस न सका।

कुछ देर बाद गिल्वर्ट ने कहा—“अब ह्या का जोश कुछ ठण्डा हुआ है ।”

डेरिक ने कहा—“नहीं, हम बिलकुल गड गये हैं, और इसी लिए ठीक ठीक सुन नहीं सकते ।”

लेकिन, उस रात किसी को नींद नहीं आई । सवेरा हुआ । घड़ी की मदद से उन्होंने जाना कि सवेरा है, वैसे तो चारों ओर अँधेरा ही था ।

जेम्स ने कहा—“शायद हम करीब एक मील गहरे गड गये होंगे ।” निजली की रोशनी में उसका चेहरा फीका दिगई पड़ता था ।

डेरिक ने कहा—“हमें सब खोदकर बाहर निकलना होगा ।”

उस समय उन्हें याद आया, कि गाड़ी में फावड़े नहीं हैं । गिल्वर्ट को मूर्त आविष्कारक पर बड़ा गुस्सा आया ।

वह बाली—“मूर्त को रेतीले तूफान का तो विचार करना था ।”

हेल्गा ने कहा—“प्यालों से और दूसरे बरतनों से काम चलावें ।”

घस, सब काम पर जुट गये । दरवाज़े साफ करने में ही दो घण्टे बीत गये और आसमान के तारों को वे लोग देख सकें, इसके पेशवर तो रात हो आयी । बड़ी रात तक सब ने काम किया और फिर सवेरे तक ग्यारह बजे की नींद सोये ।

गिल्वर्ट ने नील के सम्बन्ध की अपनी राय नील को बताने

का प्रिचार किया। उसने वायरलेस किया। नील लन्दन में था।
उनकी बातचीत शुरू हुई।

“ऐं देवकूफ ! इसमें फावड़े बावड़े क्यों नहीं रखते ?”

“यह क्या पूछती है ? पागल हो गई है ? क्या मैंने सहारा में
तुम्हें नहर खोदने भेजा है ? शायद तुम नन्हें नन्हें बालकों का
तरह उसे समुद्रतट समझकर रेत से खेलना चाहते होगे। अच्छा
है, खेलो। दुबारा जाओगे, तब मैं तुम्हें बालटियाँ, लकड़ी के
फावड़े, गुब्बियाँ, बेंगले वगैरह दूँगा। अभी गडगड न करो।
बस करो।”

उन्होंने रेगिस्तान में मोटर आगे बढ़ाई।

डेरिक ने कहा—“अरे वह धूल का बादल दिखता है।
काफिला होगा या फिर टोरेस होगा।”

सचमुच काफिला था।

नजदीक आने पर उन्हें मालूम हुआ कि काफिले में सौ ऊँट
थे, फिर भी साथ में सिर्फ छ आदमी थे। ऊँटों पर किसी तरह
का बोझ न लदा था। डेरिक ने कार खड़ी रखी और उनसे
पूछा। उन्होंने सिर हिलाया। मालूम हुआ, वे अँगरेजी नहीं
जानते थे। डेरिक ने जर्मन में समझाया, गिल्बर्ट ने फ्रेंच में,
लेकिन उन्होंने फिर भी सिर हिलाया। इसके बाद गिल्बर्ट इटालियन में बोली और छ में से एक आदमी आगे बढ़ा। वह
टूटी-फूटी इटालियन बोल लेता था।

उसने एक दर्द भरा क्रिस्ता सुनाया—“फेज से हम सो लोगो

। फाकिला खाना हुआ था । उस पिछले 'ओमिस' के नजदीक
 रिंग्सो ने हम पर हमला किया । उन्होंने मन को काट टाला
 और माल लूट लिया । सिर्फ हम छ. जने बचे हैं ।" वह और
 भी कहने लगा—"लुटेरे का नाम रफिया था । वह सहारा का
 एक भयंकर आदमी है ।" बेचारा रोने लगा—"मेरे इक्लौते
 तबके को वह उठा ले गया है । हाय, हाय ! वह दुष्ट या तो उसे
 काट डालेगा, या गुलाम बनाकर बेच डालेगा, ऐ मेरे प्यारे
 अजीब !"

डेरिफ ने शान्त भाव से कहा—"हम तुम्हारे बेटे का बदला
 लेंगे ।"

गिल्टर्ट ने उत्था किया—"चलो, हमारे साथ कार में बैठो,
 हमें रफिया के पास ले चलो । फिर देखते हैं, क्या होता है ।"

अरब ने बड़ी सुशी के साथ कूबूल किया । उन्होंने उसे कार
 में बैठाया और जिस दिशा की तरफ रफिया गया था, उसी ओर
 चले । डेरिफ ने कार सगपट छोड़ दी । लेकिन, पहिये
 कैटर पिलर के थे, इसलिए स्पीड सिर्फ की घण्टा ६४ मील की
 ही रही । आधे घण्टे बाद देखने की बुर्ज पर म जेफ्रे ने पुकार
 कर कहा—"ये दुश्मन दिखाई पड़ते हैं ।"

टोरेक्स मरुद्वीप में—ओसिस में—डैरा डाले पड़े थे ।
 जैसे ही उन्होंने कार को नजदीक आते देखा, सब फौरन ही
 बन्दूक लेकर खोमों से निकल पड़े, और लड़ने के ढंग से कतार
 गौरकर खड़े हो गये । एक साथ बीस गोलीयाँ मोटर के काँच

पर दर्जी, लेकिन फाँच बुलेटप्रूफ था, टूटा नहीं ।

इन लोगों ने अरब के हाथ धोलने की नली दी, जिसमें उसने कार में बैठे-बैठे अपनी भाषा में कहा—“हम रफिया के साथ यातचीत करना चाहते हैं ।”

टोरेग्सों ने सलाह की । फिर एक कड़ावर आदमी आगे बढ़ा । वह थड़ी डरावनी सूरत का था । बालक तो उसे देखकर पीले पड गये । उसने जर्मन में पूछा—“तुम कौन हो और क्या चाहते हो ?” उसकी आवाज खुरखुरी और भारी थी ।

डेरिक ने कहा—“तुमने काफिला लूटा है । इसलिए काफिले का जो माल तुमने लूट लिया है वह, और जिन आदमियों को कैद कर रक्खा है उन सब को लौटा दो ।”

रफिया तिरस्कार के साथ हँसा । उसने अरबी में अपने साथियों से कुछ कहा । वे आगे बढ़े और कार पकड ली ।

गिल्बर्ट ने बिजली के घटन पर हाथ रक्खा, लेकिन डेरिक ने कहा—“एक बार इसे हमें इसके बैम्प में तो चलने दो ।”

अरब लोग कार को अपने डेरे की तरफ ढकेल ले चले ।

डेरिक ने कहा—“अब लगाने दे ।” उसने घटन घुमाया और कार को ढकेलनेवाले सोलहों आदमी शान्त भाव से तनकर खडे रह गये ।

रफिया चिल्लाया और उनकी ओर चाबुक लेकर भपटा—“चलाओ !” लेकिन, वे लोग आगे नहीं बढ़े ।

डेरिक ने बिजली का प्रवाह बन्द किया और सोलह लाशें

धीमे मे रेत में लुढ़क पड़ी ।

डेरिक गरज उठा—“नापाक कुत्ते, तूने जो माल चुराया है, दस सौ लौटाता है या नहीं ?” रफिया अपने मरे हुए सोलह पायियों की ओर देख रहा था ।

उत्साह भाव से उसने कहा—“मैं हारा । तुम्हारे हथियार मुझसे अच्छे हैं । कैदी और लूट का माल मैं लौटा दूँगा, लेकिन गद रगता, रफिया आज तक कभी हारा नहीं है । उसका गुस्सा कभी ठण्डा नहीं होता । वह मौके की ताक में रहता है । याद रखना गोरे छोकरो, रफिया बदला लेकर छोड़ेगा ।”

उसने अपने आदमियों की ओर देखकर कहा—“कैदियों को छोड़ दो, लूट का माल तो आओ ।”

आदमियों ने हुक्म की तामील की । इसके बाद रफिया ने इशारा किया । उसके साथी घोड़ों पर सवार होगये और उसके साथ भाग निकले ।

हाथ की मुट्ठी बनाकर और जोर से चिल्ला कर उसने कहा—“नैर ! मेरी प्रतिज्ञा है ।” उस कैदियों में एक उम अरब का लड़का भी था । पिता-पुत्र खून भेंटे और फफक-फफककर रोये । इसके बाद उन्होंने हेलगा के पैर चूम लिये ।

हेल्गा ने लनाकर कहा—“पागल पन मतकर, पागल ।”

अलबत्ता, दूसरों को यह पसन्द न पड़ा । डेरिक और गिल्वर्ट ने कहा किया कि बचाने वाले तो हम थे । फिर उन्होंने हेलगा के पैर क्यों चूमे ?

जेफ्रे ने कहा—“तो तू अपने मोर्चे तो उतार । हालाँ कि मेरी समझ में यह नहीं आता, कि पैर चुमवाने में क्या मजा है । मुझे तो इसमें मूर्खता मालूम होती है ।”

गिल्वर्ट की ओर देखकर डोनल्ड ने कहा—“यह काम गन्दा भी है ।”

गिल्वर्ट ने डोनल्ड के मुँह पर मारा ओर
धाकती फिर कभी दूसरे समय ।

बातचीत

सकपकाते हुए जेफ्रे ने कहा—“रफिया को क्यों जाने दिया ? न जाने कब वह लौट आवेगा । मैं कहता हूँ कि वह जरूर आवेगा । हट नील, तू मूर्ख है ।”

मैंने कहा—“पगले लडको, पहले यह तो बताओ, कि कहानी कौन कहता है, तुम या मैं ? तुम ध्यान न रखोगे, तो जब तुम डेजिज फूल लेने जाओगे, तब रफिया तुम्हें सतावेगा ।”

जेफ्रे ने कहा—“पर्वा नहीं । यह सच है, उसे जाने देने में तो मूर्खता ही हुई है । वे लोग घोड़ों पर सवार होकर भागे जा रहे थे, उसी वक्त हम उन्हें मशीनगन से ढेर कर सकते थे । तुम मशीनगन का हमें कभी उपयोग ही नहीं करने देना चाहते ।”

डेरिक ने कहा—“लेकिन जेफ्रे, यह ठीक हुआ । अब हमें हमेशा चौकन्ना रहना पड़ेगा । हमेशा बिजली का घटन चालू रखकर हमें सोना पड़ेगा । कैसी मजे की बात है ?”

गिल्वर्ट बोली—“रहो भी, यह तो कहानी है।”

डेरिक ने कहा—“और तू मूर्ख बेवकूफ है।”

डोनल्ड चिदकर बोला—“नील, रफिया से इस गिल्वर्ट को ठग लो न ? गिल्वर्ट सदा के लिए एक कण्टक है।”

गिल्वर्ट ने कहा—“रहने भी दो, मेरे बगैर तुम्हारा काम ही नहीं चल सकता। मुझे छोड़कर इटालियन ग्रीक फ्रेंच किसे प्राती हैं ? बस, हो चुका।”

प्रकरण—३

इन माहसी घालकों ने लौटकर आये हुए क्लैवियों को गाड़ी में बैठा लिया और उनके फाफिले की तरफ रवाना होने की तैयारी कर रहे थे, कि इतने में डोनल्ड ने कहा—“लेकिन रफिया लौटकर आया और तमाम चीजें और दरियाँ उठाकर ले गया, तो ?”

गिल्वर्ट ने कहा—“हम यहाँ चौकीदार रखते जायें। मैं प्रस्ताव करती हूँ कि जेफ्रे और डेरिक माल की हिफाजत के लिए यहाँ बैठें। हम उन्हें वापस लेने आवेंगे।”

डेरिक और जेफ्रे को छोड़कर हरणरु को यह प्रस्ताव पसन्द आया। गिल्वर्ट ने कहा—“दरियों के ढेर पर मशीनगन रख लो, फिर डर क्या है ?”

दोनों बहादुर जवानों के चेहरों पर सुखी छा गई। डेरिक

ने कहा—“बहुत ठीक । हम सामान की रक्षा करेंगे ।”

कार में से मशीनगन निकालकर दरियों की ढेर पर गद्दी की गई । पास ही दो हजार कारतूस रक्खे गये । डेरिक और जेफ्रे ने अरबों को सलाम किया और कार चल पड़ी ।

घातचीत

“अरे डेरिक, हम तो अकेले रह गये । अगर वह आ गया तो ?”

“और जेफ्रे ! कारतूसों का पट्टा काम न दे, या ऐसी ही कोई गड़बड़ हो गई, तो ?”

दोनों लडके क्षितिज की तरफ देखते हुए बैठे रहे । एकाएक जेफ्रे ने डेरिक का हाथ पकड़ा । डरकर उसने धीमे से कहा—
“धूल !”

डेरिक बोला—“अब समय आ पहुँचा है ।”

उसने कारतूस के पट्टों का एक सिरा उठाया । एकदम उसका चेहरा पीला पड़ गया । मुँह से मारे डर के करुण चीख निकल पड़ी—“जेफ्रे, मार डाला ! हमने झूठे कारतूस लिये हैं । यह पट्टा तो दूसरी मशीनगन का है ।”

उस वक्त दोनों एक दूसरे का मुँह ताकने लगे ।

इसके बाद उन्होंने टोरेण्सों के नजदीक आनेवाले सफेद घोड़ों की तरफ अपनी निगाह दौड़ाई ।

हर एक ने पिस्तौल तान ली । दोनों के पास सिर्फ चालीस कारतूस थे ।

टोरेग्स अर्धचन्द्राकार में सरपट उनकी तरफ बढ़े आ रहे थे। इन दो बहादुर वीरों ने हाथ से हाथ मिला लिया।

हँथी हुई आवाज से डेरिक ने कहा—“इस काफन से अगर हम बच न सके, तो

काँपते हुए कण्ठ में जेफ़ बोला—“शायद गिल्वर्ट ठीक मौक़े पर कार लेकर आ पहुँचे।”

डेरिक ने निराश भाव से कहा—“लेकिन गिल्वर्ट कम्पास नहीं पढ़ सकती।”

डेरिक की बात सच थी। कार अरबों को काफ़िने की ओर नैऋत्य कोण में ले जाने के बदले धायव्य की ओर ले जा रही थी। गिल्वर्ट कम्पास पढ़ न सकी।

इस बीच दोनों लड़कों ने दरियों की दीवार बनाई और यह विचार करते हुए बैठे, कि अब क्या होगा ?

जेफ़ ने कहा—“हमने कार छोड़कर यही गलती की। कितनी बड़ी मूर्खता।” उसकी आँखों से टप् टप् आँसू गिरने लगे।

रफ़िया स्वयं घोड़े पर आगे बढ़ा। उसने कहा—“अब तुम हमारा कैदी हो। शरण आओगे, तो सही सलामत समझो। सामाग कराओ, तो याद रखो, बुरी तरह मारे जाओगे। शायद तुम मेरे कुछ आदमियों को मार सकोगे, लेकिन दो सौ आदमियों को मारने की ताकत तुम में नहीं है।”

लड़कों को शक हुआ कि शायद रफ़िया भूठ बोलता है।

कहानी

हमारे दो बहादुर बालक इतना तो समझ गये कि टोम लोगों में इस सवाल को लेकर मतभेद हो गया था, कि उन्हें किस तरह सता-सताकर मारा जाय। हाँ, वे लोग क्या कहते थे, समझ में नहीं आता था, लेकिन एक आदमी दो बड़े जगली घोड़ों का तरफ इशारा कर रहा था। मालूम होता था, वे शरारत पर कमर कस चुके थे, क्योंकि वे रस्सियाँ खींचने लगे थे।

डेरिफ ने भय से जेफ्रे के कान में कहा—“तूने ‘मशिया’ का किस्सा सुना है? वह जङ्गली घोड़े की पीठ से बाँधा गया था और बाद में घोड़ा छोड़ दिया गया। उसके बाद उसका कभी पता न चला।”

जेफ्रे ने कुछ आशा से कहा—“अगर हमें घोड़े पर बाँध कर छोड़ दें, तो छूटने की कुछ आशा जरूर है।”

लेकिन रफिया के सामने देखते ही उनकी आशा धिलीन हो गई।

साफ़ दिखाई पड़ता था, कि रफिया उक्त योजना का विरोधी था। उसने पुरती से कुछ हुक्म जारी किये और कुछ मजबूत हाथ इन लड़कों को ताड़ के पेड़ के झुण्ड की तरफ उठाकर ले चले। हर एक लड़के को पेड़ के साथ बाँध दिया गया और अरब लोग सूखे पत्ते और डालियाँ इकट्ठा करने लगे।

डेरिफ ने सिसकियाँ लेते हुए कहा—“अरे, ये तो हमें जिन्दा जला डालेंगे।” जेफ्रे तो कुछ धील ही न सका।

ऊँची ऊँची चिताएँ रची गई । लडके उनपर मुला दिये गये ।
मर्क उनके सिर चिता पर दिखाई देते थे । रफिया एक ओर था ।
पेकार के साथ उसने कहा—“हा हा, हा, मूर्खों, तुम
रफिया के साथ लडने आये थे, क्यों ? सूअरों !”

डेरिक ने प्रत्युत्तर में कहा—“सूअर तू है ।”

रफिया उसके पास बढ आया और जोरों से डेरिक के गाल
पर एक चाबुक जमा दी—“ठीक है, चाबुक का यह निशान
जिन्दगी भर रहेगा ।”

बातचीत

डेरिक ने अपना गाल देखा । उसे पता भी न था कि उसने
अपने गाल पर कन हाथ फेरा था ।

कहानी

दुष्ट रफिया ने हुक्म दिया—“लगाओ आग ।”

दो आदमी चिता सुलगाने आगे बढे ।

काँपती हुई आवाज से जेफ्रे ने कहा—“डेरिक, तू प्रार्थना
करना जानता है ?”

डेरिक ने ग्लानि पूर्वक कहा—“मुझे तो सिर्फ इतना ही याद
है कि ‘तू अपने पड़ोसी के बैल या गधे का मोह न कर’ ।”

जेफ्रे बोला—“चलो, यही सही । हालाँकि इस समय के
लिए यह प्रार्थना समुचित नहीं है । तुम्हारी क्या राय है ?”

आग सुलगी । लडकों के पैर गरमाने लगे । धुँएँ के मारे
उन्हें साँसी आगई ।

डेरिफ ने कहा—“धुँए से हम तत्काल ही बेहोश हो जायेंगे। अच्छा तो है, अधिक दुःख देखने से बचेंगे।”

एकएक उन्होंने अरबों को उत्तेजित होते देखा। वे अपने बन्दूकें उठाकर इधर-उधर भागने लगे। इतने में तो मशीनगन की गड़गड़ाहट सुनाई पड़ी।

दोनों लड़के एक साथ चिल्ला पड़े—“घत्तरे की, बचे तो।”

मानों किसी ने कहा—“पूरे नहीं।”

उन्होंने ऊपर को देखा। उनकी बन्दूकें रफिया के हाथ में दिखाई पड़ीं। ये बन्दूकें सेफ्टी बन्दूकें थीं।

रफिया ने घोड़ा दबाया, लेकिन आवाज नहीं हुई। उसने दुबारा बन्दूक की जाँच की। फिर से घोड़ा दबाया और लड़कों के सामने पिस्तौल का निशाना किया।

डेरिफ और जेफ्रे ने अपनी आँखें बन्द कर लीं, लेकिन मौत को आने में बहुत देर होते देखी। उन्होंने दुबारा आँखें खोली और

यातचीत

“अब बाकी का किस्सा हम कल खतम करेंगे।”

एक साथ पाँच आवाजें आई—“वेवकूफ, आगे कह।”

मैंने आगे कहना शुरू किया।

कहानी

उन्होंने। जब दूसरी बार आँखें खोली, तो रफिया की लाश को ज़मीन पर पड़ा पाया। उसके पास डोनल्ड हाथ में पिस्तौल



इसने म तो मसीनगा की गड़गड़ाहट सुनाई पड़ी ।
 दोनों सड़क चिन्ता पड़े—“घत्तेरे की, यचे तो ।”

लिए खड़ा था। इतने में तो वे ने बहादुर वीर बेहोश हो गये।

जब उन्हें होश आया, वे कार में मिश्रीने पर पड़े थे। हल्का ठण्डे पानी से उनके मुँह पोछ रही थी। कमजोर स्वर में जेफ्रे ने पूछा—“तुमने किस तरह हमारा पता लगाया?”

हेल्गा ने कहा—“गिल्बर्ट कहती थी, हमें बाँधी और जाना चाहिये। मैंने और डोनल्ड ने कहा, ग्राहिनी और जाना चाहिये। उसने हमारी नहीं मानी। वह कहने लगी, मैं तुमसे बड़ी हूँ।”

डोनल्ड ने कहा—“यह सच है। लेकिन गिल्बर्ट को दाँव बाँधे का ग्याल ही कहाँ रहता है? वह हमें दाहिनी ओर ले गयी और समझती रही कि बाँधी और ले जा रही है।”

डेरिक ने पूछा—“फिर क्या हुआ?”

गिल्बर्ट ने कहा—“हमने अरबों को और जलती हुई आग को देखा। तुरन्त ही मशीनगन दागी और उनका कचूमर निकाल डाला। पटापट वे ज़मीन पर गिरने लगे, घड़े मजे का दृश्य था वह।”

डोनल्ड ने कहा—“रफिया को मैंने उड़ाया था।”

इसके बाद डेरिक ने कहा—“यहाँ से रवाना होने के पहले हम अपनी मशीनगन और पिस्तोले ले लें।”

बाहर जाकर गिल्बर्ट मशीनगन और पिस्तोल अन्दर ले आई। लेकिन अरियाँ और दूसरी चीज़ें वहीं रहने दी।

डोनल्ड ने चाचा रिफिया की गोपनी साध तैती जाय, और हेल्गा ने भी उनके इस विचार का समर्थन किया, लेकिन

खोपड़ी निकालने की किसी की हिम्मत न पड़ी ।

धातचीत

डेरिक ने कहा—“सहारा में आप खोपड़ी उतारियेगा नहीं ?”

मैंने पूछा—“क्यों नहीं ?”

“सिर्फ लाल जंगलो ही खोपड़ी उतारा करते हैं । और डोनल्ड इतना छोटा है, कि किसी का मार नहीं सकता ।”

मैंने चिढ़कर कहा—“बेयका, मूअर ! तुम्हें क्याया किसने ?”

उसने लीभकर कहा—“डोनल्ड ने । आप यही कहा चाहते हैं न ? एकध रेनीला तूफान आया होता, तब भी बच जाते ।”

गिल्बर्ट ने कहा—“हाँ, डेरिक, डोनल्ड अभी बालक है ।”

डोनल्ड ने हड़ता से कहा—“रफिया को तो मैंने ही मारा है । नहीं मारा, नील ?”

मैंने कहा—“डोनल्ड, सचमुच तूने दो नालायक लड़कों को बचाया । मेरा खयाल है कि जब ये लोग दुबारा किसी खतरे में पड़ें, तब तू निल्कुन नया व्यवहार करना । अच्छा चलो, अब कहानी सुनो ।”

कहानी

इसके बाद उन्होंने ईशान कोण में त्रिपोली पहुँचने के लिए सहारा पार करने का निश्चय किया । एक बार गिल्बर्ट के पिता त्रिपोली में अफसर रह चुके थे । इस हकीकत के आधार पर गिल्बर्ट ने दावा किया कि वह सारी मण्डली के लिए त्रिपोली के रहनुमा का काम कर सकेगी ।

इसके बाद बड़े उकतानेवाले दिन आये—रेत, रेत, रेत । कभी कभी वे 'ओसिस' के नजदीक ताड़ या खजूर के ऊँचे पेड़ों के नीचे आराम करते, कभी रास्ते में मिलनेवाले मायालु व्यापारियों के साथ वार्तालाप हो जाता । ये व्यापारी रफिया की मृत्यु का समाचार सुनकर बहुत खुश हुआ करते ।

आखिर वे त्रिपोली की सरहद पर पहुँचे । यहाँ उन्होंने एक हरे मैदान पर डेरा डाला । जगह ठण्डी थी । पानी और नारियल के पेड़ थे । उन्हें नहाने की इच्छा हुई । लेकिन वे डरे कि कहीं मगर खा न जायें । डेरिक ने कह रक्खा था कि चलने का समय होने पर वह विगुल बजावेगा ।

दो बजे विगुल बजा ।

सब दौड़ते हुए फार के पास आये ।

नहीं, सब नहीं, एक व्यक्ति कम था । गिल्वर्ट कहती थी, कि मैं यहाँ अमर-भेल के फूल खोज रही हूँ ।

डेरिक ने दुबारा विगुल फूँका । जवान नहीं मिला ।

जेफ़े ने कहा—“चलो, हम फार को तालाब के चारों ओर घुमा लायें ।”

वे तालाब के चारों ओर घूमे, लेकिन गिल्वर्ट का कहीं पता न चला ।

एकाएक डोनटड चिल्लाया और अँगुली से इशारा करके सब का ध्यान एक ओर को खींचा—“देखो तो, यहाँ घोड़े की टापों के निशान हैं ।”

डेरिक तेज़ी से नीचे उतरा और उसने अपने काँच से उन शानों को देखा। उसने कहा—“हमें इन चिह्नों के आधार पर चलना चाहिये।”

वे आगे बढ़े।

मारचर हेल्गा ने कहा—“अरे देखो तो, यहाँ एक कागज का टुकड़ा पड़ा है।”

पहले तो दूसरों को उसका कोई महत्व नहीं मालूम पड़ा। किन्तु जेफ़ ने सोचा, ऐसी जङ्गली मुलक में कागज का टुकड़ा असम्भव वस्तु है।

उसने कहा—“चलो, ज़रा पीछे लौटकर उसे उठा लें।”

उन्होंने वैसा ही किया। वह कागज ‘टाइम्स’ का टुकड़ा था। मगर जल्दी में लिया था—‘मुझे जङ्गली लोग उठाकर ले जा रहे हैं। बचाओ, गिल्बर्ट।’

बहादुरों का दल पुकार उठा—“चलो मदद को।”

कार बड़ी तेज़ी के साथ आगे बढ़ी। फौरन ही धूल के नारंगर-सा कुछ दिखाई पड़ा। डेरिक ने मोटर को ‘फुल स्पीड’ में छोड़ दिया। कुछ ही देर में वे इतने नज़दीक जा पहुँचे कि दूर से तोप चला सकें।

हेल्गा ने कहा—“हम तोप न दागेंगे। कदाचित् गिल्बर्ट घायल हो जाय।”

डेरिक ने कहा—“तब तो बिजली के तार का उपयोग करे।”

सामने धूल के बादल के सिवा कुछ नज़र ही न आता था।

डेरिक ने कार अन्दर बढाई । तुरन्त कुछ घन पदार्थ सा दिखाई पडा । डेरिक ने मोटर आगे बढाई । एक बडी दीवार के साथ मोटर का अगला भाग टकराया ।

उसने निराश होकर कहा—‘लुटेरे किले के अन्दर घुस गये हैं ।’

कार पर गोलियों की बारिश होने लगी । डेरिक ने कार को किने के इर्द-गिर्द घुमाकर देखा । भारी मजबूत फाटकों को देखा । सोचा कि तोड़कर हौले-हौले अन्दर घुस सकेंगे या नहीं । सन ने देखा कि काम असम्भव है ।

जेफ्रे ने कहा—“देखो, उस खिडकी मे किसी का सिर दिखाई पडता है ।”

चेहरा किसी आदमी का था । वह भयकर और दुष्टता पूर्ण था ।

आदमी ने कहा—“क्यो, जर्मन समझते हो ?”

डेरिक ने कहा—“हाँ, समझता हूँ ।”

सन उम आदमी ने कहा—“मैं बर्बर लोगो का सरदार हूँ । मेरा नाम बर्बरीको है । मैं गोरी लडकी को चाहता हूँ । मैं उसे अपनी बडी बेगम बनाऊँगा । तुम चले जाओ । वह कहती है कि तुम्हारे साथ वह आना नहीं चाहती । वह मुझे प्यार करती है ।”

लॉनलड ने जर्मन में कहा—“तु झूठ कहता है ।” लेकिन सरदार ने मचाफ की हँसी हँसते हुए कहा—“चो जाओ ।

नहीं तो तुम गिद्धों का मीठा भोजन बनोगे।” इतना कहकर वह अदृश्य हो गया।

जेम्मे ने पछताते हुए कहा—“हमें उसे घन्टूक का निशाना बनाना चाहिये था।”

युद्धमन्त्री सलाह करने बैठे। यह तय पाया कि अँधेरा होने तक ठहरा जाय। फिर बड़े फाटक को घम से उड़ा दिया जाय।

रात हुई और उन्होंने घटन देखा। सारी रात किसी की नींद नहीं आई। बार बार जेम्मे सर्च लाइट फेंकता था। आधी रात के समय डोनल्ड ने कार के पास कोई सफेद वस्तु देखा। घमने दूसरों से कहा और तीन पिस्तौलें तन गईं। लेकिन उस सफेद मूर्ति ने अपने हाथ ऊँचे किये। डेरिक ने दरवाजा खोल दिया।

उसने अमेज़ी में कहा—“मैं बहन का सदेश लाई हूँ।”

घमने एक चिट्ठी दी। डेरिक ने आतुरता के साथ चिट्ठी खोली। उसमें लिखा था—“डेरिक, मुझे बचाना। मुखिया पशु है। यह स्त्री मित्र है। यह तुम्हें मेरे पास पहुँचा देगी।”

जेम्मे ने कहा—“भैया, कुछ दगा है।”

डेरिक ने कहा—“असम्भव! दुनिया में केवल एक ही व्यक्ति है, जो ऐसी भाषा लिख सकती है।” उसने स्त्री की ओर मुड़कर पूछा—“तुम कौन हो?”

स्त्री ने कहा—“साहब, मैं मुखिया की बड़ी बेगम हूँ। लेकिन घरवालों पहले जय नहन के बाप इटली की फौज में थे।

सर का काम करते थे, तब मैं उनके पास नौकर था। मैं
घरवारीको को बिचारती हूँ। यह दुष्ट राक्षस है। चलो, मैं तुम्हें
रास्ता बताऊँगी। साथ में हथियार ले लो। लेकिन देखो, हथि-
यार ऐसा लो, कि ज़रा भी खड़खड़ाहट न करे।”

उन्होंने सलाह कर ली और आखिर यह ठहराया कि—
यातचीत

हेल्गा ने डरकर कहा—“मुझे न भेजना।”

जेम्मे ने मसरारी को—“तू है, ही निकम्मी। तुझे फार हा
में रखेंगे।”

डोनल्ड ने महादुरी के साथ कहा—“लेकिन मैं जाऊँगा।”

जेम्मे ने थरथराते हुए कहा—“अरे! यह तो हमें किने के
अन्दर ले जाने की तरकीब है। मैं जाना नहीं चाहता।”

मैंने पूछा—“डेरिक, तुम्हारी क्या राय है?”

डेरिक ने मेरा प्रश्न नहीं सुना। उसकी आँखें बड़ी बड़ी
और चमकीली थीं। मानो वह किने के अन्दर पहुँच चुका
था।

कहानी

आखिर यह ठहरा कि डेरिक और डोनल्ड जायें। उन्होंने
अपने साथ एक एक छुरी और एक-एक पिस्तौल ले ली। डेरिक
ने आवश्यकता पडने पर उपयोग के ख्याल से अपनी जेब में
दो घम डाल लिये। जेम्मे और हेल्गा को फार में रक्खा और
कहा कि कुछ भी क्यों न हो जाय, वे फार न छोड़े।

हेल्गा ने कहा—“भाई, मैं तो कभी कार न छोड़ूँगी।”

अँधेरे में लडखड़ाते दोनों भाई चले। वह स्त्री उन्हें किले की एक छोटी सी गिडकी के पास ले गई। उमने ताली लगाकर गिडकी खोली। सामने अँधेरी गली थी। डेरिक की इच्छा हुई कि बिजली की बत्ती जला ले, लेकिन स्त्री ने कहा—“काम बहुत खतरनाक है।” वे अँधेरे में आगे बढ़े। आखिर, दूर पर एक चिराग दिखाई दिया।

स्त्री ने कान में कहा—“बढ़ चौकीगर है, रोस्किन, यन्दूक से मारोगे, तो खेल गिगड जायगा। उसे चुपचाप मारना चाहिये।”

डेरिक ने सोचा, यह उसके जीवन की एक कीमती घड़ी है। उसने अपने मन से कहा, मुझे लुक छिपकर आगे बढ़ना होगा और पहरवाले को कायर की तरह पीठ-पीछे घायल करना रहेगा।

उसके मन में एक नई तरकीब पैदा हुई—“यद्यपि यह कार्य प्रतिष्ठायुक्त तो नहीं है, फिर भी यह तो युद्ध है।” यह कहकर उसने डोनल्ड से हाथ मिलाया। फिर दौंव पीसकर हाथ में धुरी लिये, वह लुकवा छिपता आगे बढ़ा, लेकिन दैव प्रतिकूल था। चलते समय पैर के नीचे का एक पत्थर खिसक गया। पहरदार मारे डर के चीख उठा। डेरिक ने पिस्तौल दाग दी—धौंय, धुधुम। गोली पहरदार की छाती को चीरकर उम पार निकल गई। लाश आवाज के साथ नीचे गिर पड़ी। इधियार-यन्दूक आदमी निकल आये और दो यन्दूकों से मौत का मया

चखने लगे । लेकिन दुश्मन सख्या में अधिक थे । ऐसा मालूम होता था कि लड़को को पोछे हटना पड़ेगा ।

डोनल्ड ने चिल्लाकर कहा—“बम फेंको ।”



गिडवर्ट एक कुर्सी से बैठी थी, सरदार उसके सामने
रिवाल्वर ताने खड़ा था ।

डेरिक ने बम फेंका । डोनल्ड, वह स्त्री और डेरिक, तीनों जमीन पर चित्त लेट गये । घड़ाका कानों को बहरा बनानेवाला था । जब धुँआँ कम हुआ, तो पता चला कि वहाँ बेबल लाश-एँ लाश पड़ी थी । घाती कुछ आदमी डगकर भाग गये थे ।

डेरिक ने कहा—“आगे चलो ।”

और उन्हें आगे ले चली। एक भी सिपाही न मिला।
 बिजली की धतियाँ जलाकर आगे बढ़े। लडको ने
 तौल फिर से भर ली थी। एक दरवाजे के सामने वह खी
 ली। वह धीरे से बोली—“यह सरदार का कमरा है।”

डेरिक ने धीमे से दरवाजा खोला। अन्दर का दृश्य देखकर
 पीछे हट गया। गिल्बर्ट एक कुर्सी में बैठी थी, सरदार उसके
 मन रिवाल्वर ताने खड़ा था।

सरदार ने स्वीकृत कर कहा—“अच्छा, ठीक मौक़े से आया।
 देख, अब तेरी सखी की मौत तेरी आँखों के सामने ही होगी।
 अगर तूने खग भी अपना हथियार चलाया, तो उसी क्षण
 रिवाल्वर की गोली इस लडकी को छेद डालेगी।”

बातचीत

मैंने जरा मौज में आकर कहा—“लडको, अब मैं जरा थक
 गया हूँ। कल तक गिल्बर्ट को वहीं बन्द रहने दे।”

गिल्बर्ट ने कहा—“तू यह समझता होगा, कि मैं डरती हूँ।
 केन उस सरदार से मैं तनिक भी नहीं डरती।”

हेल्गा बोली—“भई, जल्दी करो और कहो कि फिर क्या
 आया।”

मैंने कहा—“डेरिक से पूछ, यह यहाँ था।”

डेरिक ने कहा—“कैसे ही क्यों न हो, हमने उसे मार
 डाला।”

जेम्मे बोली—“यह तो जानते हो, कि उसे मार डाला, लेकिन

प्रकरण-४

गिल्वर्ट को होश आया। डेरिक ने आतुरता से कहा—“हमें जितनी जल्दी हो सके, यहाँ से निकल भागना चाहिए। सर वार मर चुका है, लेकिन उसके आदमी अभी जिन्दा हैं।”

दरवाजे के पास से डोनल्ड डरकर पुकार उठा—“अरे, इस तो घिर गये हैं।”

घबराकर वे एक दूसरे का मुँह ताकने लगे।

डेरिक ने कहा—“जाल में फँस गये।”

सचमुच वे बड़ी खराब हालत में थे। दरवाजा खुलने पर भी रास्ता ढूँढना मुश्किल था, क्योंकि किने में असंख्य रास्ते थे।

बातचीत

जेफ्रे ने गिल्वर्ट से कहा—“तूने मोटर छोड़कर बड़ी भारी भूल की।”

हेल्गा बोली—“हमें फिर कार छोड़नी ही न चाहिए।”

कहानी

उधर हेल्गा और जेफ्रे खूब ही भयभीत होकर कार में बैठे थे। उन्होंने धमाके की आवाज सुनी थी। बाद में शान्ति छा गई और वे थर-थर काँपने लगे।

हेल्गा ने सिमकते हुए कहा—“अनकी वे जरूर मारे गये। हम क्या करेंगे?”

कम्पित स्वर से जेफ्रे बोला—“कुछ सूझ नहीं पड़ता।”

एकाएक हेलगा बोली—“हम नील को वायरलेस करें।”

नेपल्स के बन्दरगाह में नील को सदेशा मिला। वह पिकैपट की चोट में बैठकर ईजिप्ट जा रहा था।

जेम्मे ने सदेशा सुनाया—“गिल्बर्ट, डेरिक और डोनल्ड क्रिले ने अन्दर घिर गये हैं। हमारा खयाल है कि वे सब मारे गये हैं।”

जेम्मे वायरलेस की चिह्नांकित भाषा अच्छी तरह जानता न था। नील ने जवाब से वह अधिक उलझन में पड़ा।

नील ने कहा—“और सब किस चीज से भर गये हैं, छुहारे में या नारियलो से?”

जेम्मे बोला—“यह मजाक करने का वक्त नहीं है।”

नील ने जवाब दिया—“तो गिल्बर्ट, डेरिक और डोनल्ड क्रिले में घिर गये हैं, या भर गये हैं, इमका मतलब क्या? क्रिस्ता खतम हो चुका है, या बालक अघा गये हैं? कुछ समझ में नहीं आता।”

जेम्मे ने कहा—“मारे गये हैं, भरे नहीं हैं।”

नील बोला—“क्रिस्ते का मारे गये से क्या लेना देना है? वहाँ त्रिपोली पहुँचकर कौन सा किस्मा छेडा है?”

हेलगा ने कहा—“मुझे कहने दे।”

हेलगा ने धक्का देकर जेम्मे को दूर हटाया। वह बोली—“लुटेरो ने उन्हें पकडा है। शायद वे मार डाले गये हैं।”

नील का जवाब मिला—“तुम्हारे रेखाश अक्षरा क्या हैं? जल्दी करो।

जेफ्रे और हेल्गा घबड़ाहट में एक दूसरे का मुँह तारने लगे।
वे समझ न सके कि नील क्या कहता है।

नील ने पूछा—“तुम कहाँ हो?”

जेफ्रे ने जवाब दिया—“हमारा ग्याल है कि हम अफिरा
में हैं।”

इसका जवाब कहा नहीं जा सकता। नील की गन्दी भाषा
में यन्त्र काँपने लगा।

नील ने कहा—“कार के बाहर निकलकर देखो, और जो
देख पाओ उसका वर्णन करो। दूर पर कोई पहाड़ दिग्गता है?”

जेफ्रे ने कहा—“हाँ, एक पर्वत श्रेणी दिग्गई पडती है। शख
की सूखत की एक पहाड़ी नजर आ रही है।”

नील की भाषा सुनने योग्य न थी। उसने कहा—“शख,
फिर से कहो।”

जेफ्रे बोला—“ज्वालामुखी के मुँह सी मालूम पडती है।”

जेफ्रे ने दूसरा वर्णन दिया, लेकिन जवाब न मिला।

एक घण्टा, दो घण्टे, तीन घण्टे, चार घण्टे बीत गये। एका
एक हेल्गा पुकार उठी—“वह देखो, आकाश में कुछ दिग्गई
पडता है।”

जेफ्रे ने कहा—“पक्षी।”

हेल्गा बोली—“हवाई जहाज।”

यह चीख जरा बड़ी दिग्गई देने लगी।

घड़े उत्साह से जेम्मे ने कहा—“है तो हवाई जहाज ही ।”

लेकिन यह हवाई जहाज न था, यह तो फाँच की कार थी, ऊपर गोल चक्र फाट रही थी ।

हेल्गा बोली—“सन्देशा भेजो ।”

जेम्मे ने खाली कायर किया । निशाना लगा । कार नीचे उतरी और इन लोगों से तीस गज की दूरी पर ठहरी ।

नील और पिक्कैफ्ट चाहर कूद पड़े । दो मिनट में उन्हें असली घात मालूम हो गई ।

किले से प्रति क्षण घटूक छूटने की आवाज सुन पड़ रही थी ।

नील बोला—“पिक्कैफ्ट, एक क्षण भी व्यर्थ नहीं लोगा चाहिए । हमलोगों को किने के अन्दर चलना होगा । कार चलाओ ।”

वे हवाई कार की तरफ घड़े, अन्दर बैठे, आसमान में ऊँचे उड़े, किने पर मँडराये और अन्दर उतरे । अन्दर से गोलियों की चौद्वार बरसी ।

पिक्कैफ्ट हँसा और बोला—“अपना भी वही हाल होगा ।”

इन्होंने नीचे घम फेंका और जिम तरह तूफान में चिथड़े उड़ जाते हैं, उसी तरह लुटेरे उड़ गये । तुरन्त ही उड़ता हुआ जहाज नीचे उतरा । खिड़कियों और दरवाजों में से गोलियाँ घरसने लगीं ।

नील ने फाँपते हुए कहा—“इस आग में हम चाहर नहीं

निकल सकते । उन तीनों को मरने ही देना होगा ।”

एकएक सिडकी की राह आवाज आई—“यह कार हमारी नहीं है, यह तो हमारी कार से बड़ी है ।”

नील ने कहा—“यह तो गिल्बर्ट चोल रही है ।”

उसने दो मजिलि उपर की सिडकी से गिल्बर्ट की आवाज को आते सुना था ।

पिटैफ्ट ने कहा—“चलो, यहाँ चले ।”

उसने चक्का चामा । धीमे धीमे वह कार को सिडकी के नजदीक ले गया, लेकिन मालूम पड़ा कि उसमें तो मोटे लोहे की सलाखें जड़ी हुई हैं ।

बहादुर डेरिक ने कहा—“धातु काटने की रेती फेको ।”

नील ने कहा—सड़ी पुरानी बातें न करो । देखो, इस नली का सिरा पकड़ो और ये दियासलाइयाँ लो । हमारे पास आक्सीजन और हाइड्रोजन हैं, और यह आक्सीजन हाइड्रोजन फूँकने की जाती है ।”

डेरिक ने कहा—“बहुत ठीक ।”

तीन मिनट में सफेद आग ने सीपचों को गला डाला ।

फिर नई कठिनाई खड़ी हुई । कार सिडकी से चार फीट दूर थी । आगे को निकला हुआ छज्जा कार को अन्दर जान से रोकता था ।

डेरिक ने कहा—“भैंस कूद पड़ें ?”

रॉबिन डॉनल्ड और गिल्बर्ट ने कहा—“भैया, ऐसा बिलकुल

न करना । एक क्षण के लिए भी अगर तुम दिखाई पड़े, तो नीचे घाले गोलियाँ बरमाना शुरू कर देंगे ।”

नील ने कहा—“तूने पर चलकर आ मफोगे ?” उसने कमरे में कुल्हाड़ी फेंकी और बोला—“लकड़ों की कर्श में से तज्जा काट लो ।”

गिल्बर्ट बोली—“अरे, यहाँ तो पत्थर जड़े हुए हैं ।”

डेरिफ बोला—“हाँ, मुझे याद आया । अपनी कार के कैटर पिलर के पहियों में से टुकड़ा काट ले ।”

नील ने कहा—“बाप दादों के जमाने की बात । इन मशीन में वही ऐसी चीजें भा होती हैं ?”

गिल्बर्ट ने पुकारकर कहा—“दूसरी कार में मैं उठा लाओ न ।”

नील ने कहा—“ठीक कहती हो ।”

फोगन हो कार तेजी के साथ किने पर में लड़ी । लेकिन जब वे कैटरपिलर के पहिए लेकर लाटे तो तीनों बालक भयकर स्थिति में थे ।

उन्होंने फर्नीचर आड़े रखकर दरवाजे धन्द कर दिए थे । फिर भी दुश्मन आँगन में में चार कर रहे थे । दो निसैनियों लगाई गई थीं । आदमी निसैनियों पर चढ़ रहे थे । नील और पिन्नेफ्ट न देखा, घमासान लड़ाई छिड़ी हुई है । बालक दिखते न थे, लेकिन निसैनी के रास्ते हर एक आदमी खिड़की के सामने पहुँचता था कि तत्काल ही उसके हथियार छूट पड़ते थे और वह

जेफ़े, हेलगा और डोनल्ड ने पक्ष में मत दिया ।

मैंने कहा—“चलो, तो फिर मैं चलता हूँ । लेकिन अलबत्ता, दोनों कार ‘अपट्रूडेट’ होनी चाहियें ।”

डेरिक बोला—“कायरो (cairo) पहुँचने के बाद तू हमारा कार को भी उड़नेवाली बना देना ।”

गिल्वर्ट ने कहा—“उँह, यह कहता है, कि यह खुद आविष्कार कर सकता है, लेकिन सुनो तो, यह सब ढोंग है । नूढ़े नील तुझसे तो मेरा कुत्ता होशियार है । घर पर अनेक सुन्दर चीजों का आविष्कार कर लेता है ।”

डोनल्ड ने पूछा—“कार और दूसरी चीजों का ? उड़ने वाली कार का भी ?”

गिल्वर्ट ने अनसुनी करके पूछा—“डेरिक, तेरी क्या राय है ? क्या तू मानता है कि नील जो कहता है, खुद बना सकता है ?”

डेरिक ने ज़रा सोचकर कहा—“उड़ने वाली कार ? हाँ, बन सकती है । लेकिन पानी बनाने की मशीन की बात मूर्खता पूर्ण मालूम होती है । मैंने अपने साइन्स मास्टर मि० सिफ़र्ट से इस बारे में पूछा था । वह कहते थे, हवा में हाइड्रोजन बहुत कम है । नूढ़े नील, हाथ से पानी बनाने की मशीन तू कैसे बना सकता था ?”

गिल्वर्ट ने मुँह चिढ़ाकर कहा—“देख, देख तो सही, कैसा मूर्ख है !”

मैं जोर से हँसा ।

मैंने कहा—“एक बड़े आविष्कारक को तुम यह मिराने की हेमाकन करते हो, कि हाइड्रोजन कैसे प्राप्त किया जाय ? मि० सिम्ट कबूत करने हैं कि सूर्य में हाइड्रोजन है, लेकिन क्या वह जानते हैं कि रेडियम लांघचुम्बक की तरह हाइड्रोजन को नीचे की ओर खींचता है ? उन्हें पता है, कि गिल्वर्टियम की सहायता से और धातुओं में हाइड्रोजन खींचा जा सकता है ?”

गिल्वर्ट ने सगक हाकर पूछा—“यह गिल्वर्टियम क्या घला है ?”

“यह एक मेरा आविष्कृत पदार्थ है । इससे काम लेना बहुत खतरनाक है, इसलिए इसका नाम ”

गिल्वर्ट ने जोरों से मेरे घाल खींच लिए ।

कहानी

बड़ी सभा जुड़ी थी ।

घातक एक के बाद एक आविष्कारक में उड़नवाली कार के सम्बन्ध में प्रश्न पूछने लगे । उमने कहा—“भिल्कुल सादी चीज है । अच्छा घताओ, हलकी से हलकी धातु कौन सी है ?”

डानट ने कहा—“रागज ।”

हैल्गा बोली—“जा-जा, वागज से तो पर हलक हैं ।”

डेरिक ने कहा—“एल्यूमीनियम ।”

नील बोला—“ठीक है । लेकिन एल्यूमीनियम हवा से भारी है न ? अब यह कार रेडियलम की घनी है अर्थात् एत्य-

और आइस्क्रीम-सलून घनाये जा सकते हैं।”

डेरिक बोला—“इन्हें देखकर मुझे अपनी भूमिति की किताब याद आती है ”

हेल्गा की इच्छा हुई कि अन्दर जाकर देखा जाय, कि क्या है।

डोनल्ड के मन में यह सवाल उठा कि इन लोगों ने इसमें लिडकियाँ क्यों नहीं रखी ?

जेम्स ने तो “वैह इसमें धरा क्या है ?” कहकर पिरामिड की ओर ध्यान ही न दिया।

इसके बाद एक मार्ग दर्शक को लेकर सब महान् पिरामिड में घुसे। पहले तो वे एक लम्बी अँधेरी गली में से गुजरे, जो किसी को बिलकुल ही पसन्द न आया। चारों ओर ठण्डक और ठण्डक थी। आखिर वे धीरे में पहुँचे। एक बड़ा कमरा, छोटी छोटी लिडकियाँ और खुली हवा तक की सीढियाँ थी। मार्ग दर्शक वहाँ गाढ़े हुए राजाआ और उनके स्थान के विषय में कुछ गिटपिट मिटपिट बोल रहा था। उसने यह भी बताया कि अपनी कमाई पर वह किस प्रकार १६ वर्षों और एक स्त्री का भरण-पोषण करता है, लेकिन किसीने उसकी बात सुनी नहीं। हर एक मन में सोच रहा था—“ऐसी भयंकर जगह में क्या निकल भागें।”

इसके बाद नील एक गाइड-बुक तो आया और पिरामिड्स का लम्बा वर्णन पढ़ने बैठा। दूसरे ओता सुनकर आश्चर्य चकित

हुए, लेकिन आखिर नील को पता चला कि वह कोई दूसरा ही वर्णन पढ़ रहा था। गलती से वह 'आसुन टैम' की बनावट का वर्णन पढ़ रहा था।

उसने सही पृष्ठ ढूँढ़ निकाला और पढ़कर कहा कि किसी को पता नहीं कि ये पिरामिड किसलिए बनाये गये थे। इन महान् पिरामिड्स के पत्थरों की लिबरपुल से न्यूयार्क तक एक उम्दा सड़क बन सकती है।

जेफ़ ने कहा—“पत्थर पानी में डूब जाते हैं? यह फ़िताब ही नहीं मालूम पड़ती।”

हेरिक ने कहा—“अटलांटिक केबल की तरह समुद्र के नीचे रास्ता बनाया जा सकता है।”

डोनल्ड ने पूछा—“वे लोग समुद्र में सड़क क्यों बनाते हैं?”

नील ने दिलचस्प बातें पढ़नी छोड़ दीं। समुद्र की धातें करते करते वे शार्क की धातें करने लगे, और शार्क को छोड़कर 'कचैस' की धात छिड़ गई।

हेरिक की एक आदमी से जान पहचान थी। वह आदमी एक दूसरे मनुष्य को जानता था। उस मनुष्य ने एक मल्लाह से बातें की थीं। मल्लाह एक ऐसे आदमी को जानता था, जिसे एक दूसरे मनुष्य ने देखा था कि उसके पैर को शार्क मछला ने ग्रा डाला है। इसी तरह को खूब लम्बी चौड़ी गप्पें हुईं।

वे वापस कायरो आये। तब हेलगा ने कहा—“मैं तुम्हारे साथ ही फ़ोन देखना चाहती हूँ।”

वे बाहर गये । डोनल्ड ने आकाश में एक नन्हे-से विन्दु की ओर इशारा किया । लेकिन इतने में तो वह विन्दु भी अदृश्य हो गया ।

नील ने कहा—“अरे भगवान् ! अच्छा हुआ, जो समय पर पता चल गया । चलो, फ्लू पडो सब के मत्र । नहीं, आप नहीं, मि० पिक्केप्ट, आप बहुत भारी हैं ।”

हवाई कार कुछ फीट तो धीमे धीमे ऊपर चढ़ी । इसके बाद नील ने एजिन को फुल स्पीड में छोड़ दिया । और वे गोल चक्कर फाटते हुए ऊपर चढ़ने लगे ।

नील ने कहा—“हम इस समय फ्री घण्टा ३०० मील की स्पीड से जा रहे हैं, जबकि डेरिक सिर्फ कोई ६० मील की गति से जा रहा है, यशस्वी कि वह नीचे न गिर पड़ा हो ।”

डोनल्ड ने उसे अपने टेलिस्कोप से देखा । वह मौत के मुँह में लटक रहा था । उसका चेहरा भयभीत था । ये लोग क्रम से उसके नज़दीक पहुँचते जा रहे थे ।

नील ने एजिन बन्द किया, और जिस दिशा में डेरिक चढ़ रहा था, कार को उसी दिशा में बढ़ाया । एक रस्सी फेकी गई, डेरिक ने बाँयें हाथ से उसे पकड़ लिया ।

जेफ़े ने चिल्लाकर कहा—“रस्सी को अपने हाथ से बाँध ले ।”
डेरिक ने जैसे तैसे बाँध ली ।

नील ने पुकारकर कहा—“रूद पड ।”

डेरिक ने पत्तर छोड़ दिया । पत्तर हवा में उड़ता हुआ ऊपर

गया। बेचारा डेरिक एकाएक गिरा और कार के नीचे हवा
 इधर उधर भूलता हुआ लटकने लगा। कार में बैठे हुए न
 उसे अन्दर लेने के लिए रस्सी खींची। लेकिन वे डरे, कि शायद
 धमने से रस्सी टूट न जाय।

नील ने नली के अन्दर से कहा—“घबराना मत। हम नीचे
 उतर रहे हैं, तेरे पैर जमीन में टिकने के पहले हम रुक जायेंगे।”

डेरिक का जवाब अन्धरी तरह सुनाई न पड़ा। कार नीचे
 उतरन लगी। जमीन तक पहुँचने में एक घण्टा लग गया। इस
 समय डेरिक बेहोश था। उसका चेहरा स्याह पड़ गया था, क्यों-
 कि रस्सी से उसकी छाती घिस रही थी। वह घबराहट के मारे
 सौत के निकट था। डाक्टर बुलाया गया। डाक्टर ने कहा—“तीन
 मसाह तक निछौने पर रहना पड़ेगा, और शायद यह शेर का
 शिकार करने को न जा सकेंगे।”

घातघीत

गिल्वर्ट घोली—“देखना भई, यह क्या कहता है ! कहता है,
 शाला में मजा नहीं दी जाती और फिर भी डेरिक को सिंह का
 शिकार करने जाने में मना करता है, क्योंकि डेरिक ने घातु को
 छुलिया था। उँह, फिर इसमें और दूसरे शिकार में भेद
 क्या है ?”

डेरिक ने दृढ़ता से कहा—“मैं पीछे रहनेवाला नहीं हूँ।”

मैने कहा—“डाक्टर का हुक्म टाला नहीं जा सकता।”

डेरिफ घोला—“कौन परवा करता है ? मैं तो याद कर
चलूँगा ।”

जेफ्रे ने कहा—“अरे नील, सुथर मत बन सुथर । उस
इरादा घालु चुराने का न था ।”

कहानी

दो दिन बाद फार हवाई बन गई । दोनों फारों का नाम
करण मस्कार करने का विचार हुआ । हेलगा पर यह भार सौंप
गया । उसने फार का नाम ‘चीची’ रक्खा ।

एकदम सब बोल उठे—“यह नाम क्यों ?”

हेलगा बोली—“जब कबूतर का बच्चा उड़ने लायक होता
हम उसे चीची कहते हैं ।”

सन कहने लगे—“हेलगा नाम रखना भी जानती है ।”

इसके बाद दूसरी फार का नाम रखने के लिए डोनल्ड
कहा गया ।

उसने उसका नाम ‘बड़ा कबूतर’ रक्खा । सब कहने लगे—
“ठीक नहीं, झूठा नाम है ।”

जेफ्रे ने कहा—“ले चली या ‘घर की तरफ’ रक्खो ।”

गिल्लर्ट बोली—“हाँ, हाँ, ‘घर की तरफ’ ठीक है । नील
उसमें बैठकर घर की तरफ जायगा और हम यहाँ रहेंगे ।”

दूसरी फार का नाम ‘घर की तरफ’ पड़ा । कूच का दि
आया । यह ठहरा कि नील और पिक्रैफ्ट ‘चीची’ में और घाफ
‘घर की तरफ’ में बैठे ।

कार पर सवार होते होते नील ने कहा—“बेचारे डेरिक को यहाँ छोड़कर जा रहे हैं, यह बहुत बुरा हो रहा है।”

इतने में तो ‘वर की तरफ’ में से पिल्लपिलाकर हँसने की आवाज आई और हाँकनेवाले की जगह के नीचे से डेरिक बाहर निकला।

उसने कहा—“मैं आज सुबह अस्पताल में सटक आया हूँ।”

सब उसे देखकर खुश हो गये। खारदुम तक वे नाइल नदी के साथ साथ गये। नील ने चाहा कि नीचे उतरकर जनरल गॉर्डन की कब्र देखे, लेकिन दूसरों ने कहा—“हम सिर्फ देखेंगे, कब्रें नहीं।”

एक कारवाले दूमरी कारवालों से मजे में घातचीत कर सकते थे, क्योंकि कागजों में हर एक में वायरलेस टेलीफोन लगा लिए गये थे।

वे बहुत ऊपर उड़ रहे थे। वे ‘फेगोडा’ के निफ्ट से गुजरे। फेगोडा के लिए ग्रीटेन और फ्रांस में जो राधाई छिड़ते-छिड़ते रह गई, पिन्ट ने उसका विमसा सुनाया।

जेफ्रो बोला—“ओहो, नीचे बहुत अधिक आदमी फाम करते गिराई पड़ रहे हैं।”

पिन्ट बोला—“मालूम होता है, रेल की नई मडक घना रहे हैं। नीचे चलकर देखें, कि वे लोग कैसे काम करते हैं।”

फारें नीचे उतरें। मडक घनानवालों का घडा-मा कैम्प पड़ा हुआ था। मजदूरों के सरदार का नाम बैंक्स था। उसने

दी जा चुकी थीं ।

मि० वैंक्स ने कहा—‘ झाड़ी में जरा भी आहत सुनें, तो एकदम बटन दबाइयेगा । याद रखिये, हमारी जानें आपके हाथ में हैं ।’ फिर शान्ति छा गई ।

शिकारी मचान पर अँधेरे में निशाना तारकर जा बैठे, यह पहरा खतरे में ग्याली न था ।

नील के दाँत कटकटा रह्ये और टाँगें काँप रही थीं । जेम्स के हाथ में राइफल मुश्किल में धम रही थी, उसके हाथ बहुत ज्यादा काँप रहे थे । हरएक आदमी भयभीत था । अगर वे आपस में बात कर सकते, तो उनका डर कुछ कम हो जाता । लेकिन वे जानते थे कि बात करेंगे तो सिद्ध को मारने का मोका जरूर हाथ से खो बैठेंगे ।

दूर पर गम्भीर गर्जना सुनाई पड़ी, उसके बाद एक धीमी गर्जना । मिह और सिहिनी दोनों ये । शिकारियों ने मजबूती के साथ राइफलों थामीं और कटकटाते हुए दाँतों को दबा रखने की कोशिश करने लगे । एक घण्टा बीता, दूसरा बीता । इसके बाद एकाएक उन्होंने झाड़ी के अन्दर आहत सुनी ।

शिकारी आस्ते से बोले—“सर्च लाइट ।”

लेकिन फार में बैठी हुई लड़कियों ने आहत सुनी न थी । बाईं ओर एक भयंकर गुर्राहट सुनाई दी और कोई चीख उठा । लड़कियों ने उसी क्षण प्रकाश फेंका, किन्तु उन्होंने कौन सा दृश्य देखा ? देखा कि एक बघर शेर टोनल्ड को जमीन पर

घसीट रहा था। सिंह ने उसका दाहिना हाथ पकड़ा था। दर्द के मारे डोनल्ड आहि-आहि पुकार रहा था।



‘एक पक्ष शेर डोनल्ड को ज़मीन पर घसीट रहा था।’

उसे बचाने के लिए हमारे छल्लोंग मारकर नीचे कूदे। डेरिक सबसे आगे था।

निराशा से वह झिल्लाया—“मेरा भाई!” और वह भाड़ी में घुसा। हर एक के पास एक एक बिजली की बत्ती थी। नील पीछे खड़ा खड़ा यह मन देख रहा था। ज़बर्दस्त जानवर शिकार को उठाकर लिये जा रहा था। पीछे डेरिक दौड़ रहा था। दौड़ते दौड़ते पिस्तौल से निशाना मार रहा था। गोली दागने में खतरा था, कहीं उसके भाई के गोली लग गई तो? पफ़ाफ़फ़

घातचीत

गिल्बर्ट ने कड़ुई हँसी हँसकर कहा—“मैं ? मैं तेरे साथ चलूँगी, तू सोचता है ?”

मैं हँसा । मैंने कहा—“तुझे तो अफ्रीका की यात्रा का सवर्णन करना ही चाहिए ।”

उसने हड़ता के साथ कहा—“मैं तेरे साथ आना न चाहती ।”

“तुझे आना ही पड़ेगा ।”

“क्यों ?”

“क्योंकि तू आना चाहती है, छुटूँवर ।”

“गिल्बर्ट हँसकर वाली—“अच्छा तो फिर मोटर मैं हँकाँगी

कहानी

जेम्स काथरो की ओर उड़ा और रात से पहले डॉक्टर साथ आ पहुँचा । डॉक्टर ने रोगी की परीक्षा की, धाक दे और मिर हिलाया ।

उमने बीमे मे कहा—“आशा है, बहुत थोड़ी ।”

हेल्गा की ओर देखकर फिर कहा—“सारा दारोम तुम्हारी मेवा पर है ।”

डोनल्ड ने नम्रतापूर्वक मिर झुकाया ।

लडके अभी तक सन्निपात की ही हालत में थे । डॉ अधिक्तर वो 'हेनेरो' की पाठशाला के सम्बन्ध में बड़बड़

आ, एक बार तो यह चिन्नाकर पुकार उठा—“चला जा सिंह !
यह स्वतंत्र शाला है ।”

डोनल्ड ‘हैरोगेट’ बाने अपने घर की याद करके कलपता
था । उसक दिल में कुछ यह खयाल था कि कोई फाउण्टेनपेन
घना के लिए उसके पिता की मोटरकार चुरा ले गया है ।

इस बीच गिल्बर्ट और नील सहाग पर से उड़ते हुए जा रहे
थे, और मारा वक्त घात-धीत में फट रहा था ।

नील ने कहा—“वह नीचे टिम्यक्ट है ।”

गिल्बर्ट ने जवाब दिया—“नहीं, झूठी बात । तुम्हारे अधिक
में जानती हूँ ।”

“तो वह फौन सी जगह है ?”

“मैं नहीं जानती । लेकिन मैं यह वग्वुशी जानती हूँ कि जब
तू कहता है कि वहाँ फलों जगह है, तब वहाँ कोई जगह होती
ही नहीं ।”

वे टर्निस से जिनेवा तक भूमध्य रेखा पर से होकर गुजरे ।
इसके बाद वे बहुत ऊँचाई पर आत्म पर्वत पार करके आगे बढ़
गये । कैम्प छोड़ने के ठीक सत्रह घण्टे बाद वे हैरोगेट के पास
पतरे ।

उन्हे यह जानकर निराशा हुई कि डॉक्टर बॉइड दुष्टियों में
कहीं नाहर गये हैं और अपना पता ठिकाना किसी को नहीं बता
गये । लौटने के सिवा दूसरा उपाय न था । लेकिन नील की
इच्छा हुई कि ज़रा घर—स्कॉटलैण्ड—तक चला जाऊँ, वस एक

घण्टे के अन्दर वे 'फोरार' पहुँचे । उसने अपने परिवारवालों के साथ गिल्बर्ट का परिचय कराया और गिल्बर्ट को वहाँ बड़ा मजा आया ।

वातचीत

गिल्बर्ट ने कहा— 'छि, तेरा घर तो बहुत ही खराब है । गरीब आदमी ।'

मैंने कहा— "गरीब, लेकिन ईमानदार ।"

गिल्बर्ट बोली— "मैं तेरा घर देखना ही नहीं चाहती थी । फिर जेम्स की ओर देखकर वह कहने लगी— "यह खुद जय छोटा और आवारा लड़का था, तब जहाँ-जहाँ खेला था, वह सब इसने मुझे बताया, मानो मुझे उन बातों से बड़ी दिलचस्पी हो । और देख तो सही, अपनी शाला की इसे कितनी चिन्ता है ? जय यहाँ डेरिक और टोनल्ड अन्तिम घड़ियाँ गिन रहे हैं, आप इस तरह घर जाते हैं मानो छुट्टियों में जा रहे हों । देख तो सही, कैसे शिक्षक हैं ! बाहरी स्वतंत्र शाला, बाहरी ।"

टोनल्ड ने कहा— "गिल्बर्ट, चुप, मैं नीरोग हुआ या नहीं ?"

कहानी

जब वे चार दिन के बाद वापस आये तब—

वातचीत

गिल्बर्ट ने कहा— "देखा, महाशय जी सारा समय मौज करते हुए घर पर पड़े रहे ।"

कहानी

चार दिन के बाद जब वे वापस आये—

लेकिन, यहाँ यह बताना जरूरी है कि इतनी देर क्यों लगी ?
कॉटलैण्ड में तो सिर्फ दो ही घण्टे रहे । बाद में वहाँ से उड़े ।
न्होंने हॉलैण्ड, साजबर्ग, रोम और त्रिपोली के रास्ते कायरों
चने का निश्चय किया था ।

गिल्बर्ट ने कहा—“मैं रास्ते में वास्तिफ हूँ ।”

नील ने कुछ नई पुस्तकें खरीदी थीं । वह उन्हें पढ़ने में इतना
मीन हो गया कि इस तरफ तनिक भी ध्यान न दे सका कि
किस दिशा में उड़ रहे हैं । कुछ घण्टों बाद उसने नीचे देखा तो
मुद्र लहरा रहा था ।

उसने कहा—“अरे ! हम कहाँ हैं ?”

गिल्बर्ट बोली—“भूमध्य सागर पार कर रहे हैं ।”

वह फिर पुस्तक पढ़ने लगा । एक घण्टा और बीत गया ।
उने सिर उठाकर कहा—“ठहर ! हम इस भूमध्य को कभी
भी कर सकेंगे ?”

गिल्बर्ट ने जवाब न दिया ।

नील को शक हुआ कि कुछ गड़बड़ हुई है । नील ने कहा—
“नीचे एक स्टीमर दिखाई पड़ता है । चल, वायरलेस करें ।”
उने ‘ऑपरेटस’ के पास जाकर वायरलेस किया—“शुभया
आइयेगा, हम कहाँ हैं ?”

स्टीमर से जवाब मिला—“न्यूयॉर्क से एक दिन की दूरी पर ।

नील ने गिल्वर्ट को उसकी भूल समझाई ।

गिल्वर्ट ने कहा—“परवाह नहीं, पृथ्वी गोल है । हम सही सलामत अफ्रिका पहुँचेंगे ।”

फिर भी नील न हाँकने का चक्का खुद धामने का आग्रह किया । गिल्वर्ट गुस्सा हो गई, लेकिन वह केवल पनायती वा । क्योंकि पहुँचने के बाद दूसरे दिन गिल्वर्ट जेफ्रे से कह रही थी—नील को क्या खबर कि यह तो मैंने जानबूझकर किया था । क्या नील सूर्य नहीं है ? जब उसे मालूम हुआ, कि हम अमेरिका के पास हैं, तब उसका मुँह न देखने लायक था ।”

पहले डेरिक को होश आया । उसे कमर के जखम के कारण खूब तकलीफ सहनी पड़ी । डोनल्ड भी बीरे-बीरे चगा हुआ । एक परघाडे में तो दोनों इतने तन्दुरुस्त हो गये थे कि शाम को हल्के सूर्य प्रकाश में बाहर बैठ सकते थे ।

बातचीत

डेरिक ने कहा—“कहानी का अन्त तो फूस के समान रहा । हम फिर दूसरे सिंह का शिकार करने न गये ?”

मैंने कहा—“नहीं ।”

जेफ्रे ने कहा—“मैं अब अधिक सिंह देखना नहीं चाहता । अब मैं मनुष्य भक्तियों को देखना चाहता हूँ ।”

गिल्वर्ट बोली—“क्या, मनुष्यभक्षी ? वाह !” फिर उसने हेल्गा से पूछा—“अच्छा बता, मनुष्यभक्षी क्या होता है ?”
हेल्गा ने कहा—“मैं मनुष्यभक्षियों से मिलूंगी।” वह उत्साह से नाचने लगी।

प्रकरण—५

सिंह के शिखर के घाट साहसी यात्रियों ने सोचा—“अब क्या करेंगे ?”

जेम्स ने कहा—“अब तक तो खून और अजब मजा रहा।”

डेरिक ने कहा—“ठीक कहते हो, लेकिन जानते हो, इसका कारण क्या है ? अब तक हमारे ज्ञान मुट्ठी में थी, लेकिन अब इसमें मजा न रहा, क्योंकि—” गिल्वर्ट और हेल्गा को चिढ़ाते हुए वह आगे कहने लगा—“क्योंकि इसमें कोई खतरा ही नहीं। ‘बुलेट प्रूफ’ कार में बैठे बैठे तो सब धहादुर बन सकते हैं।”

गिल्वर्ट ने कहा—“लुटेरों क हाथों कौन कौन हुआ था ? तुम से अधिक जोखिम तो मैंने उठाये हैं।”

नील बोला—“अपने राम की तो कार के अन्दर रहना पसन्द है।”

पिन्नेपट की भी यही राय थी। लेकिन मण्डली के बाल सदस्यों की यह राय रही कि कोई ऐसा साहस का काम करना चाहिए कि जिसमें खतरों का सामना करना पड़े।

डोनल्ड ने कहा—“चलो सभा करें।”

और वही वाक्तावदा मीटिंग शुरू हुई।

डेरिक ने कहा—“मैं प्रस्ताव करता हूँ कि हम कार को कहीं रख दे और पैदल चलकर काँगो के मनुष्यभक्षी जगलियों को देखने जाँय।”

नील ने कहा—“मजूर। लेकिन पिक्नैफ्ट और मैं किसी सुरक्षित स्थान में कार के साथ रहेंगे और छः सात हस्तों के बाट जगलियों के राजा की खोपड़ियों के आसपास गिखरी हुई हजारों खोपड़ियों में से तुम्हारी खोपड़ियों की खोज करने को आवेंगे।

पिक्नैफ्ट ने उत्साहपूर्वक कहा—“बाहवाह ! बाहवाह !”

गिल्बर्ट ने स्मीकर कहा—“देख लो, इन दो कायरों को।”

नील बोला—“शायद पिक्नैफ्ट कायर है। अगर ईश्वर ने मुझे ऐसा बनाया होता कि जगली लोगों की तीन तीन टोलियों के उत्सव भोजन के लिए मैं अकेला काफी होता, तो शायद मैं भी जाते हुए डरता। लेकिन ऐसे नरककाल शरीर को लेकर कौन जाय ? मैं जानता ही हूँ कि वे लोग मुझे कभी न खाँयेंगे।”

डेरिक कुछ सोच में पड़ा था। उसने एकाएक कहा—“हूँ ठीक सेम्मी। मैं पादरी बनकर जाऊँगा। नील, याद है ? जब मैं तुम्हारी शाला में आया था, तब तुमने मुझसे पूछा था कि पढ़कर क्या करोगे और मैंने जवाब दिया था कि पादरी बनकर अफ्रीका जाऊँगा।

नील ने कहा—“बहुत ठीक । तब तो हम सब वहाँ चलेगे । लेकिन निहत्थे होकर ।”

सब ने गडगड मचाकर इसका विरोध किया । साश्चर्य भाव से नील बोला—“लेकिन डेरिक, हम एक हाथ में इजील और दूसरे में छ नली पिस्तौल लेकर जायें, यह तो उचित नहीं ।”

डेरिक सोचने लगा । वह बोला—“मैं हाथ में इजील रखूँगा और तुम सब मेरे साथ बन्दूक और घम लेकर चलना ।”

जेम्स ने उत्साह के साथ कहा—“डेरिक, अपनी पिस्तौल तो तु अपनी पिछली जेब में रख सकेगा ।”

पिम्पेट ने ज़रा मजाक करते हुए कहा—“पादरी और थोड़ा भी ।”

डेरिक ने गम्भीर भाव से कहा—“कुछ विचार के बाद मैं नतय किया है कि मैं बिना हथियार के ही जाऊँगा । लिचिगस्टन ने एक भी आदमी को न मारा था ।”

नील ने कहा—“बहुत ठीक, तो चलो । नज़रों में काँगो के उत्तर में यह पर्यंत श्रेणी दिखाई पड़ती है । अपनी कारों को रखने के लिए यहाँ एकान्त गुफा तलाशें । चलो, अन्दर आ जाओ ।”

घातचीत

गिल्बर्ट ने मुँह निगाड़कर कहा—“कहानी में आप ही सब दुफ्त करते हैं । मुझे यह कहानी वाहियात मालूम पड़ती है, और

डेरिक ने कहा—“कार को इस प्रकार छोड़ जाना उचित नहीं मालूम होता । कोई भले जगली लोग आ निम्नले और कार को देखकर हाथ लगा बैठें, तो बेचारे बेमौत मर जायें ।”

हेल्गा ने कहा—“हाँ, मच तो है । हम गुफा का मुँह बन्द कर दें ।”

इसके बाद उन्होंने बड़े-बड़े पत्थर इकट्ठा करके मुँह के पास जमाये और गुफा बन्द की, लेकिन पिक्रैफ्ट तो अन्दर ही रह गया था । अफ्रिका की गर्म-गर्म हवा ने उसे वहीं सुला दिया था । दुधारा गुफा को खोले बिना छुटकारा न था ।

पिक्रैफ्ट को बाहर निकालकर और कारों को सुरक्षित रूप से अन्दर छिपाकर वे जान को हवेली में लिये चल पड़े ।

कम्पास के होशियार जानकार के रूप में जेफ्रे आगे आगे चला । वे फाँगो के उष्ण कटिबन्धजाल प्रदेश की हरियाली में से होकर आगे जा रहे थे ।

तोते और दूसरे रंग विरगे पक्षियों जैसी इधर-उधर उड़ रहे थे ।

बातचीत

गिल्वर्ट ने विष्कार के साथ कहा—“तुम्हें भूगोल में तो शून्य आती है । तुम्हें पक्षियों के पूरे नाम भी याद नहीं हैं ।”

जेफ्रे ने तिनकर कहा—“हाँ हाँ, गिल्वर्ट, तू मर गई है यह बहुत ही अच्छी बात है । तू बड़ी आक्रामक है ।”

गिल्वर्ट ने उसे मुँह चिढ़ाया ।

कहानी

सैरुडों यन्दर पेडों पर किलकिला रहे थे। कभी कभी रास्ते में एकाध बड़ा अन्तर भी जाते हुए मिल जाता। दिन होने के कारण एके भी शिकारी जानकर दिमाग न पड़ता था, लेकिन अंधेरा हुआ और समझे पैर काँपने लगे।

नील ने घबड़ाकर कहा—“हमें अलाव जलाना चाहिए, और हम में से किसी को सारी रात पहरा भी देना होगा। डेरिक मिशनरी के बदले अगर तेरी महत्वाकांक्षा झाड़वर बनने की होती, तो बहुत अन्त्रा था। मेरी तो छाती धडक रही है।”

डेरिक ने कहा—“हिम्मत रखो। पहले दो घण्टे मैं पहरा दूँगा।”

ऋतपट सूखी लकड़ी चुनी गई और थोड़ी देर में तो जंगल की घाटी में गरम अलाव सुलगने लगा। हिंस्र पशुओं की गर्जना सारी रात सुनाई दी और पहली रात तो किसी को नींद ही नहीं आ सकी। घाज घक्त दोहरी बस्तियों (सिंह या बाघ की दो आँखों) पर पहरेदार की नजर पड़ती। एक बार तो एक हाथी पेड़ तोड़ता-भरोड़ता नजदीक आ पहुँचा, लेकिन आग देखकर मारे डर के चिंघाड़ता हुआ ऐसे भाग गया, मानो सारे जंगल को रौंद डालेगा। सचमुच रात बड़ी भयावनी थी और हर एक अपने मन में कह रहा था कि इसकी अपेक्षा तो फार में रहना ठीक था। पौ फटी और वे लोग सपने का नास्ता तैयार करने लगे।

डेरिक ने कहा—“जेफ़े चल, हम कुछ शिकार खेल आयें।”

जेफ़े उझल पडा और बोला—“अरेरे ! हम तो अपने
रिवनें और मोती वगैरह भव गाडी हो में छोड आये हैं।”

पिक्रैफ्ट ने लापरवाही के साथ कहा—“तुम तो भूल गये थे
पर जब तुम मुझे गुफा के अन्दर से बाहर निकाल रहे थे तब
रबर का मोजा पहनकर वह पोटली मैंने कार में से ले ली थी
तो, यह रही।”

उन्होंने पोटली खोली और सुन्दर चमकीले, रंग विरंगे गहनों
को देखकर सासागग की आँखें वहीं ठिठक गईं।

“आदमखुर राजा अच्छा-अच्छा माल लानेवाला आदमी
को खाता नई। अम पहले जाता और खुर राजा से कहता।
गोरे लोग, अच्छी रंगीन चीजें। गोरे लोग दोस्त विरादर।”

हेल्गा ने नील के कान में कहा—“क्या तुम समझने हो कि
सचमुच ही यह भला आदमी है ?”

नील ने जवाब दिया—“अवश्य ही यह मजे का आदमी है,
और हमें यह कोई नुकसान तो पहुँचा ही नहीं सकता।”

सासागग ने लडकों को गैजेल जाति के हरिणों का पीछा
करना सिखाया, जगली जीवन के विषय में उन्हें बहुतेरी बातें
बताई, और साथ ही पागल हाथी के लक्षण और उसे पहचानने
का तरीका भी बताया।

सासागग ने कहा—“हाथी के कान यों-यों हिलें, तुम मरे।”
उसने हाथ हिलाकर बताया।

उन्होंने दो दिन तक यात्रा चालू रखी। वे एक खुले मैदान

पहुँचे । यहाँ होनल्ड ने सबको कोई चीज दिखाई ।

डेरिक ने चिल्लाकर रुढ़ा—“आहा ! यह तो चींटियों की बड़ी बड़ी सेना है ।”

सासाग ने सन्तुष में कहा—“आदमखुर आदमी के तौपड़े ।”

गोरों ने सुना, डरे और ठिठके ।

सासाग ने कहा—“डरो नई, डरो नई, आदमखुर दिन को मारता नई । रात को मार खाता । अम खुर राजा के पास जाता और कहता, गौरा लोग आया ।”

सासाग ने कहा कि वह पहले खुद अकेला आगे जायगा और गुबिया को सबके आने की खबर देगा । उसने सबको जंगल की झाड़ी में आराम करने और राह देखने को कहा । दो घण्टे में वह वापस आया । आकर कहा—“आदमखुर राजा कहता, अम घौल लोग चाहता ।”

पिक्रैफ्ट ने कहा—“हो सकता है । कैसे चाहता है, तले हुए या भुने हुए ?”

सासाग बोला—“अम ने आदमखुर राजा से कहा, घौले लोग, रूत-रूत काँच काँच । घौले लोग, दब्वाई । राजा जवाब दिया, घौले लोग डरे नई । अच्छे अच्छे दिन काले लोग आदमी खाते ।”

गोरे सशंक भाव से एक दूसरे को देखते रहे ।

हेल्गा बोली—“मैं वापस कार में जाना चाहती हूँ ।”

जेफ्रे उठल पडा और बोला—“अरेरे ! हम तो अपनी रिश्ते और मोती वगैरह मन गाढी ही में छोड आये हैं।”

पिक्रैफ्ट ने लापरवाही के साथ कहा—“तुम तो भूल गये थे, पर जब तुम मुझे गुफा के अन्दर से बाहर निकाल रहे थे तब खबर का मोजा पहनकर वह पोटली मेने कार में से ले ली थी। लो, यह रही।”

उन्होंने पोटली खोली और सुन्दर चमकीले, रंग-गिरंगे गहनों को देखकर सासागग की आँखें वहीं ठिठक गईं।

“आदमखुर राजा अच्छा-अच्छा माल लानेवाला आदमी को खाता नई। अम पहले जाता और खुर राजा से कहता। गोरे लोग, अच्छी रंगीन चीजें। गोरे लोग दोस्त निरादर।”

हेलगा ने नील के कान में कहा—“क्या तुम समझने हो कि सचमुच ही यह भला आदमी है ?”

नील ने जवाब दिया—“अवश्य ही यह मजे का आदमी है, और हमें यह कोई नुकसान तो पहुँचा ही नहीं सकता।”

सासागग ने लडकों को गैजेल जाति के हरियों का पीछा करना सिखाया, जगली जीवन के विषय में उन्हें बहुतेरी बातें बताई, और साथ ही पागल हाथी के लक्षण और उसे पहचानने का तरीका भी बताया।

सासागग ने कहा—“हाथी के कान यों यों हिलें, तुम मरे।” उसने हाथ हिलाकर बताया।

उन्होंने दो दिन तक यात्रा चालू रखी। वे एक खुले मैदान

में पहुँचे । वहाँ डोनल्ड ने सबको कोई चीज दिखाई ।

डेरिऊ ने चिल्लाकर कहा—“आहा ! यह तो चींटियों की घड़ी मारी सेना है ।”

सासागग ने संक्षेप में कहा—“आदमखुर आदमी के झोपड़े ।”

गोरों ने सुना, डरे और ठिठके ।

सासागग ने कहा—“डरो नई, डरो नई, आदमखुर दिन को मारता नई । रात को मार खाता । अम खुर राजा के पास जाता और कहता, गौरा लोग आया ।”

सासागग ने कहा कि वह पहले खुद अकेला आगे जायगा और सुनिया को सबके आने की खबर देगा । उसने सबको जंगल की छाया में आराम करने और राह देखने को कहा । दो घण्टे में वह वापस आया । आकर कहा—“आदमखुर राजा पहता, अम धौल लोग चाहता ।”

पिक्लेट ने कहा—“हो सकता है । कैसे चाहता है, तले हुए या भुने हुए ?”

सासागग बोला—“अम ने आदमखुर राजा से कहा, धौले लोग, खून-खून काँच काँच । धौले लोग, दब्बाई । राजा जवाब दिया, धौले लोग डरे नई । अच्छे अच्छे दिन काले लोग आदमी खाते ।”

गौर सशंक भाव से एक दूसरे को देखते रहे ।

हेल्गा बोली—“मैं वापस कार में जाना चाहती हूँ ।”

डोनल्ड ने सिसकते हुए कहा—“मैं भी ।”

नील डरते-डरते बोला—“उनका अच्छा दिन क्या था है ?”

मासागग ने जवाब दिया—“आदमखुर कहा नहीं । वो देखो, भालावाला राजा आता ।” वो कहकर उसने जंगल भालेवालों की टोली की ओर इशारा किया । वे नग धड़ग धड़ग उनके पास चौड़े फलवाले भाले के ओर गाय के चमड़े की टाले थी । यह दृश्य देखकर गोरों यात्रियों के चेहरे पीले पड़ गये ।

डेरिक ने कहा—“मैं डरता नहीं ।” पर उसकी आवाज में फँफँपी थी—“इन मूर्तिपूजकों का मैं सच्चे धर्म का उपदेश करूँगा ।”

जगली और नजदीक आकर रुक गये । उनका मुखिया डूँग बोला, और सब ने अपनी ज़बान बाहर निकाली । डॉनल्ड ने सोचा, ये कुचेष्टा कर रहे हैं, इसलिए जवाब में उसने भी जीमिंगार्ड और ऊपर से नाक पर अपनी अँगुली रखी । जगली लोगों की सलाह का इससे जवाब मिल गया और जगलिया ने सोचा कि यही इस मण्डली का मुखिया है । जंगलिया के मुखिया ने डॉनल्ड के घूट पर थूका । डॉनल्ड ने उसकी धार में नृप दिया । मुखिया हा हा हा करके जोरा से हँसा और बोला—“पोकाहीना ।”

मासागग ने बताया कि पोकाहीना का मतलब है, अरुदा भूका ।

तब से डोनल्ड को सब जगली अन्ध्रा यूकनेज़ल के नाम से पहचानने और ज्ञानने लगे ।

जगलियों के सरदार ने गोरे मेहमानों के आदर-सत्कार का सुन्दर प्रबन्ध किया था । उन्हें त्रिफाजत के साथ लाने के लिए सिपाहियों की एक गारद अगवानी को भेजी थी । सिपाहियों की दो कतारों के बीच यात्री चले जा रहे थे । गारद के जमादार के साथ मासागग गधे हाँकता आ रहा था ।

वे गाँव के निकट आये ।

उनके घर देखकर नील ने कहा—“जाग पड़ता है, ये भाप डियीं गारे और पत्थर की बनाई हुई हैं ।”

हेल्गा ने पाईनॉक्यूलर्स चढ़ाये, मोपडो को देखते ही वह भयभीत होकर ठिठक गई । उसने कहा—“अरे यह पत्थर नहीं हैं, ये तो रोपडियाँ हैं । ओ माँ रे !”

मासागग ने कहा—“छि । रोपडी खूब खून । बड़ी-बड़ी लड़ाई, भतेरे घस्म पैले बड़ी लड़ाई । मौत काले आदमी मरे । गून-गून, बहुत खूब, खाना पीना । हा हा हा ।” कहकर वह मिलमिला पड़ा ।

वे गाँव में घुसे और औरते और नचे उन्हें देखने को आये । एक घड़े से मोपडे की ओर वे ले जाये गये । हमने चारा और रोपडियों का एक किला था ।

जेफ़े ने कहा—“यह घर सरदार का होना चाहिए ।”

जेफ़े ने आदमगोर लोगों के बारे में अनक पुस्तकें पढ़ी थी ।

भोपडी क दरवाजे के पास आकर जुलूम रुक गया।
ऊँचे आदमी भोपडी क अन्दर से निकले। पिक्ले ने अप
टाप ऊँचा करके उन्हें सलाम किया।

सासागग ने कान में कहा—‘ये मुखिया नहीं। ये गानेवाला
वे नीचे बैठे और नकारे और ढाल बजाने लगे। आध घ
तक वे बजाते रहे।

अधीर होकर डेरिफ न पूछा—“अन हम किसकी बात ज
रहे हैं ?”

सासागग ने कहा—“बडा मुखिया भट मिलता नहीं। पह
गाना, गाना।”

आखिर ढोल-ताशे बन्द हुए। सिपाहियों के जमादार ने हु
दिया और सिपाहियों ने जमीन पर लेटकर घरती से अपने सि
छुलाये। दरवाजे के सामने से धीरे धीरे चटाई का पर्दा हटा अ
सबके सामने सरदार दिग्याई पडा। सचमुच, वह देखने में ब
भयंकर था। वह छ फीट ऊँचा और पिक्ले से तीन गु
मोटा था।

वह लगातार गुनगुनाने और धोलने लगा। वह रह रह न
रुकता जाता था और सामागग तरजुमा करता जाता था।

“वाली साकी इन्सीन दु आली इन्ही दुलोस्टो।” उसने
कहा—“इयारी फहुटशो टिल इनी टारी सोको टीम घोको अ
फहोरो। दुगा सक ओके सीरोमा घोस्को दोन्सॉक दु बिलस्टा।
अफाला सीग साकी फहुटशो वालि सॉन्डोइन दू, घो। ”

दस मिनट तक वह बराबर धौलता रहा ।

सासाग ने कहा—“यह सलाम हुई ।”

फिर सरदार का भाषण पूरे पचहत्तर मिनट तक होता रहा ।

सासाग ने उमका जो उत्था किया था, वह सत्तेप में इस
कार था—

“सलाम, इसमें पहले भने गोरे लोगो को देखा नहीं था ।
अपना स्वागत करता हूँ । कुछ उपहार लाये हैं ? यह छोटी
गोरी मुझसे क्या करेगी ?”

सासाग द्वारा उन्होंने उत्तर दिया—“हम गाँव की सुन्दर
जायद देकर मुग्न हुए हैं । हमारी यात्रा में जो-जो लोग हमें
ले, उनमें सरदार सत्रमे खूबसूरत हैं । छोटी गोरी छोरुनी को
कहते हुए हार्दिक खेद होता है कि ‘यह सरदार मादब से
ह नहीं कर सन्गी, क्योंकि यह ‘बड़े थूक’ को व्याह चुकी है ।”

टोनल्ड के साथ सासाग की खामी दोस्ती हो गई थी । वह
कि कहीं सरदार टोनल्ड को गाना जाय और रेलगा का
पा सुगतना पड़े । इसलिए उसने अपनी ओर न कुछ मिला-
कहा—“बड़ा थूक बहुत भयंकर आदमी है । उसके थूक में
भरा है । कोई उसे सतायेगा तो वह थूकेगा और उसके थूक
राक्षस पैदा होंगे । वे राक्षस सरदार के सिपाहिया, डोरा और
तो को मार टालेंगे ।”

गोरो को इस रहस्य का क्या पता ? परन्तु सबको टोनल्ड
ओर भयभीत दृष्टि में ताकते हुए देखकर गारों को आश्चर्य

सरदार इस घुरी तरह से डर गया था कि अगर डेरिक यह कहला देता कि कल से हम गाँव को खाना शुरू करेंगे, तो उसके लिए भी वह इजाजत दे देता ।

सम्माननीय मेहमानों के नाते वे खास कोपडी में ठहराये गये थे ।

पिक्नेस्ट बोला—“मेरी तो यह राय है कि हमें मारी रात घारी-घारी से पहरा देना चाहिये । रात को अगर आराम से सो गये तो एकाएक जागन पर हम अपने को गाँव के चौक में दते हुए कम बड़े डेग में उललते पायेगे ।”

यह तय हुआ कि हर एक आदमी घारी-घारी से आधा आधा घण्टा सारी रात पहरा दे ।

लेकिन डेरिक ने कहा—“इसकी कोई जरूरत नहीं है । अगर हम दरवाज के सामने उन्दूकें रखकर सो जायें, तो किसी की मजाल नहीं कि अन्दर घुसने की हिम्मत करे ।

आखिर सबने ऐसा ही किया । पर पहली रात तो नींद किसी के पास फटकी तक नहीं ।

सबरे सरदार ने अपने कामदार को भेजा और पुछवाया—“प्रमोपदेश का काम कब आरम्भ होगा ?”

डेरिक ने दम बजे का समय दिया और दम बजे मैदान गाँववालों से भर गया । एक बड़ा-सा गोल घेग घनाकर सब बैठे थे ।

रापड़िया का एक चौतरा बनाया गया था । एक हाथ में घाई

उत्त लेजर डेरिक उसपर चढ़ा। उसने गोरे लोगों से प्रभु की, स्वर्ग की, और नर्क की तमाम बातें कही। प्रार्थना समझकर उमने पाइनल का सौगाँ गीत गा डाला। जब यह सब समाप्त हुआ, तो एक आदमी चौतरे के नजदीक आया और सिर झुकाकर बोला—“गोरे लड़के, मैं तुमसे पूछता हूँ, तुम्हारे देश में लड़ाईयाँ होती हैं ?”

डेरिक ने कहा—‘हाँ।’

“आदमी चोरी करते हैं ? आदमी एक दूसरे की हत्या करते हैं ? धोखा देते हैं ? परस्पर मार काट करते हैं ? झूठ बोलते हैं ?”

डेरिक का क्रमूल करना पड़ा कि उसके देश में लोग चोरी करते हैं, झूठ बोलते हैं, और एक दूसरे की हत्या भी कर डालते हैं।

“उँह” बूढ़े आदमी ने कहा—“तब तो हमारे देव तुम्हारे देवों की तरह ही अच्छे हैं।” इतना कहकर बूढ़ा चला गया।

इसके बाद सामागा ने डेरिक से कहा कि तुम्हारी बातों का लोगों पर बहुत असर पड़ा है। डेरिक ने नम्रता प्रकट की।

सामागा ने कहा—“पर बूढ़ा आदमी, वह जो बोला, बूढ़ा पुजारी यही हुक्मतवाला, बुद्धा, गोरे छोकरो को मारना चाहता।”

रोज सुबह दस बजे सभायें होतीं। मभा में बूढ़ा पुजारी बोला भी उपस्थित होता और भोंडा सा मुँह बनाकर तड़ा रहता।

पिक्रैफ्ट ने कहा—“उस घूटे जगली का मुँह मुझे तारा सुहाता । कल इनकी बड़ी धार्मिक दावत है । सासागग मुझसे कहता था । और मेरा ख्याल है कि वे भोजन में हमें उड़ानेवाले हैं ।

नील बोला—“हमसे से कोई अकेला न घूमे ।”

डेरिक ने आपत्ति की—“लिविंग्स्टन कभी डरता न था, तो मैं क्यों डरूँ ? मैं चाइपल लेकर घूमूँगा, तो किसकी छाती है कि मुझपर हाथ डाले ?”

जेफ्रे ने कहा—“तेरा सिर घूम गया है । सबरे रोज औरतें तुझे निहाय करती हैं, सो फूल के कुप्पा हुआ जा रहा है । कुछ ही क्यों न हो, हम तो अकेले नहीं निकलेगे ।”

इस बात-चीत के दो घण्टे बाद वे खाने बैठे । डेरिक उस समय उपस्थित नहीं था ।

हेल्गा बोली—“मैंने उसे हड्डियों के ढेर पर चाइपल पड़ते देखा था ।”

आध घण्टा बीत गया, और एक घण्टा बीता ।

नील ने कहा—“कुछ दाल में फाला मालूम पड़ता है । सासागग, जरा इधर आ । जाकर देख तो, डेरिक कहाँ है ।”

पाँच मिनट में तो सासागग हाँफता-हाँपता वापस आया ।

“एक ओरत । चीलाडूँक बातें । चीला खिल खिल हँसना, और टूँष खिल खिल । चीलाडूँक चले जाते ।”

पिक्रैफ्ट ने मुस्कराकर कहा—“आधी रात को दावत शुरू होने

वाली है। नौजवानों, बन्दूकें भर लो। शायद हम उसे उचा सकें।
डिगाई न करो। एक एक पल कीमती है। सासागग, तू जानता
है, दावत के दिन ये लोग बलि कहीं चढ़ाते हैं ?”

सासागग ने कहा—“जानता।”

पित्रैपद बोला—“जहुत ठीक। चल, उठा ये डेरिक के हथि-
पार। हमें वहाँ तक ने चल।”

गाँव के रास्ते सासागग के पीछे-पीछे वे एक फतार में जंगल
की ओर चले। भयकर शान्ति थी।

एकाएक डोनल्ड रुका। उसने कहा—“मेरे घूट पर कुछ
मालूम पड़ता है, जैसे पतले गुड़ पर पैर रख रहा होऊँ।”

नील ने अपनी धत्ती जलाई और वह पीछे को हटा। डोनल्ड
के घूट पर बड़ी-बड़ी काली चींटियों ने घाया बोल दिया था।

भयभीत होकर जेफ्रे चिल्ला उठा—“मैं जानता हूँ। मैंने इस
सम्बन्ध में पढ़ा है। यह जंगली लोग आदमी को जमीन में गाड़
वते हैं और उनके गले में शहद डेंडेलते हैं। फिर चींटियों के
जिल तक शहद की लम्बी बार बना देते हैं। अरे, बेचारा डेरिक।
यह कैसी भयावही मौत !”

वे आगे बढ़े। धार पहाड़ी पर जाती थी। फिर वे एक खुली
घाटी के नजदीक पहुँचे। उस समय चन्द्रोदय हो रहा था। वे
एकएक वहाँ थम गये। उस जगह उन्होंने एक भयंकर दृश्य
देखा। वे भयभीत हो गये। पुजारी गोल चक्र में खड़े थे और
कुछ पढ़ रहे थे।

“वन के देवों ने हमारे शत्रु को हमें सौंपा है। इस नास्तिक को हम खावेगे नही। यह नापाक है, नालायक है। पेट में उसका मांस जाने ने हमारे मांस में इसके भूटे देव घुस जायेंगे। ये बड़ी चीटियाँ, ये मकोड़े, इस सारा का सारा ग्रा जायें। ऐ चीटियो ! बीमे बीमे और अच्छी तरह अपना काम करना।”

पित्रैष्ट ने बीरे से कहा—“बड़ाका न करो। इनके भुण्ड में घुस चलो। निहत्थे आदमियों को मारना उचित नहीं।”

वे आगे गये। बड़ा पुजारी चिल्लाया और हर एक पुजारा अपना अपना छुरा तानकर गड़ा हो गया।

बड़े पुजारी ने कहा—“ठहरा, पहले हम कुछ बातें कर ले।”

सामागग बोला—“बातचीत बातचीत दगा। डूक होइयाँ। पुजारों, लडका लोटाता ? नहीं तो मारता।”

पुजारी—“ठो गँमी हँसते हुए बोला—“किसकी हिम्मत है, जो पुजारी को मार सके ? देव उसकी रक्षा करते हैं।”

जेफ़े ने कहा—“अच्छा, तो भून दो इनको।”

डोनटड चिल्लाया—“पहले हमें खाली फायर करो।”

धुटुम धुटुम पाँच आनाजे हुईं।

जो जो पैर उमड़ गये। बड़े पुजारी के पीछे पीछे वे

और भागे। जमीन में गड़ी हुई लाश की ओर

। चीटियाँ लगभग उनके गुँद तक आ पहुँची थीं।

फूटे शब्दों में कहा “व व व चा।” और उसी
गया हो गया।



‘धीरिपों लगभग उसके मुँह तक आ पहुँची थीं ।

पत्नी से उन्होंने तब बाहर निदाता, नील ने उसे ब्राह्मण पिताई और घोड़ी देर में उसे फोसा थाया ।

सारी रात वे जगल जगल भट्टर । मौला खनरनाक था, उन्हें कोई मिला नहीं ।

यातचीत

मैंने कहा—“आज इत्या हा ।”

गिरपट बोली—“मदी कहानी । मज्जा स्था आये ?”

इत्या वाली—“तू इलम नहीं है, इमी ने जलती है, क्यों ?”

गिरपट ने कहा—“उँह, एमी चाहियात कदाती मे को

“वन के देवों ने हमारे शत्रु को हमें सौंपा है। इस नास्तिक को हम खावेंगे नहीं। यह नापाक है, नालायक है। पेट में इसका मास जाने ने हमारे मास में इसके भूते देव घुम जायेंगे। ये बड़ी चींटियाँ, ये मकोड़े, इसे मारा का सारा खा जायें। ऐ चींटियो ! धीमे-धीमे और अच्छी तरह अपना काम करना।”

विक्त्रैस्ट ने धीरे से कहा—“घडाका न करो। इनके भुण्ड में घुम चलो। निहत्थे आदमियों को मारना उचित नहीं।”

वे आगे बढ़े। बड़ा पुजारी चिल्लाया और हर एक पुजारी अपना अपना छुरा तानकर गढ़ा हो गया।

बड़े पुजारी ने कहा—“ठहरो, पहले हम कुछ बातें कर लें।”

सासागग बोला—“बातचीत बातचीत दगा। डूक होइयाँ। पुजारी, लडका लोटाता ? नहीं तो मागवा।”

पुजारी कठोर हँसी हँसते हुए बोला—“किसकी हिम्मत है, जो पुजारी को मार सके ? देव उसकी रक्षा करते हैं।”

जेफ्रो ने कहा—“अच्छा, तो भून दो इनको।”

डोनटड चिल्लाया—“पहले हवा में खाली फायर करो।”

धुट्टम् धुट्टम् पाँच आनाजे हुईं।

पुजारियों के पैर उखड़ गये। बड़े पुजारी के पीछे पीछे वे जंगल की ओर भागे। पानीन में गड़ी हुई लाश की ओर यह तोता बढ़े। चींटियाँ लगभग उसके मुँह तक आ पहुँची थीं। टेरिफ ने दूटे-फूटे शब्दों में कहा “व व व चा।” और उसी दम वह बेहोश हो गया।



‘धींधी’ लोग उसके मुँह तक आ पहुँची थीं ।

पानी से उन्होंने उसे बाहर निकाला, नीला ने उसे ब्राह्मी पिलाई और ओजी ढेर में उस होश आया ।

सारी रात वे जगल जगल भटन । मोन्ना खतरनाक था, पर उन्हें कोई मिला नहीं ।

बातचीत

मने कहा—“आज इतना हो ।”

गिल्बर्ट बोली—“सही कहानी । भज्जा क्या आवे ?”

हेन्गा बोली—“तू इसमें नहीं है, इसी से जलनी है, क्यों ?”

गिल्बर्ट ने कहा—“ऊँह, ऐसी चाहियत कहानी में कौन रहे ?”

मेरी ओर देखकर कहने लगी—“अच्छा हुआ, मैं मर गई। भूलना नहीं कि मैं मर चुकी हूँ। दुबारा मैं कहानी में न आ सकूँगी। तैने ही कहा है कि मैं मर गई हूँ। और अफ्रीका में आदमखोर आदमी ही नहीं हैं। कागा वेलजियम के अधीन है और उसमें जंगली लोग हैं नहीं। तू अपने डोनल्ड को झूठा भूगोल सिखाया कर।”

डेरिक बोला—“चुप भी रह। मैंने जिन लोगों को ईसाई बनाया था, वे मेरी मदद को क्यों नहीं आये ?”

“तैने उन्हें बदला ही नहीं था, मूर्ख। वे तो तेरे खूबमूरत चंहर पर लट्टू हो गये थे।”

जेफ़े ने कहा—“मुझे तो कहानी मूर्खतापूर्ण मालूम होती है। किसी की मौत तो आती ही नहीं। उन पुजारियों को हम मारते तो ज़रा लुफ़्त भी आता।”

डोनल्ड ने कहा—“मुझे वह बड़े थूकवाली बात मिलकुल पसन्द नहीं। तुम कहते थे कि मैं थूकूँ तो सन मर जायँ, पर मैंने तो किसी को मारा ही नहीं।”

हेल्गा बोली—“हाँ, और सब काम पिकैप्ट ही करता है। मैं नहीं समझती कि यह इतना होशियार निशानेबाज है।”

गिल्वर्ट ने कहा—“ठीक फाँती हा, और नील भी बहुत होशियार बनता है। कहानी में गुन धारदार होशियारी बताता है लेकिन हम जानते हैं कि यह कैसा महान् मूर्ख है ? क्यों ?”

प्रकरण—६

दस दिन तक तो वे जंगल में भटकेंगे । दसवें दिन साँक को वे अलाव मुलगाकर उसके चारों ओर बैठे थे । पिक्कैस्ट अपने बचपन की बातें कह रहा था और वे सुन रहे थे । पिक्कैस्ट ने बचपन में छोर भी चराये थे । माता का रंग कुछ ऐसा जमा कि डेरिक, जो पहरा दे रहा था, अपनी जगह छोड़कर बातें सुनने चला आया । एकएक पिक्कैस्ट रुका और सामने की ओर देखने लगा । उसके चेहरे पर भय था । सुननेवालों ने मुड़कर देखा कि क्या है ?

उन्हें सामने भयानकी सूरत-शकल के योद्धा गड़े थे ।

गोरों ने कुर्मी से अपनी राइफलें सम्हाल लीं ।

जेम्स ने सासागग से कहा—“इनसे कह, कि अगर एक भी भाला हम पर चलाया कि हम सब को माफ कर डालेंगे ।”

सासागग ने यह बात कह दी ।

एतना मुखिया भाले की नोक जमीन की ओर करते आगे बढ़ा । इसका मतलब यह था कि यह मुलह की बात चीत करना चाहता था ।

उमने कहा—“तुम लोग महान् गोरों महारानी के मुल्क में हो । इस मुल्क का यह कानून है कि जो भी गोरों लोग इस जमीन पर पैर रखें, औरन कल कर डाले जायें ।”

वे मौत से खेलनेवाले अचम्भे में आकर एक दूसरे को

ताकने लगे ।

पिन्नेफ्ट ने कहा—“बेवकूफ, अभी तक तेरा यह खयाल है कि महारानी विक्टोरिया जिन्दा हैं ?”

तेल्गा न पूछा—“यह तुम्हारी गोरी रानी है कौन ?”

उसने जवाब दिया—“शिलवरो । भली, सुन्दरी, सयागी शिलवरो ।”

वातचीत

जेफ्रे ने उससे ली ओर बोला—“यह तो गिल्वर्ट है ।”

गिल्वर्ट चिढ़ी । उसने आपत्ति की—“मैं तो मर चुकी हूँ । तुमने डेरिक की बात सुनी है न । वह कहता था कि मैं मर गई हूँ । अब मुझे फिर से जिन्दा नहीं ला सकते ।”

डेरिक ने कहा—“बेहूदी ! उसने क्या कहा, सो नहीं सुना ? गिलवेरा, सुन्दरी गिलवेरा, तू वहाँ आई कहाँ से ?”

कहानी

नील ने कहा—“हमें पता न था कि हम गैरकानूनी तौर से तुम्हारी भूमि में आ पहुँचे हैं । हम तुम्हारी इस रानी से मिलना भी नहीं चाहते । जरा मेहरबानी करके हमें सरहद का रास्ता बता दो । हम तुम्हारी हद से निकल जायेंगे ।”

जब सामागग ने इसका उल्था कह सुनाया तो उस बृद्ध आदमी ने सिर हिला दिया । उसने शान्ति में कहा—“मैं ता हुक्म का तायेदार हूँ । मुझे फरमान मिला है कि हमारे मुल्क में जो-जो गोरे लोग आवें, उन्हें मैं फल्ल कर डाला करूँ ।”

डेरिक ने कहा—“सासागग, इमे समझा दे कि हम यो मरना नहीं चाहते । और कइ दे, कि मिनटों मे हम सिपाहिया के इस जत्थे को जमींदोज कर सकते हैं ।”

लेकिन उस बूढ़े ने अमम्मति प्रकट की । वह बोला—“नामुम-कित है । तुम थोड़े हो, और हम बहुत हैं ।”

डेरिक बोला—“तो इस बूढ़े से कह, कि जरा मेरी ओर देखे ।” इतना कहकर डेरिक ने पेड़ की ‘कलगी’ पर बैठे हुए एक नन्हें बन्दर को तारकर फायर कर दिया । बेचारा बन्दर जमीन पर आ गिरा ।

यातचीत

गिलबर्ट घोली—“दरसा, कितनी झूठ ! कहता था न कि सब अलाय ताप रहे थे । अंधेरे में बन्दर को कैसे ताका ? ठीक म फहानी कहना आता भी है ?”

कहानी

सौभाग्य से जब डेरिक वापस कर रहा था, तब मन्नेरा हो चुका था । जगली सिपाही पिस्तौल के धड़क से भयभीत हो गये । वे समझ न सक कि बन्दर कैसा मर गया । ऐसा मालूम हुआ मानों वे इन्ही दस भाग खड़े होंगे । उनका बूढ़ा अगुआ थर थर काँप रहा था ।

एकान्त एक कहावर जगली झाड़ी से निकलकर सामने आया । वह फोड़ अमलनार मालूम पड़ता था । उस बूढ़े अगुआ ने सिर झुकाकर उसे सलाम किया । बूढ़ा बड़ी देर तक उससे न

पहले खाने पीने से तिनट लोजिये, फिर वह आपकी कृपा का दुस्म जागी करने की मेहरबानी करेंगी ।”

इस बीच नील ने सिपाहियों को गिनना शुरू कर दिया था । उसने पिक्कैफ्ट के कान में कहा—“पिक्कैफ्ट, अगर डोनल्ड और हल्ला हमें घन्टों भर-भरकर देते जायें, तो हम इन सबको एक साँस में जमीन पर कर सकते हैं या नहीं ? तुम्हारा क्या खयाल है ?”

पिक्कैफ्ट ने जग मित्त होकर कहा—“असम्भव । अभी हमारे लिए शोरवा बनाने की तैयारी हो रही है और आधे घण्टे में शोरवा बन जायगा । भई, मैं तो मारे प्यास के मरा जा रहा हूँ ।”

हर एक को जोंग की प्यास लगी थी । कुछ देर में वे एक झोपड़े में ले जाये गये । वहाँ उ हैं फलों की ठण्डी शराब पिलाई गई, पीते ही सब न ताजगी का अनुभव किया ।

कुछ देर के लिए वे अपनी भयंकर स्थिति को भूल गये ।

नील ने पिक्कैफ्ट से कहा—“मुझे जरा नींद सी आती है ।”

लेकिन पिक्कैफ्ट तो जमीन पर पहले ही से खरटे ल रहा था । हल्ला और डोनल्ड भी उँघ रहे थे ।

डेरिक और जेफ्रे अपनी आँखें खुली रखने की भरमरु कोशिश कर रहे थे ।

नील ने कहा—“आ जग पाँच मिनट मो सो साने ने ।”

कुछ देर में वह जागा और आँखें मलने लगा । लेकिन उसका हाथ चँप गये थे । उसने कुर्नी में अपने चारों ओर देखा । उसके

साथी भी खेती में पंक्ति हूँ थे। उसी मर्त्य की पुनरावृत्ति



'उनमें से एक ने कहा—“अदालत में” और हेनगा को धक्का
मारकर आगे किया।’

लिया (नील) कारे हाँसता वापस आता ।”

सासांगग की बातें सच निकली । बीस आदमियों ने साथ न कार गोजने चले । खाना होने से पहले रानी वनमें मिली ।

रानी ने कहा—“जाने आने के लिए आपको तीन हफ्तों की मोहलत देती हूँ । इसीसर्वे दिन आप जहाँ होंगे, वहाँ आपको मार डालने का हुस्म अपने आदमियों को मैं सुना चुकी हूँ ।”

वनकी भयंकर यात्रा शुरू हुई । जंफे और डेरिक नक्शे के लिए लड़ पड़े और छीनाकपटी में उसके टुकड़े टुकड़े हो गये ।

नील ने कहा—“मुझे ज़रा भी आसान नहीं है कि कारे कहाँ रक्खी है ।”

उनमें से किसी और को भी कुछ पता न था ।

पिक्रैफ्ट ने कहा—“तो हम अभी हैं । इनके भालों की नोक में बिधकर क्यों न मर जायें ? बीस दिन बाद मरना तो पड़ेगा ही । फिर मौत के डर में जीने से तो अभी मर जाना बेहतर है ।”

• उधर हेलगा कागज के पुर्जे पर नक्शा बना रही थी ।

उसने अपना ड्राइंग दिखाकर कहा—“मुझे याद है कि उस जगह ऐसे पहाड़ थे ।”

डेरिक निराश होकर बोला—“इससे कुछ लाभ न होगा ।”

हेलगा ने कागज का पुर्जा फेंक दिया । सासांगग पास ही खड़ा था । उसने सोचा, शायद भूल से पुर्जा नीचे डाल दिया होगा । उसने पुर्जा उठा लिया ।

चित्र देखकर वह बोला—“आइहा ! अब पहाड़ जानता ।

महीने में वृत्ति रहा ।”

जेफ़े ने उत्साहपूर्वक मुट्ठी घाँघते हुए कहा—“तू हमें वहाँ
बुलोगा ?”

यह बोला—“अच्छा अम घाँ चलता । मूट चलो, अम
चला ।”

वस दिन में वे गुफा के पास पहुँचे ।

नील ने कहा—“किमी ने गुफा गोलो है ।”

सचमुच ही दरवाजे पर गक्के गये पत्थर किमी ने हटाये
वे सोचते लगे कि अभी उन्हें बिजली के मटके में मरे हुए
ले लुटेरे निम्नाई पड़ेंगे । पर वहाँ कोई न था ।

पिकैफ़्ट बोला—“आश्चर्य है ।”

जगली कार दस्तक निराश हुए ।

नील ने कहा—“बदमाश, हमें खाना चाहते हैं । इनकी
ह तो यही थी कि हमें कार न मिले । खैर । अब मवात यह
यहाँ से भागा कैसे जाय ?”

जेफ़े ने कहा—“मैं बताऊँ ? जगलिया क नेता से कहो कि
आदमी कार का गीचकर बाहर निकालें । वस सन वहीं
जायगे ।”

पिकैफ़्ट बोला—“यह तो हत्या की बात है । तकिन किसी

इनम पिएड़ तो छुड़ाना ही होगा ।

इस बीच तो नवा ने अपने आदमियों का हुक्म दे दिया
कि कार खींचकर बाहर ले आवें । जब आदमी कार का ओर

पढ़ रहे थे, लड़के माँस रोककर खड़े थे। लेकिन फिर भी कुछ न हुआ। वे कार को रींचकर बाहर ला रहे थे।

डेरिक बोला—“अरे वाप रे, करेण्ट बन्द हो गया है। नील, यह कैसे हुआ ?”

नील ने कहा—“जान पड़ता है सुरज की रोशनी के अभाव में बैटरी खत्म हो गई।”

डोनल्ड ने पूछा—“कार को चलाने जितना पावर कै दिनों में आएगा ?”

उत्साह लेते हुए नील ने कहा—“छ सात दिन में।”

डेरिक बोला—“तब लौटने के लिए सिर्फ तीन ही दिन बचेंगे।”

जेफ्रे ने कहा—“सच तो यह है, कि लौटना बेवकूफी है। या तो हम इन्हे मार डालें या इनसे अपना पिण्ड छुड़ाकर निकल भागे, किन्सा खतम !”

डोनल्ड ने कहा—“लेकिन हमारी बन्दूकें और पिस्तौलें तो वहाँ हैं।”

हेल्गा बोली—“मेरा खयाल है कि यह सानी गिल्बर्ट ही है।”

पिन्नेफ्ट ने कहा—“इन बीस आदमियों से बचना मुश्किल है। जॉक की तरह ये हमसे चिपटे हैं। हममें से एकाध ‘स्क्वीकर’ में सटक जाय और इन पर मशीनगन चला दे तो ?”

नील बोला—“हो नहीं सकता। हम सब इकट्ठा हैं न ? मशीनगन से अगले उन्हीं को कैसे मारा जायगा ?”

भूतपूर्व घर्माचार्य ने कहा—“और, हो सके तो इन दुष्टों को हम न मारें। हाँ, मैं क्रमशः करता हूँ कि यह बदसूरत हैं। लेकिन इन भौंड़ी शक्यों को हम मारें, तो यह जेम्मे कैसे बच सकता है ?”

जेम्मे ने फटकारते हुए जवाब दिया—“तुम्हें तो जन्मा उसी दिन मार डालता ।”

आश्चर्य यह था कि कार में पावर आने तक सावधानी घाट जोड़ने की तैयार थी। इमीन जिन पूरे होन तक इन्हें रोक रखने का इन्होंने निश्चय कर लिया था। मामागग कह चुका था कि उनकी आँखें हेलगा और डोनल्ड पर हों और वे यह चाहते थे कि रातो और उमने अमीरों के मुँह तक पहुँचने में पहले ही वे इन गोरों को घट कर सकें तो बेहतर हो।

नील ने दोनों कार के एंजिनों को धुमाकर देखा। छठे दिन सरेरे उन्होंने कुछ धुम् धुम् सी आवाज सुनी।

नील ने कहा—“पावर आ रहा है।”

सिर्फ नील को ही कार के अन्दर जान की इजाजत थी और जब-जब वह कार में जाता था, हाथ में भाला लिये एक जगली कार के दरवाजे के पास खड़ा रहता था। नील भागने या हथियार चलाने की कोशिश करे, तो उसका भाला नील के लिए तैयार था।

सातवें दिन दोपहर को नील ने घोषणा की कि एंजिन फुट पावर में आ गये हैं।

सिपाहियों में लौट चलने को तैयार होने के लिए कहा गया। नील और पिक्वैफ्ट शोफर की जगह बैठे। हर एक शोफर के पीछे नगा भाला लिये एक-एक जगली खड़ा था।

बालकों को तो पुलिस के पहरे में मोटर के पीछे पीछे कूच करनी थी।

सौम्य हुई और वे रुके।

‘अब क्या किया जाय?’ वे आपस में इसकी चर्चा करने लगे।

जेफ़ ने कहा—“मेरी योजना सुनिये। जब हम आगे चलना शुरू करें, नील एक-एक मोटर का पानी खाली करके हवा में छेड़े। या तो जगली उसे पकड़ने के लिए दौड़ेंगे, अथवा हफ्ते-नौ घनकर मुँह फाड़े उसे ताकते रहेंगे। इसी बीच पिक्वैफ्ट अपनी मोटर का दरवाजा खोल दे और हम सब घूमकी कार में बैठ जायें।”

नील ने ठण्डे दिल से कहा—“योजना तो सुन्दर है। पर मेरे पीछे खड़ा हुआ जगली क्या करेगा, सो जानते हो? अगर वह अपना भाला मेरी गरदन पर चला दे, तो मैं बेमौत मरूँ। और

१२ छड़न में लाभ क्या?”

१८ बोला—“और ठीक यही मेरा सन्तरी भी करेगा।”

ने कहा—“नहीं, ऐसा नहीं होगा। बिल्कुल आस-पैसा है। जब नील ऊपर उड़ेगा, जगली एक दम घबरा जायेगा। उसे कुछ सूझ न पड़ेगा। वस, इसी समय नील

ढकेल दे, कि सतम ।”

नील बोला—“अच्छा ! योजना मिर हथेली पर रखकर आजमाने जैसी तो है । लेकिन यही एक रास्ता हो तो फल सुनह आजमायें । देखो, पिक्रैप्ट ! मैं जब बिगुल बजाऊँ, फौरन ही तुम, धन सके तो, अपने मन्तरी का ढकेल देना ।”

दूसरे दिन सुनह सब रवाना हुए । मन में आशा थी, निराशा थी, भय था, चिन्ता थी । नील ‘घर की तरफ’ में आगे चला । पीछे से “चीं-चीं” में पिक्रैप्ट निकला । फिर क्रुध सिपाही, उनके पीछे बालक और उनके पीछे पाँच सिपाही । एकाएक बिगुल बजा । उसी दम ‘घर की तरफ’ हवा में उड़ती दिग्वी । जब वह ज़मीन से दस फीट उठ चुकी थी, पहले उसमें से एक भाजा गिरा और उसके बाद जंगली लुढ़कता आया । उधर जेम्मे की योजना सौ फीसदी सफल हो रही थी । जंगली जन्नतवाली फार को देखकर अकचका गये और पागलों की तरह उसे देखते रहे । आगे आगे डेरिक और पीछे दूसरे बालक चीं-चीं की ओर दौड़े । यह मौका जग मुश्किल का था । पिक्रैप्ट के सन्तरी न ‘घर की तरफ’ को उड़ते देगा नहीं था, इसलिए वह तो पिक्रैप्ट की गरदन पर भाजा ताने ही खड़ा था ।

डेरिक की पुकार सुनते ही सन्तरी ने बालकों की ओर भाजा ताना ।

पिक्रैप्ट एक-एक गड़बा होगया और पीछे हटकर जंगली में सिर दे मारा । सन्तरी फौरन गठड़ी बनकर गिर पड़ा ।

मिषादियों से लौट चलने को तैयार होने के लिए कहा गया । नील और पिक्कैफ्ट शोफर की जगह बैठे । हर एक शोफर के पीछे नंगा भाला लिये एक-एक जगली खड़ा था ।

बालकों को तो पुलिस के पहरे में मोटर के पीछे-पीछे कूच करनी थी ।

सौम्य हुई और वे रुके ।

‘अब क्या किया जाय ?’ वे आपस में इसकी चर्चा करने लगे ।

जेफ्रे ने कहा—“मेरी योजना सुनिये । ज़र हम आगे चलना शुरू करें, नील एकाएक मोटर का पानी छाली करके हवा में डे । या तो जगली उसे पकड़ने के लिए दौड़ेंगे, अथवा हक्के-बक्के बल्लेबाज़ मुँह फाड़े उसे ताकते रहेंगे । इसी बीच पिक्कैफ्ट अपनी मोटर का दरवाज़ा खोल दे और हम सब उसकी कार में बैठ जायें ।”

नील ने ठण्डे दिल से कहा—“योजना तो सुन्दर है । पर मेरे पीछे खड़ा हुआ जगली क्या करेगा, मो जानते हो ? अगर वह अपना भाला मेरी गरदन पर चला दे, तो मैं बेमौत मरूँ । और फिर ऊपर उड़ने से लाभ क्या ?”

पिक्कैफ्ट बोला—“और ठीक यही मेरा सन्तरी भी करेगा ।”

डेरिक ने कहा—“नहीं, ऐसा नहीं होगा । बिलकुल आसान तरीका है । जब नील ऊपर उड़ेगा, जगली एक दम धवरा जायगा और उसे कुछ सूझ न पड़ेगा । बस, इसी समय नील उसे नीचे

दे, कि खतम ।”

नील बोला—“अच्छा ! योजना मिर हथेली पर रखकर माने जैसी तो है । लेकिन यदी एक रास्ता हो तो कल सुबह भावे । देवो, पिक्रैफ्ट ! मैं जब विगुल बजाऊँ, फौरन ही तुम, सके तो, अपने सन्तरी का ढंकेल देना ।”

दूसरे दिन सुबह सब रवाना हुए । मन में आशा थी, निराशा भय था, चिन्ता थी । नील ‘घर की तरफ’ में आगे चला । से “चींचीं” में पिक्रैफ्ट निकला । फिर कुछ सिपाही, उनके बालक और सनके पीछे पाँच सिपाही । एकाएक विगुल । उसी दम ‘घर की तरफ’ हवा में उड़ती दिखी । जय वह न में दस फीट उठ चुकी थी, पहले उसमें से एक भाला और उसके बाद जगली लुढ़कता आया । उबर जेम्मे की ना सौ फीमदी सफल हो गयी थी । जगली उड़नवाली कार रखकर अकचका गये और पागलों की तरह उसे देखते रहे । आगे डेरिक और पीछे दूसरे बालक चींची की ओर दौड़े । मौक़ा जग मुश्किल का था । पिक्रैफ्ट के सन्तरी ने ‘घर की’ को उड़ते देखा नहीं था, इसलिए वह तो पिक्रैफ्ट की गर घर भाला ताने ही खड़ा था ।

डेरिक की पुकार सुनते ही सन्तरी ने बालक की ओर भाला ।

पिक्रैफ्ट एक-एक सड़ा होगया और पीछे हटकर जगली में सिर दे मारा । सन्तरी फौरन गठड़ी बनकर गिर पड़ा ।

झोकरे कार पर सवार हो गये । पिक्केट ने जगली का उठाकर उसक सरदार पर फेंका । सरदार उनकी ओर बढ़ा चला आ रहा था । वह बीच ही में बडामूँस गिर पड़ा । हेलगा न जोर स दरवाजा बन्द कर लिया । कार आगे की कुन्नी और मिनटों में हवा में तैरन लगी ।

एक घण्टे में तो मोटरें गोरी रानी के शहर पर ऊपर ऊपर चढ़ने लगी ।

हेरिक ने नील को फोन किया—“हम महल के चौगान में उतरें ।”

दो बड़े बड़े परिन्दों की तरह मोटरे मर्रर्र नीचे उतरी । उन्हें उतरते देखकर लोग भागे । एक रानी और उसके सिपाही वहीं डटे रहे ।

रानी ने हुक्म दिया—“इन्हें गिरफ्तार कर लो ।” सिपाही दानों मोटरों का वेगकर आगे बढ़े । बिल्ली के तार को उन्होंने छुआ और पत्थर के पुतलों की तरह नीचे दुलक पड़े । दूसरे सिपाही भयभीत हो गये । भगदड़ मच गई । रानी उठकर आगे आई । उसने चिल्लाकर कहा—“सिपाहियो, कार को पकड़ो ।”

एक भी सिपाही आगे नहीं बढ़ा ।

फौज के सरदार ने कहा—“रानी जी ! यहाँ तो मौत का सामना है ।”

रानी ने कहा—“नामदों ! देखो एक रानी छतरे का सामना कैसे करती है, सो मैं तुम्हें बताती हूँ ।”

ह फार के पास गई और अपना हाथ बढ़ाया । एकदम
बन्द होगया । हेल्गा ने फटपट दरवाजा गोल दिया । रानी
अन्दर आ गई । सिपाहियों की ओर मुँह करके और नाक
गुली रखकर उसने कहा—“देखो, तुममें से ज्यादा होशि-
”

घातचीत

हेल्गा ने कहा—“हाँ, मैं तो जानती ही थी कि रानी गिल्बर्ट
”

“सी को दधाते-दधाते गिल्बर्ट बोली—“हँह् । मैं कहती हूँ कि
मर चुकी हूँ । ठीक ठीक कहानी क्यों नहीं कहता ? मैं
जिन्दा होना नहीं चाहती थी ।”

मुझे ने कहा—“नील ! आगे सुनाओ, जल्दी कहो, यह जी
वठी ?”

कहानी

गिल्बर्ट ने रोंगटे खड़े करनेवाला अपना किस्सा शुरू किया—
मेरी हुई सी दिखती थी, परन्तु वास्तव में मैं तन्द्रावस्था में
थाद में क्या हुआ, मुझे याद नहीं । कुछ ऐसा खयाल होता
में बीमार पड़ी । फिर क्या हुआ, पता नहीं । उसके बाद मैं
और मैंने देखा कि कई बदसूरत शक्लें मेरी ओर ताक
हे । पहले मैंने सोचा, कि सपना है । लेकिन तुरन्त ही मुझे
चला कि बात वैसी नहीं है । वे मुझे कोलों में डालकर न
वहाँ दूर-दूर ले गये । वहाँ एक बड़े बटशकल आदमी ने

छोकरे कार पर मगार हो गये । पिक्कैफट ने जगली का उठाकर उसके सरदार पर फेका । सरदार उनकी ओर बढ़ा चला आ रहा था । वह बीच ही में यडाम् म गिर पड़ा । हेल्गा ने खोंग से दरवाजा बन्द कर लिया । कार आगे की कुन्नी और मिनटों में हवा में तैरने लगी ।

एक घण्टे में तो मोटरें गोरी रानी के शहर पर ऊपर ऊपर चढ़ने लगी ।

डेरिक ने नील को फोन किया—“हम महल के चौगान में उतरें ।”

दो बड़े-बड़े परिन्शों की तरह मोटरें सर्रर्र नीचे उतरतीं । उन्हें उतरते देखकर लोग भागे । एक रानी और उसके सिपाही वहीं डटे रहे ।

रानी ने हुक्म दिया—“इन्हें गिरफ्तार कर लो ।” सिपाही दोनों मोटरों का घेरकर आगे बढ़े । बिजली के तार को उन्होंने छुआ और पत्थर के पुतलों की तरह नीचे ढुलक पड़ । दूसरे सिपाही भयभीत हो गये । भगदड़ मच गई । रानी उठकर आगे आई । उमन चिल्लाकर कहा—“सिपाहियो, कार को पकड़ो ।”

एक भी सिपाही आगे नहीं बढ़ा ।

फौज के सरदार ने कहा—“रानी जी ! यहाँ तो मौत का सामना है ।”

रानी ने कहा—“गमदों ! देखो एक रानी खतरे का सामना कैम करती है, सो मैं तुम्हें बताती हूँ ।”

वह फार के पान गई और अपना हाथ बढ़ाया । एकदम फेरट बन्द होगया । हेलगा ने झटपट दरवाजा गाल दिया । रानी दूदकर अन्दर आगई । मिवाहियों की ओर मुँह करके और नाक पर अँगुली रखकर उसने कहा—' दगो, तुममे र्म क्यादा होशि चार हूँ ।'

घातचीत

हेलगा ने कहा—'हाँ, मैं तो जानती ही थी कि रानी गिटनर्ट हो है ।'

हँसी को दयाते-दयाते गिटनर्ट बोली—'उँहूँ । मैं कहती हूँ कि मैं तो मर चुकी हूँ । ठीक ठीक कहानी क्यों नहीं कहता ? मैं दुबारा जिन्दा होना नहीं चाहती थी ।'

जेफ्रे ने कहा—'नील । आगे सुनाओ, जल्दी कहो, यह जी कैसे उठी ?'

कहानी

गिटनर्ट ने रोंगटे खड़े करनेवाला अपना किस्सा शुरू किया—
"मैं मरी हुई सी दिखती थी, परन्तु वास्तव में मैं तन्त्रावस्था में थी । घाद में क्या हुआ, मुझे याद नहीं । कुछ ऐसा खयाल होता है कि मैं बीमार पड़ी । फिर क्या हुआ, पता नहीं । उसके बाद मैं जागी और मैंने ऐसा कि कई बदसूरत शम्लों मेरी ओर ताक रही हूँ । पहले मैंने सोचा, कि सपना है । लेकिन तुरन्त ही मुझे पता चला कि घात वैसी नहीं है । वे मुझे झोला में डालकर न जाने कहाँ दूर दूर ले गये । वहाँ एक बड़े बदशकल आदमी ने

मुझे बड़ी देर तक न जाने क्या-क्या कहा । लेकिन मैं तो समझ ही न पाई कि वह क्या कहता था । वह जगली ठोक नील की तरह बदसूरत था । उसके बाद उन सब ने मुझे सलाम किया । मुझे तो कुछ समझ ही नहीं पड़ता था । धीरे धीरे मैं उनकी बोली कुछ-कुछ समझने लगी । मुझे एक औरत ने कहा कि मैं तो वहाँ की रानी हूँ । उस औरत ने कहा था क्या कहते हैं भई किसी घटना के बारे में कोई पहले ही से कह दे उसे, देखो क्या क्या कहते हैं ?”

नील ने कहा—“भविष्य वाणी ।”

“हाँ, एक बार भविष्य हुआ था, नहीं, नहीं, भविष्य वाणी हुई थी कि आनेवाले वर्षों में इस देश पर महान् गोरी रानी राज्य करेगी । बस, उन्होंने मुझे गोरी रानी बना दिया । लेकिन वे लोग तो आरम्भखोर थे । मैं उनसे बेइद्व डरी । उन लोगों ने मुझसे कहा कि मुझे भी आदमी का मान खाना पड़ेगा । लेकिन, मेरा नौकर बहुत भला आदमी था, और महाराजिन उसकी पहचान की थी । वह मुझे घालक के मांस के स्थान पर बड़बड़े का भोजन ला देता था । बड़ा भला आदमी था । फिर उसके मुखिया के आज्ञानुसार मुझे चलना पड़ा । उन्हें यह जानकर भय हुआ कि मेरे मित्र आकर मुझे ले जायेंगे, इसलिए उन्होंने मुझसे यह फानून बनवा लिया कि कोई भी गोरा आदमी आने तो कल्ल कर डाला जाय । मैं तो इतनी डरती थी कि उन्होंने जैसा कहा, मैंने वैसा ही किया । जब उन्होंने मुझसे आकर कहा कि इस सब विस्फाद

क्रिये गये हो, तब तो मुझे इतनी खुशी हुई कि पूछो मत ।
 दोनल्ड ने पूछा—“तो फिर तुमने हमें बेहोश करनेवाली
 शराब क्यों पिलवाई ?”
 “हाँ, देखो मैं कितनी चतुर हूँ । मैं यह चाहती थी कि तुम
 कार ले आओ । अकेली राइफल से तुम लड़ नहीं सकते थे ।”
 नील ने अधीर होकर कहा—“पर इक्कीस दिन की मोहलत
 क्यों दी ?”

गिल्बर्ट ने कहा—“मोहलत का प्रस्ताव तो सरदार का था
 लेकिन अच्छा हुआ, कि मैं छूटी । कल तो मेरा ब्याह होनेवाला
 था ।” गिल्बर्ट हँसी और कहने लगी—“हाँ, वह कहते थे कि
 मेरा ब्याह उस बूढ़े खूसट के साथ होगा । वह, जिसे तुमने सब
 पहले देखा था—वह ठठरी मी देहवाला बूढ़ा खूसट—नील
 भी बूढ़ा । अच्छा हुआ कि मैं भाग निकली ।”

वातचीत

मैंने कहा—“इस तरह, यह गिल्बर्ट का प्रकरण पूरा हुआ
 गिल्बर्ट ने ज़रा टेढ़ा मुँह करके, मनोहर हँसी हँसते हुए,
 ओर देखा—“नील, तू सोचता होगा कि मुझे फिर से जित
 तैं बड़ी होशियारी की है । क्यों जेफ़े, नहीं ? लम्बिन यह
 बड़ी भारी होशियारी की बात नहीं । पुस्तको-जैसी नहीं ।
 मन राजा की खान के क्रिस्ते में ऐसी बेवकूफी की बातें नहीं
 क्यों डेरिक, सच है न ? मालोमन की खान के क्रिस्ते में
 होता है । लेकिन इस क्रिस्ते में तो ” ज़रा रुककर

मुँह बनाकर—“ऐसा कुछ भी नहीं है, जो कितान में लिखा जाय।
घोल, डेरिक, तेरा क्या खयाल है ?”

डेरिक ने कहा—“नील को भूगोल का ज़रा अच्छा ज्ञान होता, तो किस्सा किताब में लायक बन जाता ।”

जेम्स ने कहा—“मेरा खयाल है कि इसने कुछ सच मच घटनाएँ सुनाई होती, तो बेहतर था । मैं नहीं मानता कि इसमें कुछ किस्सा है । हम हमेशा बच ही जाते हैं ।”

मैंने कहा—“अच्छा बहुत अच्छा । आगे के किस्सा में जब हम आदमखोर लोगो के ऊपर हवा में उड़ते होंगे, जेम्स को कार से गिरा देंगे । मैं उनकी खास तौर पर निगरानी रखूँगा कि वह बचने न पावे ।”

डोनल्ड ने खीझकर कहा—“हाँ, नील, बस, यह बहुत अच्छा होगा । इसने मेरी हुप् (Hoop) लेली और आज सपेरे तोड़ डाली । क्या ही अच्छा हो जो जेम्स इस पाठशाला में न हो ।”

गिरवर्ट बोली—“तब तो पाठशाला सुधर जाय । लेकिन यहाँ कुछ पढ़ने को नहीं मिलता । यह किस्सा तो तमाशा है । डोनल्ड और हेल्गा को इसमें नुकसान ही होगा, क्योंकि वे इसे सच मानते हैं । क्यों, डोनल्ड, मच है न ? कहीं ऐसी कार भी होती होगी ? लेकिन डोनल्ड मच मानता है ।”

डोनल्ड ने कहा—“परन्तु नील जब किस्सा कहता है, तब तो विलकुल सच मालूम पड़ता है ।”

डेरिक बोला—“हाँ, मुझे भी ऐसा ही लगता है । अरे नील,

तू दडा होशियार है। जेफ्रे, देख तो सही। यह कहते-कहते जिरसा मनाता जाता है। यह खुद नहीं जानता कि आगे क्या होगा।”

मैंने गम्भीर होकर कहा—“भाफ करो। जो बात होती है, यही मैं कहता हूँ।”

प्रकरण-७

गिलवर्ट की मुक्ति के बाद सब ने अनुभव किया कि अब वे साहसिक कार्यों से खूब अघा गये हैं।

जेफ्रे ने कहा—“मैं प्रस्ताव करता हूँ कि अब हम इंग्लैण्ड लौट चलें।”

नील के अलावा और सब की यही राय ठहरी।

नील ने कहा—“मैं तो चाहता हूँ कि सारतुम में गॉर्टन की मज देखूँ।”

डेरिक बोला—“अच्छा, तो हम उस रास्ते लौट चलें।”

परिणाम यह हुआ कि एक हफ्ते सारतुम के किसी होटल की छत पर यह मण्डली बंठी थी।

जेफ्रे ने पूछा—“गॉर्डन का किस्सा क्या है?”

वातचीत

गिलवर्ट ने सशक होकर कहा—“अगर तू किम्से के साथ इतिहास पढ़ाना चाहता हो, तो मैं तो कूँगी कि हम ऐसी वाहि-

यात बातें नहीं सुनेंगे। क्यों जेफ़े ? हम उस समय पाठशाला में नहीं हैं। यह अच्छा बहाना है।”

डेरिक ने ठोली की—“नील इतिहास जाने ही क्या ?”

जेफ़े बोला—“मुझे इतिहास नहीं मीगना। गॉर्डन के किस्से में क्या खाक है ?”

लगा ने कहा—“मैं तो माहम क किस्से पसन्द करती हूँ।”

डोनल्ड बोला—“मुझे भी सिद्ध मगर और ऐसी ही बातोंवाल किस्से अच्छे लगते हैं। अब तक शार्क का किस्सा तो आया ही नहीं।”

मैंने टूटता से कहा—“गॉर्डन का किस्सा सुनना है या नहीं ?”

लडके जवाब में गरज उठे—“नहीं, हम किस्सा चाहते हैं।”

मैंने कहा—“अच्छा।”

और किस्सा आगे चला।

कहानी

उसी क्षण एक भयंकर पुकार सुनाई पड़ी कि नोट डूबता है। परन्तु बोट का कप्तान बोट पर नहीं था। वह किनारे पर आलू बो रहा था।

शोकर ने चिल्लाकर कहा—“शार्क।”

और सचमुच शार्क थी।

कप्तान ने हुक्म दिया—“मिजनबुलवर्क की ओर घड़ो।
Port the leeward top—gallant mast ! Starboard
the stern sheet!”

तत्काल एक लड़का कप्तान की कैबिन के पास आया। उसने कहा—“पिता जी, मैं झूठ नहीं कहता। एपल (सेव) के पेड़ को मैंने ही काटा।”

यातर्चात

जेफ़े ने कहा—“अगर ऐमा वास्तविक किस्सा कहना है, तो मैं यह चला।”

गिल्बर्ट बोली—“उसमें कुछ मनोरंजन तक नहीं।”

डोनल्ड ने आश्चर्य से पूछा—“शार्क क्या बला है?”

मैंने कहा—“जो रफ़ड़ी चुरा गई, वह शार्क। तुमने कहा कि क्रिस्से में शार्क आने, ता यह शार्क आई। अब इंग्लैंड लौटना है या गार्डन का किस्सा सुनना है?”

गिल्बर्ट ने कहा—“गार्डन का किस्सा ही होने दो। मैं जानती जो हूँ, आजकल महाशय जी गार्डन की पुस्तक पढ़ रहे हैं, सो पताना चाहते हैं कि इतिहास के बड़े जानकार हैं।”

थफ़र डेरिफ़ बोला—“भई, गार्डन का किस्सा ही सही।”

कहानी

जेफ़े ने पूछा—“इस गार्डन क किस्से में है क्या?”

बूढ़ा नौकर गिल्बर्ट व गिल्लाम में रोमन उँडेल रहा था। यह रुक गया और बोला—“ओहो भैया! तुमने ता जनरल गार्डन को याद कर लिया।”

बूढ़े पैरा न जेब से रुमाल निकाला और आँसू पोंछे।

सहानुभूतिपूर्णक हेलगा ने पूछा—“क्यों बाबा, रोते क्यों हो?”

“याद आ गई जहन, यह तो याद आ गई ।” वह कुछ ठहरा और बोला—“मैं उनका नौकर था ।”

यात्रियों की सारी टोली अपने कमरे में बैठी बैठी पित्रलो को गार्डन का किस्सा सुन रही थी ।

वह बूढ़ा नैरा कह रहा था—“भैया, मैं राज-कान की बात बहुत नहीं समझता । गार्डन को खारतुम क्यों भेजा गया, सो भी मैं नहीं जानता । मैं इतना जानता हूँ कि महादी नाम एक जगली अरब था, उमने अंग्रेजों के खिलाफ बगावत की, सो अंग्रेजों को धचाने के लिए वह भेजा गया था । वहाँ दूसरे भी थे ।”

पिक्रैफ्ट ने कहा—“मैंने इस सम्बन्ध में पढ़ा है । ‘टाइम्स’ का याददाता, फ्रामीसी कौन्सल और दूसरे करीब बीस आदमी हाँ थे न ?”

नौकर ने सिर हिलाकर कहा—“हाँ, कोई गीस । शहर घेर लिया गया था और हर एक आदमी किलेबन्दी के काम में लागूल था । किले के बाहर हजारों दुश्मन पड़े हुए थे । कई दिन गार्डन गोरों को जहाज में बैठाकर सुरक्षित स्थान पर चले जाने को राजी कर सका । वे जहाज में खाना हुए, हमने उन्हें सुशी सुशी बिटा किया, परन्तु वे सुरक्षित स्थान पर पहुँच नहीं सके । वे किनारे की ओर वह गये और महादी के आदमियों ने उन्हें काट डाला । गोरों से लिए हुए दस्तावेज वगैरा महादी ने जब गार्डन के पास भेजे, तो गार्डन कैसा फफक

कर रोया था, मुझे अब तक याद है। गार्डेन को तभी पता चला कि उसके सघ दशवन्धु स्वर्ग को मिलारे हैं।”

अरे, मरदार गार्डेन सचमुच अद्भुत आदमी था। दो घण्टे से ज्यादा वह कभी सोता न था। बड़े सरेर टापर पर चढ़कर चारों ओर देखता था। फिर वह बालकों के साथ हँसता-रसता और बड़ों को उत्साह दिलाता फिरता था। वह मथक साथ रहता था। हम देवता की तरह उस पूजते थे।

एक दिन एक अरब हमारे डेरे तक आ पहुँचा। मन्तरी ने उसे करीब अघमरा सा कर डाला। राइफल से उसकी जान निकालने से पहले वह चिल्लाया—“मेरे अंग्रेज कासि” हूँ।”

लोग उस गार्डेन के पास ले गये। उसने गार्डेन का सत्ताम किया और उसके हाथ में चिट्ठियाँ दीं।

बाद में लार्ड किचनर के नाम से प्रसिद्ध हुआ, सो यही आदमी था। अरब के भेष में दुरमनों की फौज के बीच में आने का भयकर साहस उसने किया था। दूसरे दिन वह अपनी फौज की तरफ चला गया। किचनर के आने से जनरल गार्डेन का उत्साह खूब बढ़ गया था। किचनर यह खबर लाया था कि मदद के लिए आनेवाली फौज दस दिन में आ पहुँचेगी।

परन्तु परिस्थिति दिन पर दिन खराब हो रही थी। दुश्मन दिनादिन आगे बढ़े चले आ रहे थे। रसद खत्म हो चुकी थी और हम चूहे खा खाकर जी रहे थे। गार्डेन को चिन्ता न थी। “मेरे आदमी” “मेरे

गुनाता था । मैंने अपने कानों यह सुना है ।

आखिर अन्त आ पहुँचा । भयकर आक्रमण हुआ । हमारे सरक्षक सेना को पीछे हटना पड़ा । भूगों मरती और निराश से वेदम हमारी दूसरी कतार भी पीछे हटी ।

गार्डन आगे बढ़ा । मैं अभी भी उस अपनी आँखों के सामने खड़ा देखा रहा हूँ । उसका सिर तना हुआ था, हाथ अदन से मुँह हुए थे । चेहरे पर डर का नाम न था । थी घोर निराशा और अतिशय शिञ्जता । एक कड़ावर सैनिक ने वगल से उस पर हमला किया और भाला शरीर में उसके आर-पार भोंक दिया । मैं अपनी आँखें बन्द कर ली और पीछे भागा । एक साई में मैं छिप गया और उस भयकर मार-काट में बच गया ।”

डेगिक न पूछा—“लेकिन उस मदद पर आनेवाली कौज का क्या हुआ ?”

बूढ़े बैरा ने कहा—“मदद ४८ घण्टा देर से पहुँची । किसी को बचाता बाकी ही न था । जब बन्होने सारतुम पर दुश्मनों का झण्डा फहराते देखा तो जान गये कि गार्डन मारा गया है ।”

सहादी ने स्नेदीन पाशा नाम के एक ऑस्ट्रेलियन अकसर को गिरफ्तार किया था । कुछ लोगों का यह भी कहना है कि वह गार्डन का मर्जाजा था । उसके बेडियाँ डाली गई थीं । एक दिन वह तम्यु के बाहर बुलाया गया । एक सिपाही एक टोकनी लेकर आया था ।

सिपाही बोला—“देखो” और सिपाही ने गार्डन का सि

बदलकर दियाया ।

हेल्गा ने पूछा—“फिर उस आदमी का क्या हुआ ?”

नैरा बोला—“बारह बरस तक वह कैद रखा गया ।”

नील ने कहा—“फिर उसने अपनी कारावास की कथा प्रकाशित की ।”

घातचीत

जेम्स बोला—“मैं और भी जानना चाहता हूँ, लेकिन इतिहास के पाठ की तरह, किम्वदन्त के रूप में नहीं ।”

डेरिक ने कहा—“मिस्सा दिलचस्प है, पर यह कहानी तो हमारे सम्बन्ध की है न, गिल्बर्ट ?”

गिल्बर्ट ने कहा—“रहने दे । नील क्या यह सच है ?”

मैंने कहा—“मुझसे बूढ़े नैरा ने जो कहा था, वही मैं तुम्हें सुनाया है ।”

डोनल्ड ने पूछा—“लेकिन यह बूढ़ा बेरा सचमुच था क्या ?”

मैंने पूछा—“क्या पिक्रैफ्ट वास्तव में जीता जागता पात्र है ?”

डेरिक जरा सोच में पड़ गया । वह बोला—“मेरा खयाल है कि जब वह लोगों को गन्धक से उड़ाता है, तब उसे जिन्दा समझ लेना चाहिए । लेकिन नील, मैं समझ गया, तु बहुत चालाक नहीं है । पहले पिक्रैफ्ट अमेरिकन तरीके से धोखता था, पर अब वह अमेज की तरह बोलता है ।”

गिल्बर्ट ने चिढ़ाकर कहा—“ले, कैसी भूल निकलती है ?”

मैंने कहा—“इस यात्रा में पिक्रैफ्ट को बहुत तालीम मिली ।

आश्चर्य है कि धीरे धीरे उसने अमेरिकन उच्चारण और वैसे प्रयोगों का व्यवहार छोड़ दिया है। मेरा खयाल है कि गिल्बर्ट की शुद्ध अंग्रेजी के सठवास के कारण ऐसा हो सका है।”

चिदम्बर गिल्बर्ट ने तर्जनी हिलाते हुए कहा—“सुन लेना। दो साल तक भैया जर्मनी रह आये हैं, पर ‘बिअर’ और ‘टवाक’ के सिवा कुछ बोलना नहीं जानते। तू जर्मन बोलता है, उससे तो मैं अंग्रेजी अच्छी बोल लेती हूँ। क्यों डेरिक ? और मैं तो फ्रेंच और इटालियन भी बोलती हूँ। नील, तेरी पाठशाला वाढियात है। अबकी मैं यहाँ आऊँगी ही नहीं। अम्मा कहती थी कि मैं जो चाहूँ, कर सकती हूँ, और अब मैं तो दूसरी पाठशाला में पढ़ने जाऊँगी। म्रुसेल्स में डिकोली की शाला में मैं थी, तब बड़ा आनन्द आता था। बड़ी अच्छी शाला है। इससे तो कहीं अच्छी। वहाँ शिक्षक न तो सारा दिन बीड़ी फूँका करते थे, न बेवकूफी की बातें ही कहते थे।”

जेम्मे ने कहा—“अगली बार तो तुम हमें सबमरीन का किस्सा सुनाओगे न ? एक ऐसी सबमरीन का आविष्कार कर डालो कि जो समुद्र में नीचे छ मील की गहराई तक जा सके।”

गिल्बर्ट ने चिल्लाकर मेरे गले में हाथ डाला और कहा—“हाँ तब तो बहुत अच्छा हो। वृद्धे नील, मुझे सबमरीन का किस्सा अच्छा लगता है, क्यों ?”

मैंने भीड़ें मिकोडकर कहा—“तू तो कह चुकी न कि अब तू यहाँ पढ़ने नहीं आवेगी ?”

गिल्बर्ट ने ज्ञान निकालकर कन्धे हिलाये और खिन्न होकर बोली—“अम्मा मुझे कडे शासनवाली पाठशाला में भेजना चाहती है, पर मैं वहाँ नहीं जाऊँगी। तु अपनी शाला में कुछ पढ़ाता नहीं, पर एक स्वतन्त्रता तो है। क्यों, समझा ?”

मैं जरा हँसा तो गिल्बर्ट फिर बोली—“लेकिन डिग्रोली की अच्छी शाला है।” यह कहकर गिल्बर्ट ने मेरे सामने ‘आ ए’ का फाड़ दिया।

कहानी

इसके बाद ये मौत के गिलाडी खारतुम में चले और सीधे गलैण्ड को उडे। जेम्स को ऑक्सफर्ड में छोड़ा, डेरिक और जेनल्ड को हैरगेट में उतारा, डेलगा एडिनबरा में अपनी चाची मिलन चली गई और गिल्बर्ट नील के साथ नील के घर गई।

बातचीत

खोर में गिल्बर्ट ने कहा—“नहीं, मैं तेरे साथ नहीं आई थी। और पिक्लेट तो लन्दन गये थे। मैं, और तेरे साथ कभी तेरे घर आऊँ ?”

कहानी

एक दिन स्कॉटलैण्ड गइकर गिल्बर्ट ने कहा—“मैं अपने घर वास्तैण्ड जाना चाहती हूँ।”

और ‘घर की तग’ में उड़कर वह अपने घर पहुँच गई।

